Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PARKASH 1954 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
111910
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

१३ एप्रिल
१९५४

सम्पादक
हितैषी अलावलपुरी

Approved for Court Notices in Punjab.

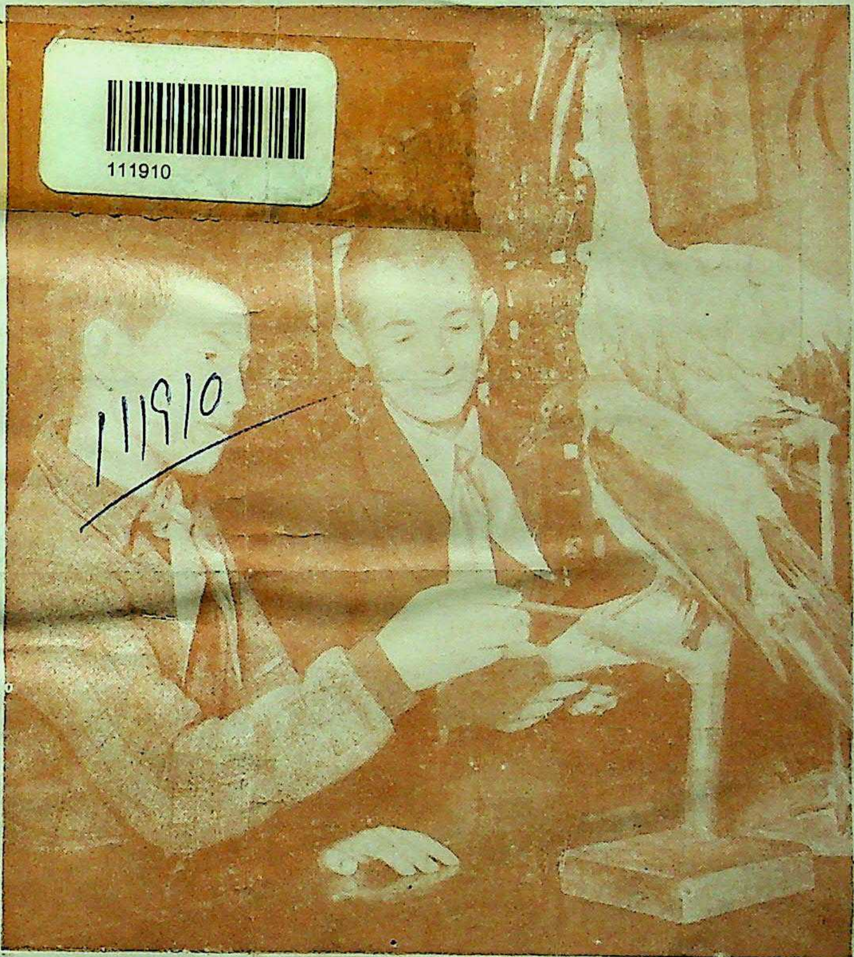

मास्को के माध्यमिक स्कूल नं० ५१८ में ७वीं कक्षा के दो विद्यार्थी जीव जन्तु विज्ञान विभाग में।

THE "Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

JULLUNDUR CITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सोवियट स्कूल में

मास्को
जिले के किरोव जिले में लड़कों के स्कूल नं० ५१८ में पुस्तकालय के वाचनालय का एक दृश्य। बच्चे पत्रिकाएं पढ़ रहे हैं।

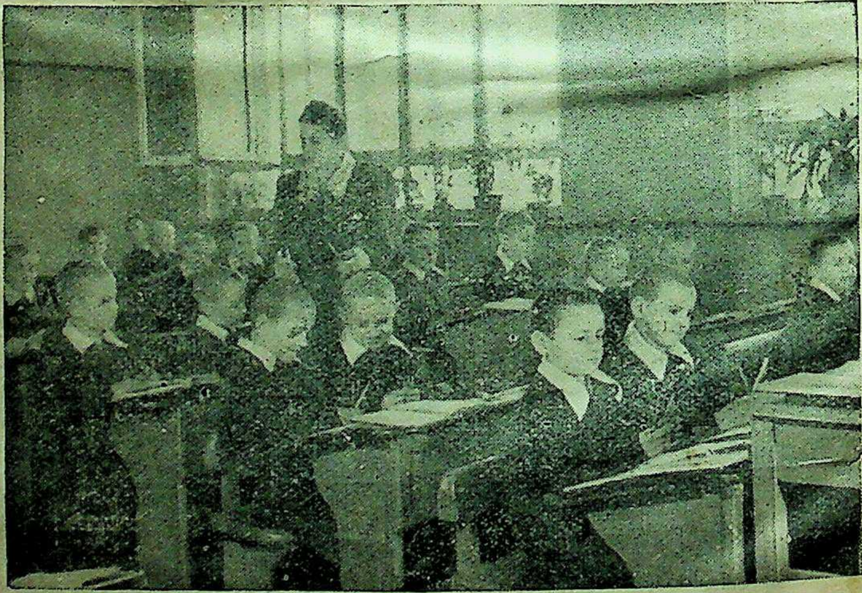

उसी स्कूल की पहली कक्षा के छात्र अपनी कक्षा में पढ़ रहे हैं। चित्र में उस्तानी अलैक्ज़ान्द्रा गोर्देयेवे भी दिखाई पड़ रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल, पेप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत

★ प्रकाश ★

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४६ क्रमांक ५६] जालन्धर, १३ अप्रैल, १९५४ [भाग ६ अङ्क ४ हिन्दी

वैशाखी !

प्राय १ जनवरी को नव वर्ष मनाया ता है किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात हमें ाखी (१३ अप्रल) को इसे मनाना रम्भ कर देना चाहिये था किन्तु ऐसा ी हुआ, उल्टा जिन रियास्तों में देशी वत प्रचलित था वहां भी धीरे अंग्रेजी त' चालू किया जा रहा है। यह स्थिति चनीय है।

भारत कृषि प्रधान देश है और वैशाखी दिन ही गेहुं की नई फसल काटी जानी म्भ होती है। एक तरह से देश की ८० शत जनता के परिश्रम का फल उस दिन प्राप्त होता है, शायद इसी इस दिन को शुभ समझा जाता है इसके आगमन के साथ ही प्रत्येक में उल्लास की लहर दौड़ जाती है। के विपरीत १ जनवरी के आगमन पर स्वाभाविक प्रसन्नता का आभास नहीं। इससे यह स्वत: सिद्ध है कि वास्त- क नव वर्ष दिवस वैशाखी के दिन ही चाहिए।

हमें आशा है कि कम से कम पंजाब ार तो अवश्य शीघ्रातिशीघ्र नव वर्ष खी से आरम्भ करना स्वीकार करेगी। ाश' के पाठकों को वैशाखी शुभ हो !

★ —हितैषी

आज तुम उतरो धरा पर !

आज तुम उतरो धरा पर !

देखो, मोह अज्ञान अविद्या-ग्रस्त जग की रीत आकर !

आज तुम उतरो धरा पर !

ऋषि ! धरणी पुकारती है !

नभ-सीमा पुकारती है !

सब जनता पुकारती है !

करदो ज्ञान देने, वैदिक ज्योति का प्रसार घर घर !

आज तुम उतरो धरा पर !

द्रुत मिटादो मिलन दुख से !

चिर करादो मिलन सुख से !

मन्त्रोच्चारण हों मुख से !

नित भटकते प्राणियों को, ले चलो सीधे डगर पर !

आज तुम उतरो धरा पर !

पापों में महा प्रलय हो !

वेदों में मन तन्मय हो !

गूँजती मधुरतम लय हो !

छ,ये तुमुल तिमिर में, ला दो स्वर्गीय प्रकाश प्रखर !

आज तुम उतरो धरा पर !

—रमाकांत 'विक्षिप्त'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा समाचार

—केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्री मौ० आज़ाद ने घोषणा की है कि सरकार सैकण्डरी ऐजुकेशन को नये सिरे से आर्गेनाईज़ करने जा रही है।

…भारत सरकार ने यूनिवर्सिटियों को ७२ लाख रुपये की सहायता दी है। इस राशि में से डेढ़ लाख रुपये पंजाब यूनिवर्सिटी को मिले हैं।

—पञ्जाब में ५ ऐंगलो इण्डियन स्कूलों को राज्य सरकार १७८६५० रु० वार्षिक की सहायता दे रही है जबकि इन स्कूलों में छात्रों की संख्या केवल ८२६ है।

—अमृतसर म्युनिसिपल कमेटी ने नगर में अनिवार्य शिक्षा प्रचलित करने के लिये ३००८ टीचरों को घर घर जाकर स्कूल में दाखिल होने की आयु के उन बच्चों के मां बाप को, जो अभी तक किसी स्कूल में प्रविष्ट नहीं हुये, उन्हें स्कूल में दाखिल कराने के लिए प्रेरित करने को कहा है। म्युनिसिपल कमेटी के नगर में ४० स्कूल हैं जिनपर प्रति वर्ष ८ लाख रुपये व्यय किये जाते हैं।

—तहसील स्टूडेंट्स यूनियन दसूहा ने एक प्रस्ताव द्वारा कालिज और मैट्रिक की पुस्तकों के मूल्य घटा कर आधे किये जाने की पंजाब सरकार से मांग की है।

…डा० काटजू (गृह मन्त्री केन्द्रीय सरकार) ने मथुरा में कन्वोकेशन भाषण देते हुए कहा है कि भारत की राष्ट्र भाषा संस्कृत होनी चाहिए।

…लण्डन के स्कूलों में हिन्दी पढ़ाये जाने की मांग की जा रही है।

…पेटवाड़ (हांसी तहसील) के ग्रामवासियों ने तीस हज़ार रु० के व्यय से हाई स्कूल की बिल्डिंग बना दी है। २० हज़ार रु० और एकत्रित करके इसे सम्पूर्ण कर दिया जायेगा।

अपनी बोली 'च

एह डैमोक्रेसी

डमोक्रेसी इक अजिही राज पद्धति ए जिस विच लियाकत, ईमानदारी, नेकनीयती ते मेहनत जिहे गुणां दे बल ते नहीं वोटां दे ज़ोर ते, कोई असैम्बली दा मैम्बर बन ते वज़ीरी दा सुफना देख सकदा है। जेकर किसे प्रांत दे सारे अनपढ़ एह फैसला कर लैन कि असीं अपने ही किसे भरा नूं अपना प्रतिनिधि चुन के असैम्बली चि भेजांगे तां केहड़ी शक्ति है जेहड़ी उसनूं असैंबली दा मैंबर बनन तों रोक सके? एह निरी गल नहीं पञ्जाब ते पैप्सु दियां असैंबलियां चि अनपढ़ पहुंच भी चुके हन। चूंकि असैम्बली दी मैम्बरी लई किसे सर्टीफिकेट जां डिग्री दी लोड़ नहीं एस लई हर कोई जेहड़ा वध वोटां लै सके मैंबर बन सकदा है। ते एह गल कौन नहीं जानदा कि अनपढ़ां दी ज्यादा गिनती वाले इस देश विच वोट मुल विकदे हन। जद एह गल है तां किसे लायक, नेकनीयत, ईमानदार तां किन्ने भी मेहनती आदमी दा, जेहड़ा नाजायज़ तरीके बरत के वोटां मुल नहीं लै सकदा, असैम्बली चि नहीं जा सकदा। गुण चाहे सभे होन पर जे पैसा न होवे तां गुणवान भी मूर्ख है ते पैसा होवे तां मूर्ख भी गुणवान है। ऐडा वड्डा नुक्स हुंदे होए भी दुनिया है कि डमोक्रेसी दे पिच्छे पागल होई फिरदी ए। किते ओह दिन न देखना पै जाये जद इस दुनियां चि एह पच्छमी डैमोक्रेसी मूर्खां दा राज लिया देवे ते ओह बुद्धिमान होना कानून रोक देवे। सच पुछो ते भाइये रेलू नूं एस गल दा सच हो जाना असम्भव नहीं जापदा।

★ भाइया रेलू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल और कांटे

(पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० मनुष्य बड़ा किस बात से होता है?
—राम कृष्ण; देहली।

उ० बड़ा वही है जो बुराई का उत्तर बुराई से न देकर भलाई से देता है। -स०

प्र० पूर्वी बंगाल के चुनावों में मुस्लिम लीग की हार का प्रभाव पश्चिमी पाकिस्तान पर क्या पड़ेगा? ...दीन दयाल, अमृतसर।

उ० यदि निकट भविष्य में पश्चिमी पाकिस्तान में चुनाव हुए तो वहां भी संभवत: मुस्लिम लीग हार जायेगी। -स०

प्र० पाकिस्तान भारत का ऋण क्यों नहीं लौटाता? ...लीला, हैदराबाद।

उ० इस लिये कि न देने पर उसकी गरदन पकड़ने वाला भारत में उसे कोई नहीं दीखता —स०

प्र० मिस्र में अब राजनतिक स्थिति क्या है?
...बाबू लाल, मेरठ।

उ० जनरल नजीब शीघ्रतिशीघ्र देश में वैधानिक राज्य पद्धति प्रचलित करने के इच्छुक हैं किन्तु उनके अन्य साथी इस के विरुद्ध हैं। कर्नल नासिर उपमन्त्री और जनरल नजीब में एक प्रकार से सत्ता के लिये कशमकश चल रही है। क्या आश्चर्य जो वे आपसी फूट का शिकार हो जाएं और देश में अराजकता और Chaos की स्थिति पैदा हो जाए। स०

प्र० काश्मीर का झगड़ा अब किस अवस्था में है? ...कुन्दन लाल जम्मू।

उ० एक प्रकार का डैड-लाक सा पैदा हो चुका है। अमरीका से सैनिक सहायता लेकर पाकिस्तान ने परस्पर बात चीत द्वारा समस्या के हल होने की सम्भावना बहुत कम कर दी है।-स०

(सभी पाठक प्रश्न भेज सकते हैं।)

सार समाचार

...पञ्जाब असैम्बली ने श्रीमती सीता देवी का दहेज विरोधी बिल पास कर दिया है। इसके अनुसार सगाई पर कए रु० और दहेज १०० रु० से अधिक का नहीं दिया जा सकता बारातियों क संख्या ११ से अधिक न होगी और उसे २ से अधिक रोटियां न दी जाएंगी। विवाह के तीन वर्ष बाद तक भी दहेज देना वर्जित है। उलंघन करने का दण्ड १००० रु० जुर्माना या एक वर्ष कैद अथवा दोनों।

...अमरीका ने पिछले दिनों हाइड्रोजन बम का विस्फोट टैस्ट किया है। यह एक ही बम ६ लाख व्यक्तियों को मार और २१ लाख को जख्मी कर सकता है। और विनाशकारिता की दृष्टि से ऐटम बम से १०० गुना ज्यादा भयकर है।

...रूस इस से भी अधिक खतरनाक नाईट्रोजन बम बना रहा है।

...वियट मिन्ह को हिंद चीनी में और अधिक आगे बढ़ने से रोकने के लिये अमरीका ने फ्रांस को उस की इस कालोनी की रक्षार्थ सैनिक सहायता देने का निश्चय किया है।

...भारत में फ्रांससी इलाके में सत्याग्रह शुरू हो चुका है। सत्याग्रहियों ने २२ गांव आज़ाद करा लिये है। पुर्तगाली इलाके में भी सत्याग्रह आरम्भ होने वाला है।

...पूर्वी बंगाल में मुस्लिम लीग हार गई है। विरोधी पक्ष को बहुमत प्राप्त हो गया है और फज़लुलहक ने मंत्र-मण्डल बना लिया है।

...ट्रावन कोर कोचीन में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के मन्त्रियों ने ५०० रु० मासिक वेतन लेना स्वीकार किया है।

...मद्रास राज्य में २४२ स्त्रियां गजिटिड अफसर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

शिक्षा सम्बन्धी परेशानियां

—एक तो शिक्षा निःशुल्क नहीं, विद्यार्थियों को बड़ी बड़ी फीसें, चन्दा, दान, जुर्माने और न जाने क्या क्या देना पड़ता है इस पर आये वर्ष पहली पुस्तकें बदल कर नई नई पुस्तकें नियत कर दी जाती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण विद्यार्थी जहां अपनी पुरानी पुस्तकें बेच नहीं पाते वहां उन्हें नई पुस्तकें उन्हें पूरे मूल्य पर लेनी पड़ती हैं। जिस मध्यम वर्ग के पिता के ५-६ बच्चे कालेज व स्कूल में पढ़ते हों उसकी परेशानियों का अनुमान शिक्षा विभाग के अधिकारी नहीं लगा सकते हैं। एक तो शिक्षा दूषित है जिसे प्राप्त कर कोई युवक आत्मनिर्भर नहीं होता इस पर इतनी महंगी कि हर कोई दिला नहीं सकता। यह अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। न जाने इसका सुधार कब होगा ?

कक्षाओं में भीड़-भाड़

प्रायः प्रत्येक स्कूल में एक श्रेणी के कई कई सैक्शन होते हैं और एक एक सैक्शन में साठ साठ, सत्तर २ विद्यार्थी पाये जाते हैं। अध्यापक इतने अधिक विद्यार्थियों को न तो ठीक तरह से सम्भाल पाता है और न ही हर एक को वह तवज्जुह दे सकता है जिसके वे अधिकारी हैं। परिणाम यह होता है कि सिवाय आठ दस के शेष विद्यार्थी पढ़ाई में कमज़ोर रह जाते हैं और पढ़ाई में कमज़ोरी असफलता के लिए जिम्मेदार होती है। अन्ततः इन सब का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है।

स्कूलों से प्रति वर्ष हज़ारों लड़के मैट्रिक पास करके निकलते हैं जो किसी काम के योग्य नहीं होते। यह काम सरकार का है कि वह अपने युवकों के भविष्यों को उज्ज्वल बनाने की ओर अविलम्ब क्रियात्मक पग उठाए।

अध्यापकों की ट्रेनिंग

नये खुल रहे प्राइमरी स्कूलों के लिये अध्यापकों की ट्रेनिंग के लिये जो स्कूल चुने गए हैं उनके बारे में यह कहना कठिन है कि उनका चुनाव ठीक है। सुविधा और किफायत की दृष्टि से जालन्धर की लड़कियों और लड़कों का जगराओं या फीरोजपुर जाना क्योंकर उचित है ? जब जालन्धर में लड़कों और लड़कियों का अलग अलग गवर्नमेंट स्कूल विद्यमान है तो न जाने इन्हें ट्रेनिंग के लिए क्यों नहीं चुना गया ? क्या शिक्षा विभाग के अधिकारी इसका स्पष्टीकरण करेंगे ?

स्कूलों में होने वाली छुट्टियां

स्कूलों में पढ़ाई कम, विद्यार्थियों पर तवज्जुह कम किन्तु छुट्टियां और खर्च ज्यादा। फिर इतनी छुट्टियों का न तो खुद विद्यार्थियों के हित में कोई प्रयोग हो पाता है और न देश और समाज के उत्थान एवं निर्माण में इन्हें बिताने की कोई योजना बनाई जाती है। इस प्रकार प्रति वर्ष ३-४ मास और लाखों रुपये बेकार चले जाते हैं। क्या शिक्षा विभाग इनके सदुपयोग की राह न निकालेगा ?

'प्रकाश' को अपनाइये

पंजाब में 'प्रकाश' ह एक मात्र हिन्दी पत्रिका है। हम स्कूलों के मुख्य अध्यापक-अध्यापिकाओं से अपील करते हैं कि वे इसे जारी कराए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि—

खेती के नये औज़ारों से फसलों में वृद्धि

खेती के नये डिज़ाइन के औज़ार और मशीन-ट्रैक्टर केंद्र, चीन के विभिन्न भागों में, फसलों के बढ़ाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। राज्य की ओर से, पिछले तीन सालों में ६ लाख से ऊपर ऐसे औज़ार सप्लाई किए गए हैं जो आधा काम खुद-ब-खुद करते हैं, और इस साल ११ नये मशीन-ट्रैक्टर केन्द्र स्थापित किए जा चुके हैं।

इस वर्ष, राजकीय, सहकारी और परस्पर-सहायता टीमों के फार्मों की लगभग ५४०० हैक्टर भूमि में, ट्रैक्टरों द्वारा खिंचने वाली मशीनों से खेती की गई थी। इस सारी भूमि में पिछले साल से भारी फसल पैदा हुई है। उत्तर पूर्वी चीन में, सुंगारी नदी-घाटी के 'स्पार्क' सहकारी फार्म में लगभग २०० हैक्टर भूमि से औसतन प्रति हैक्टर साढ़े छै टन चावल पैदा किया गया है। जो उस इलाके की औसत पैदावार से दुगना है यह कामयाबी, बहुत हद तक, पड़ोस के एक हाल ही में कायम हुए मशीन-ट्रैक्टर-केंद्र की बदौलत हासिल हुई है।

उत्तरी, उत्तर पश्चिमी और पूर्वी चीन में तथा मध्य-दक्षिण चीन के याङ्त्ज़ी नदी से उत्तर की ओर के ज़िलों में, इस समय, नये डिज़ाइन के ५ लाख ४० हज़ार औज़ार इस्तेमाल किए जा रहे हैं, जिन में से ज्यादातर हल हैं। उत्तर पूर्व और सिंकियाङ प्रान्त के उन भागों में जहां पशुओं की बहुतात है, ६० हज़ार से ऊपर ऐसी बड़ी २ मशीनें इस्तेमाल की जा रही हैं जो आधा काम खुद-ब-खुद करती हैं। इनमें हल, 'डिस्क हैरो' 'सोवर' और 'हार्वेस्टर' मशीनें शामिल हैं।

शुरू में, घोड़े द्वारा खिंचने वाले बढ़िया किस्म के जो हल बांटे गए थे उनके परिणाम भी बहुत अच्छे रहे हैं। उत्तर, उत्तर-पश्चिम, पूर्व और मध्य-दक्षिण चीन के नौ प्रान्तों के आंकड़ों से पता चलता है कि, १९५१ में वहां इन हलों द्वारा जोती गई भूमि से जो फसलें हुई थीं, वे पुराने हलों द्वारा जोती गई भूमि की फसलों से १७ प्रतिशत ज्यादा थीं। उत्तर पूर्व में, जहां इस समय घोड़े द्वारा खिंचने वाली मशीनों के ४००० से ऊपर सैट काम में लाए जा रहे हैं, इन मशीनों द्वारा जोती गई अधिकांश भूमि से प्रति हैक्टर २२५ से ४५० किलोग्राम तक ज्यादा अनाज पैदा हुआ है। पिछले साल लगभग ६० परस्पर सहायता टीमों की जो जांच पड़ताल की गई थी, उससे पता चला था कि घोड़े द्वारा खिंचने वाली मशीनों से, औसतन, २५ प्रतिशत अधिक फसलें हुई थीं। मुकडन की बाहरी बस्तियों के दो कृषि सहकारी फार्मों ने तो स्थानीय औसत पैदावार से ३० प्रतिशत अधिक फसल पैदा की थी।

किसान बड़ी तेज़ी के साथ खेती के इन नये औज़ारों के लाभों को समझते जा रहे हैं। अलग अलग खेती करने वाले बहुत से किसानों ने, नये डिज़ाइन के हल खरीदने के लिए, परस्पर सहायता टीमें बनाने का फैसला कर लिया है। परस्पर-सहायता टीमें अपनी ज़मीनों को एक जगह मिल कर सहकारी फार्म बना रही हैं, ताकि वह नये यन्त्रों, खासकर घोड़े से खिंचने वाली मशीनों के पूरे सैटों का इस्तेमाल कर सकें और उससे पूरा पूरा फायदा उठा सकें।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या लिखें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इस लेख सम्बन्धी चित्र टाईटल के पृष्ठों पर देखें)

एक सोवियत स्कूल में

(लेखिका—श्रीमती एलेना केचेतोवा)

शीत ऋतु में दिन मास्को में देर से निकलता है। सात बज चुके हैं, लेकिन चांद की रुपहली कोर अभी भी आकाश में दिखाई देती है। लेकिन मास्को, सदा की भांति, जल्दी ही जाग उठा है, भूमिगत रेल्वे स्टेशन की ओर जाने वाले लोगों की धारा बढ़ती जा रही है। सड़कों पर द्रुतगामी गाड़ियों कारों की आवाजों की गूंज सुनाई देती है, बसें और ट्राली कारें, बिना कोई आवाज़ किये, सपाक से गुजर जाती हैं और पगडंडी पर बर्फ चमचमा रही है।

लड़कों का ५१८वां माध्यमिक स्कूल नहर के बांध पर स्थित है और बच्चों, लड़कों तथा युवकों के दल, नन्हीं धाराओं की भांति, सुबह की इस वेला में सभी दिशाओं से स्कूल की इमारत की ओर उमड़ते हुए दिखाई देते हैं।

मधुमक्खियों के एक बड़े छत्ते की भांति स्कूल में धीमी भनभनाहट गूंज भर गई है। लेकिन घण्टी के बजते ही समूची आवाज़ विलीन हो जाती है और स्कूल गहरी खामोशी में डूब जाता है। यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि स्कूल इतने सारे आल्हादपूर्ण और चञ्चल लड़कों से भरा हुआ है। कक्षाओं के भीतर से केवल शिक्षकों और उनके सवालों का जवाब देने वाले छात्रों की साफ और सुसंगत आवाज़ें सुनाई देती हैं।

नगर के अन्य सैंकड़ों स्कूलों की भांति यह भी मास्को का एक साधारण स्कूल है। यह स्कूल ज्ञान-प्राप्ति की समान आकांक्षा से संयुक्त छात्रों का एक बड़ा मित्रतापूर्ण परिवार है। इसके छात्रों में एक फिटर का सन्तान यूरा यान्कोव, एक गृहदासी का लड़का वोलोदिया पारशिन, एक इंजीनियर का लड़का व्याचेस्लाव पारताशेव और एक यार्ड साफ करने वाले का बेटा कोल्याबोगोमोसोव, एक मेजर-जेनरल का लड़का मीशा कोन्कोव और एक उप-मन्त्री का लड़का सेर्गेई बाकाएव हैं। ये सात वर्ष की आयु में स्कूल में भर्ती हुए थे और दस साल से आम शिक्षा प्राप्त करते आ रहे हैं। स्कूली पढ़ाई खत्म कर लेने पर उन्हें स्कूल से एक सर्टीफीकेट प्राप्त होगा, एक ऐसी दस्तावेज़ जो इस बात का प्रमाण होगी कि उन्हों ने अपनी माध्यमिक शिक्षा को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है और वे विज्ञान के मूल सिद्धातों की पक्की जानकारी से लैस हैं।

स्कूल का पाठ्यक्रम

'अपने छात्रों को गहरे और सुविस्तृत ज्ञान से सुसज्जित करना तथा उन्हें सच्चे अर्थ में सुसंस्कृत और सुशिक्षित जन बनाना स्कूल के समूचे शिक्षा-कार्य का एक लक्ष्य है' स्कूल के डाइरक्टर निकोलाई आन्द्रेविच कस्पेरस्की ने बताया—'हमारे शिक्षकों की कोशिशों का लक्ष्य रटाई द्वारा यन्त्रवत ज्ञान-प्राप्ति की पद्धति का सहारा लेना नहीं, बल्कि स्कूल में स्वीकृत तमाम विषयों को समझाने की पद्धति के द्वारा छात्रों को सर्वांगपूर्ण ज्ञान प्रदान करना है।'

दस वर्षों के भीतर छात्र काफी बड़ी मात्रा में आम शिक्षा के विषयों का अध्ययन कर लेते हैं। वे भौतिक विज्ञान, गणित और जीव-विज्ञान के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। सैद्धान्तिक प्रशिक्षण के अलावा छात्रों को प्रयोगशालाओं तथा अध्ययनकक्षों में अमली शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दी जाती है ।

स्कूल के कार्यक्रम में दर्शन-साहित्य जैसे विषयों का काफी बड़ा स्थान है। छात्र अपनी मातृभाषा का तथा साहित्य का गहरा अध्ययन करते हैं। बड़े दर्जों में पहुंचने पर वे सोवियत संघ में बसने वाली जातियों की रचनात्मक कला से और दूसरों देशों के प्राचीन तथा आज के साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियों से परिचित होते हैं।

इतिहास के पाठ्यक्रम में प्राचीन पूर्व, प्राचीन ग्रीस और प्राचीन रोम का इतिहास मध्य-युगीन इतिहास और अर्वाचीन इतिहास शामिल है। बच्चे अपने राज्य के इतिहास का और सोवियत संघ में बसने वाली जातियों के इतिहास का बड़े चाव से अध्ययन करते हैं और सोवियत देश के राज्य की बनावट का, उसके भौतिक और आर्थिक भूगोल का, ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

अपने देश के अतीत और वर्तमान के अध्ययन द्वारा, पुश्किन, लेओ तौल्स्तोय, तुर्गनेव, गोर्की तथा अन्य महान मानववादी लेखकों की कृतियों के अध्ययन द्वारा; शुरू के सालों से ही बच्चों को अन्तर्राष्ट्रीयता और मानवता की भावना में दीक्षित किया जाता है और वे समूचे हृदय से, अपनी मातृभूमि से प्यार करना तथा अन्य जातियों और देशों की संस्कृति के प्रति आदर-भाव रखना सीखते हैं।

एकदम शुरू के दिनों से ही बच्चों को स्कूल में ऐसा वातावरण मिलता है जो उन्हें काम करने की प्रेरणा देता है। हल्के, खुलासा और गर्म कक्षा-भवनों में वे प्रवेश करते हैं, चहुं ओर फूलों की प्रचुरता उन्हें दिखाई देती है। पाठशाला की बड़ी तीन-मंज़िला इमारत में तीस से ज्यादा कक्षा-भवन हैं। पाठशाला की घण्टा के बाद चालू होने वाले विभिन्न मण्डलों के लिए विशिष्ट भवन नियत हैं। पाठशाला में एक मिकेनीकल शाप (विभाग) है जो टैकनीक से प्रेम करने वाले किशोरों के लिए टर्निंग लेथों और सभी प्रकार के फिटरों के औजारों तथा यन्त्रों से सुसज्जित है। शिक्षकों के भवन के अलावा एक अच्छा, नियमबद्ध अध्ययन करने का भवन है जिस में, शिक्षकों की सुविधा के लिए, प्रचुर मात्रा में विविध विषयक साहित्य तथा दृश्य-शिक्षा के प्रसाधन मौजूद हैं।

बच्चों के सफल अध्ययन के लिए आवश्यक तमाम परिस्थितियां पाठशाला में मौजूद हैं। प्रत्येक छात्र के लिए सभी आवश्यक पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था की जाती है। नक्शे, यन्त्रादि और दृश्य शिक्षा के अन्य प्रसाधन अपने पाठों को और भी ज्यादा कारगर रूप में सीखने में छात्रों को मदद देते हैं। पहले दर्जे में बच्चों की वाक्‌शक्ति को विकसित करने के लिये सभी प्रकार के पाठशाला के सामान का, जैसे गिनती सीखने के लिए गोलियों से युक्त बड़े बड़े चौखटों, वर्णमाला के हिस्सों और उज्ज्वल चित्रों आदि का प्रयोग किया जाता है। बड़े दर्जों में भी, दृश्य शिक्षा के प्रसाधनों का व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है तथा अमली और प्रयोगशालाओं में किए जाने वाले काम के जरिये, जिसे वे स्वतन्त्र रूप में करते हैं, विषयों की अच्छी और गहरी जानकारी प्राप्त करने में छात्रों की मदद की जाती है।

पाठशाला में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के अध्ययन करने के लिये विशिष्ट कमरे नियत हैं। इन कमरों की यांत्रिक साज सज्जा, इन विषयों के समूचे अध्ययन काल में, प्रयोगशाला-कार्य करने वाले छात्रों को मदद देती है। अकेले पिछले तीन वर्षों के भीतर ही अध्ययनशालाओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये विभिन्न प्रकार का साज-समान मंगाने पर ६०,००० रूबल खर्च किये गए हैं। भौतिक विज्ञान को अध्ययनशाला में फिल्म दिखाने की एक मशीन मौजूद है, जो शिक्षकोंके लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षा सम्बन्धी फिल्मों का प्रदर्शन करना सम्भव बनाती है।

चौड़ा फौयर, जहां छात्र अपने पाठों के बीच का अवकाश काल बिताते हैं, बहुत ही सादगी के साथ सुसज्जित है। इसमें काफी, बड़े २ अक्षरों में पुश्किन की वह सुप्रसिद्ध पंक्ति अंकित है जिसमें उन्होंने अपने मित्र का आह्वान किया था कि अपने हृदय की समूची लगन से वह अपनी मातृ भूमि की सेवा करे। फौयर की दीवारों पर रूस के लेखकों और कवियों के चित्र लगे हैं: पुश्किन, तोलस्तोय, नेक्रासोव, चेखोव, मायाकोवस्की, गार्की। साथ ही रूसी दृश्य पटों के चित्र भी दीवारों की शोभा बढ़ाते हैं।

स्कूल के शिक्षक गण

माध्यमिक स्कूल नम्बर ५१८ में शिक्षकों की संख्या चालीस है, और सबके सब अध्यापन-विज्ञान की ऊंची शिक्षा से सुसज्जित हैं।

पाठशाला की एक शिक्षिका नादेज्हदा को सारेवा के शब्दों में: 'यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि बच्चा अपनी पाठशाला से प्यार करे, पाठशाला में अपने शुरु के दिनों से ही ज्ञान-प्राप्ति में वह दिलचस्पी ले और उनके लिये प्रयत्नशील हो। स्कूली जीवन पहले सालों में बच्चों के लालन पालन के प्रति शिक्षकों की जिम्मेदारी को समझ कर पहले दर्जे के छात्रों को हम अपने श्रेष्ठतम शिक्षकों के हाथों में सौंपते हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि प्रशिक्षण और शिक्षण की सफलता, भारी मात्रा में, शिक्षक के ज्ञान और अनुभव; अपने पेशे के प्रति उसके प्रेम और नजदिकेतुर दृष्टान्त पर निर्भर करती है।

'इस साल हमारी पाठशाला में पहले दर्जे के छात्रों की चार क्लासें हैं। यह कहना कठिन है कि पहले दर्जे के छात्रों को पढ़ाने वाली चार शिक्षिकाओं में से कौन ज्यादा अच्छी है वालेन्तीना स्लेपौवा, अलेक्सान्द्रा कुलीकोवा? इन में से प्रत्येक की कुछ निजी विशेषताएँ हैं, लेकिन शिक्षिकाए सब की सब श्रेष्ठ हैं। जब बच्चे ऊंचे दर्जों में अध्ययन करते हैं और विभिन्न शिक्षकों से उनका वास्ता पड़ता है, तब भी अपने पहले शिक्षकों का जिन्हों ने उन्हें पढ़ना लिखना और अंकगणित का क-ख-ग सिखाया, जिन्हों ने उन्हें पहली पोथी और स्कूली जीवन के आचार-विचार से परिचित कराया, सदा प्रेम और कृतज्ञता के साथ स्मरण करते हैं।

पहले चार सालों तक बच्चे एक ही शिक्षक या शिक्षिका की देख रेख में रहते हैं जो अपनी कक्षा को सभी विषयों की शिक्षा देता या देती है, और छात्रों के बीच समूचे शिक्षा-कार्य का संचालन करता या करती है। पांचवें दर्जे से छात्र अनेक शिक्षकों से पढ़ते हैं। और प्रत्येक शिक्षक एक विशिष्ट विषय की शिक्षा देता है:जैसे साहित्य, अंकगणित, भौतिक विज्ञान भूगोल आदि। लेकिन यह सब होते हुए एक मुख्याध्यापक प्रत्येक कक्षा का निर्देशन करता है, और अपने छात्रों के आचार-व्यवहार तथा अध्ययनशीलता की निगरानी रखता है। अपने जिम्मे छात्रों में से प्रत्येक की निजी विशिष्टताओं और दिलचस्पियों से वह परिचित होता है, और उसके प्रयत्न एक मित्रतापूर्ण संघ के रूप में एकजूट करते तथा रक्षा के काम को सहज गति से चलाने की ओर निर्देशित होते हैं शिक्षकों में से उनको जो स्कूल के शिक्षक-दल में सर्वाधिक आदरणीय अनुभवी और अधिकृत सदस्य होते हैं मुख्याध्यापक नियुक्त किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि—

खेती के लिए सिंचाई का महत्व

अमेरिका के कृषि-विभाग द्वारा अभी हाल में किये गये पर्यवेक्षण के अनुसार अमेरिका के कृषि उत्पादन में सिंचाई का महत्वपूर्ण भाग है।

इस पर्यवेक्षण से प्रकट होता है कि राष्ट्र के कृषि उत्पादन का आठवां भाग सिंचाई वाली भूमि से प्राप्त होता है जबकि कुल कृषि भूमि के केवल १६वें भाग में सिंचाई की जाती है। इस प्रकार औसतन एक एकड़ सिंचित भूमि दो एकड़ असिंचित भूमि के बराबर है।

अमेरिका के पश्चिमी भाग में मरु एवं अर्ध मरु शुष्क भूमि में विस्तृत पैमाने पर सिंचाई की जाती है। वहां सिंचाई के बिना अच्छी खेती नहीं हो सकती। आर्द्र क्षेत्रों में भी अधिक जल चाहने वाली फसलों को पैदा करने के लिए या उन ऋतुओं में पानी देने के लिए सिंचाई करनी पड़ती है जिन में वर्षा कम होती है।

पश्चिमी भाग में सिंचित एवं असिंचित भूमि में बहुत अधिक अन्तर पाया जाता है। पश्चिम के १७ राज्यों में केवल १२ प्रतिशत कृषि भूमि में सिंचाई की जाती है, किन्तु इन क्षेत्रों में पश्चिमी भाग में उत्पादन होने वाली कुल फसलों का लगभग ३५ प्रतिशत भाग उत्पादन होता है।

सिंचाई से कृषि-भूमि का विस्तार

गत वर्षों में सिंचाई का योजनाओं का विस्तार करके, प्रतिवर्ष अमेरिका की कृषि भूमि में १० लाख एकड़ भूमि की वृद्धि की जाती रही है। कृषि विभाग ने यह भी बताया है कि कृषक लोग उपलब्ध जल को बहुत अच्छे ढग से उपयोग में ला रहे हैं और बहुत सी कृषि योजनाओं में जल की उपलब्धि को अधिक सुलभ और यथेष्ठ बनाया जा रहा है।

अमेरिका के आधे आर्द्र प्रदेश में कृषक लोग पानी छिड़कने की प्रक्रियाओं का बहुत अधिक उपयोग करने लगे हैं। इस प्रकार सिंचाई करके वे अपनी फसलों की उन दिनों में रक्षा करते हैं जब वर्षा नहीं होती।

सिंचाई का प्रभाव

कुछ पश्चिमी राज्यों में सिंचाई के बिना खेती नहीं हो सकती। नेवाडा, एजिरोना तथा यूटा में उत्पन्न होने वाली ६० से १०० प्रतिशत फसलें सिंचाई वाली भूमि में ही पैदा की जाती है। कलिफोर्निया में होने वाली बेतहाशा पैदावार का४/५ भाग सिंचाई की सहायाता से उत्पन्न किया जाता है। आइडाहो तथा वायोमिंग की तीन चौथाई उपज, न्यूमैक्सिको तथा कोलोराडो की दो तिहाई उपज, औरगन, मोन्टाटा तथा वाशिंगटन में एक तिहाई से दो तिहाई तक उपज सिंचाई द्वारा की जाती है। नेब्रास्का तथा टैक्सास में लगभग १५ प्रतिशत उपज सिंचाई की सहायता से की जाती है।

अमेरिका में चुकन्दर की अच्छी फसलों का दारोमदार सिंचाई पर ही है। चावल की पैदावार में वृद्धि धान के खेतों में पानी भर के ही हासिल की गई है।

गत दस वर्षों में सिंचाई की व्यवस्था वाले कृषकों ने उन फसलों को बोने का यत्न किया जिन की प्रति एकड़ पैदावार से आमदनी अधिक बैठती है।

(शेष पृ० १४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ रूस का सन्त पिशाच-रास्पुटिन ★

(लेखक—बच्चन श्रीवास्तव)

इतिहास में हमें ऐसे कितने ही पुरोहित, पादरी तथा राजगुरु मिलते हैं जिनका राज्य वंश या राज्य सत्ता से तो कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था, परन्तु अपनी राजनैतिक चालों तथा षड़यन्त्रों के कारण वे यथार्थ में वर्षों राज्य करते रहे। इतिहास में रास्पुटिन ऐसा ही एक सन्त हुआ है जिसके आदेशों पर सारा रूसी साम्राज्य चलता था।

यह सन्त वर्षों रूस में देवता के समान पुजता रहा। परन्तु बाद में रूसी जनता ने इसे रास्पुटिन के नाम से पुकारा। रास्पुटिन रूसी शब्द है जिसका अर्थ है 'सन्त-पिशाच'। आज से पचास वर्ष पूर्व रूसी साम्राज्य का अधिष्ठाता जार निकोलस था, रास्पुटिन अपनी प्रतिभा के उच्चतम शिखर पर था, जार, उसकी पत्नी तथा राज्य परिवार पर यह सन्त पिशाच इतना आरूढ़ था कि रूस में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध हो गई थी, 'रूस पर राज करता है जार, जार पर राज करती है जारीना (महारानी) और दोनो पर राज करता है सन्त पिशाच।'

'ईश्वर का अवतार'

रास्पुटिन अपने जीवन काल में सन्त कहलाता था। जनता उसे देवता समझ कर पूजती थी। उसका कहना था कि 'मैं शक्तिमान ईश्वर का अवतार हूँ अपने आपको मुझे समर्पित करो, तुम सब पापों से मुक्त हो जाओगे।'

रास्पुटिन का जन्म साइबेरिया के एक गांव में एक किसान परिवार में हुआ था, इसका नाम था ग्रैगरी एफियोविच। बाल्यकाल से ही ग्रैगरी आवारा तथा निर्लज्ज था चोरी करना उसका नित्य का कार्य था। बचपन की इन आदतों तथा माता की मार ने ग्रैगरी को शारीरिक शक्ति तथा दुख सहने का आदी बना दिया।

प्रतिदिन के लांछनों से तंग आकर अन्त में एक दिन वह गांव से भाग गया। कई वर्ष व्यतीत हो गए। गांव के लोग उस चोर बालक को भूल गये। तभी देश में एक योगी की ख्याति फैलने लगी। प्रतिदिन उसके शिष्यों की संख्या बढ़ने लगी। आये दिन उसकी प्रशंसा का गुन-गान गांव-गांव तथ नगर-नगर में होने लगा।

इस योगी को उसके अनुयायी 'स्टारेट्स' अर्थात पवित्र आत्मा कहते, वह वेषभूषा से पादरी प्रतीत होता था। यह वही आवारा तथा पथ भ्रष्ट ग्रैगरी था।

आखिर ग्रैगरी सन्त कैसे बना? भाग कर वह वर्षों गिरजों तथा मठों में रहा, जहां उस ने धर्म तथा रहस्यवाद का विशेष अध्ययन किया। बाल्यकाल की यातनाओं ने उसे सहन शक्ति दी थी उसका उसने लाभ उठाया। वह कई २ दिन उपवास रखता, अपनी तर्क शक्ति से दूसरों को परास्त करता। लोग प्रभावित हो उसके भक्त बनते तो वह कहता 'मैं ईश्वर का अंश हूं मुझ से आत्मा तथा शरीर से एक हो जाओ।' और इस युक्ति के द्वारा वह स्त्रियों से व्यभिचार करता।

महारानी पर जादू चलाया

युक्तिपूर्ण तर्क से वह गरीब तथा भोली जनता को छलता रहा। शनैः शनैः उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक उपदेशों की ख्याति राज परिवार तक पहुंची। महारानी जो धर्म में अन्धविश्वास रखती थी उसके दर्शनों को लालायित हो गई। सन्त को आमन्त्रण मिला। फिर क्या था उसने महारानी पर अपने रहस्यवाद का जादू चलाया। वह उसके चंगुल में फंस गई। जब रानी ही उसकी शिष्या हो गई तो फिर उसने शासन प्रबन्ध में हस्तक्षेप आरम्भ किया। पहले तो एक सलाहकार के रूप में फिर गुरु के रूप में। अन्त में यह योगी जो चाहता वही होता। वह शासक था।

धीरे २ पुराने दरबारी निकाले जाने लगे। सन्त के कृपापात्र शासन में आने लगे। दरबारियों ने विरोध किया परन्तु जार विवश था जब उसकी पत्नी ही सन्त के इशारों पर नाचती तो वह बेचारा नपुन्सक राजा क्या कर सकता था। विरोध करने वालों को इस सन्त के कहने पर मौत के घाट उतार दिया जाता।

विरोधी बढ़े

देश में सन्त के विरोधी बढ़ने लगे। जनता में सन्त तथा सम्राज्ञी को लेकर तरह तरह की बातें फैलने लगीं। लोग महारानी को चरित्रहीन कहते। विरोध की अग्नि फैलने लगी। राज्य परिवार के कुछ लोगों ने निश्चय किया कि कुछ करना ही पड़ेगा। जार तथा उसकी पत्नी को समझाना तो निरर्थक था, केवल एक उपाय था कि सन्त को समाप्त कर दिया जाए।

एक षड़यन्त्र रचा गया। राज्य परिवार के एक सदस्य राजकुमार पुसोयोफ ने रास्पुटिन को भोजन पर निमन्त्रित किया। भोजन में तथा फिर मदिरा में विष दिया गया। परन्तु कहते हैं कि किसी का भी प्रभाव न हुआ। अन्त में राजकुमार ने उस पर गोली का वार भी किया। गोली खाकर भी वह कुत्ते की तरह चलता हुआ घर से बाहर निकल गया। तब राजकुमार के कई साथियों ने उसे लगातार गोलियां चला कर गिरा दिया और फिर उसे कपड़े में बांध कर एक नदी में फेंक आये, जहां दूसरे दिन उसका शरीर बरफ से अकड़ा हुआ मिला।

अन्त हुआ

इस प्रकार व्यभिचारी रास्पुटिन का अन्त हुआ।

रास्पुटिन व्यभिचारी तथा दुराचारी होते हुए भी वर्षों कैसे पूजा जाता रहा यह यथार्थ आश्चर्य है। इतिहास से ज्ञात होता है कि उसने में अपनी शारीरिक शक्ति से जो योग बल प्राप्त किया उससे वह जनता को बहकाता रहा। अपनी तर्क शक्ति तथा रहस्यवाद की विषमताओं में जन-साधारण को उलझा कर ही वह सन्त कहलाता रहा। यह भ्रम कि उसमें दैवि शक्ति थी, उसी का प्रचारित था।

इतिहास के पृष्ठों पर सन्त 'रास्पुटिन' डैविल यौंक या नर-पिशाच के नाम से याद किया जाता है। इसने षड़यन्त्र रच कर कितनों की हत्या की, कितनों को दुश्चरित्र किया इसका साक्षी इतिहास ही है।

★

उत्तरी अफ्रीका के एक गरम प्रदेश में जहां पानी नहीं मिलता एक ऐसा तालाब है जिसमें हवा से पानी जमा होता है—वर्षा या जमीन से नहीं, यह तालाब ४० फुट ऊंचा है और इस में ३,००० प्लेटें लगी हुई हैं। गरम दिनों और ठण्डी रातों के कारण तापमान में इतना अधिक अन्तर हो जाता है कि हवा की नमी पानी के रूप में इन प्लेटों पर जमां हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ११ का शेष)

इस प्रकार, उदाहरण के तौर पर, पश्चिमी राज्यों में सब्जियों की पैदावार बहुत बढ़ गई है और दालों की तुलना में उनकी उपज ६० प्रतिशत हो गई है ।

कृषक सिंचाई द्वारा जौ की खेती भी पहले से अधिक करने लगे हैं । १६३६ के बाद से बिना सिंचाई वाली भूमि में जौ की खेती करना बन्द कर दिया गया है और सिंचित भूमि में जौ की खेती का अनुपात दुगना हो गया है ।

चूंकि गेहूं को शुष्क भूमि की फसल समझा जाता है इस लिए उसकी दृष्टि से सिंचाई का विशेष महत्व नहीं है । पश्चिमी भाग में केवल २ प्रतिशत भूमि में सिंचाई की खेती की जाती है ।

कपास की खेती

गत वर्षों में अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है । १६३६ में पश्चिमी राज्यों में उत्पन्न होने वाली कपास का केवल १/५ भाग सिंचाई द्वारा उत्पन्न किया जाता था किन्तु १६४६ में पश्चिमी राज्यों में उत्पन्न होने वाली कपास का ०/५ भाग सिंचाई करके पहले कपास बोने के काम आने वाली भूमि के १/५ से भी कम हिस्से में पैदा किया जाने लगा था ।

१६३६ तथा १६४६ के मध्य सिंचाई की सहायता से मोटे अनाजों की उपज में ५०० प्रतिशत की वृद्धि हुई । उत्पादन में इतनी अधिक वृद्धि टैक्सास में कुओं द्वारा सिंचाई का विस्तार करने से हुई । १६३६ में सिंचाई के द्वारा टैक्सास में ७ लाख बुशल मोटे अनाज उत्पन्न किये गये थे । १६४६ तक यह उत्पादन एक करोड़ ७० लाख बुशल तक पहुंच गया था और उस में तेजी से वृद्धि हो रही थी ।

आश्चर्यजनक अन्तर

१६ पश्चिमी राज्यों तथा फ्लोरिडा, लुइजियाना और अर्कन्सौ में कृषक ने सिंचाई द्वारा अल्फाल्फा (रिजका) के उत्पादन में औसतन ३ टन प्रति एकड़ से अधिक की वृद्धि की । उन्हीं राज्यों की असिंचित भूमि में आमतौर पर $1\frac{3}{4}$ टन प्रति एकड़ उपज होती थी । उन्हीं राज्यों के कृषक सिंचाई वाली भूमि से ३०० बुशल प्रति एकड़ आलू उत्पन्न करते हैं, जबकि बिना सिंचाई वाली भूमि में सिर्फ १६० बुशल प्रति एकड़ आलू पैदा किये जाते हैं । सिंचाई वाली भूमि में कपास १.२ गांठ प्रति एकड़ उत्पन्न होती है, जबकि बिना सिंचाई वाली भूमि में आधी गांठ प्रति एकड़ के हिसाब से होती है । सिंचाई वाली भूमि में ३३ बुशल प्रति एकड़ गेहूं पैदा होता है, जबकि बिना सिंचाई वाली भूमि में केवल दस बुशल प्रति एकड़ उत्पन्न होता है ।

सरकार का सहयोग

यद्यपि कृषक स्वयं सहकारी संस्थाओं के द्वारा मिल जुल कर सिंचाई की व्यवस्था करते हैं, पर संघीय तथा राज्यीय सरकारें भी कृषि-भूमि के लिये सिंचाई की व्यवस्था करने के कार्य में महत्वपूर्ण भाग अदा करती हैं ।

दुकानदारी !

एक दुकानदार का लड़का अपने पिता से दुकानदारी का काम सीख रहा था । एक दिन वह अपने पिता के पास आया और पूछने लगा, 'वह ग्राहक पूछ रहा है कि यह ऊनी वे सुकड़ने वाली बनियान सुकड़ेगी तो नहीं ?'

पिता...'क्या यह उसके ठीक आती है ?'

लड़का...'नहीं, यह उसके बहुत बड़ी है ।'

पिता...'बस तो कह दो यह अवश्य सुकड़ेगी ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे—

★ श्री गान्धी सतसई ★

[ले०—श्री शाँत शास्त्री 'शालिहास' गोहाना]

(सप्तम शतक)

राष्ट्रर्षि

बापू 'विग्रह वान् सत्य:' इस युग के थे गण्य।
जिनके दर्शन मात्र से हम होते थे धन्य ॥१॥
धर्म ग्लानि होती जभी होता तब अवतार।
धर्म स्थापना के लिये गीता कहे पुकार ॥२॥
भारतीय दासता में खोते थे धर्म।
यही मान्य था बापू को-धर्म ग्लानि सम कर्म ॥३॥
थे विभूति मय सत्व वे परमात्मा के अंश।
जीवन्मुक्त महापुरुष योगी परम हंस्य ॥४॥
देश दास्यता नाश हित बापू ऋषि स्वरूप।
भारत भू पै अवतरे रंक रूप में भूप ॥५॥
सब विषयों पर प्राप्त हैं उनके अमर विचार।
समय समय पर जो हमें करते संकट पार ॥६॥
जीवित हैं इस रूप में आज हमारे मध्य।
सलाहकार सम विकृत को करते हुए विशुद्ध ॥७॥
'आज नहीं हैं वे यहां' कहना है अविचार।
जब तक जीवित हैंयहां उनके अमर विचार ॥८॥
यशः काय वे सुकृति भारत को निज राह।
दिखा रहे हैं लेख औ' स्वविचारों की छांह ॥९॥
नहिं शहीद मरते कभी प्रत्युत होते अमर।
कीर्ति काय उनका सदा रहता अमिट अजर।१०।

ग्रामोद्धार

भारत मां के प्राण हैं सात लाख देहात।
अतः ग्राम सुधार पथ किया बापू ने ज्ञात।११।
बिना प्राण रक्षा किए देह रक्षण व्यर्थ।
मूल त्याग, दल सींचना यथा वृक्ष का व्यर्थ।१२।
निर्धन जनता ग्राम की अनपढ़ औ' बेकार।
देख बापू ने था किया चालू ग्राम सुधार।१३।
रोगी भारत आत्मा का करने उपचार।
शुरू किया था बापू ने खादी का प्रचार।१४।
रूई खुद पैदा करो कातो बुनो स्व-हाथ।
पहनो उज्ज्वल खादी फिर रहे न हिन्द अनाथ।१५।

नव भारत

आर्थिक सामाजिक तथा नैतिक स्थिति अनुसार।
नव भारत निर्माण हित था उनका सुविचार।१६।
मंत्री गण सादे रहें ठाठ बाठ को त्याग।
बनें संयमी दृढ़ यथा कौटिल्य महाभाग।१७।
सदा चारिणी हो प्रजा दुराचार दें छोड़।
भ्रष्टाचार नियंत्रण आदि से मुंह मोड़।१८।
पिता पुत्रवत् शासक जनता जन हो जायं।
भेद भाव की 'भींत' खुदभूत बात हो जाय।१९।
रचनात्मक कृतियां करो देश गरीबी दूर।
जिससे हो जाए सहज रहें न दीन मजूर।२०।
रचनात्मक कार्यक्रमों पर यदि बल लग जाय।
किंचित मात्र भी देश का, तो हो ईश सहाय।२१।
नव प्राप्त स्वतन्त्रता स्वयं स्थायी हो जाय।
बापू के आदेश पर जनता यदि लग जाय।२२।
ग्राम स्वावलम्बी बनें रचनात्मक कृति निष्ठ।
राष्ट्र समस्याएं स्वयं सुलझें, सहज गरिष्ठ।२३।
राजनयिक परतन्त्रता अन्धकार को चीर।
यथा हुए स्वाधीन हम भारत मां के वीर।२४।
तथा संस्कृति भक्षिका अंग्रेजी से छूट।
जाएं जितना जल्द हम उतना श्रेय अटूट।२५।
कृष्ण कलंक, 'स्वराज्य' की चद्दर में यह देख।
अंग्रेजी की मुख्यता तथा मान सविशेष।२६।
आजादी के छीनने वालों की भाषा।
मान्य रहे स्वातन्त्र्य में है मजाक खासा।२७।
पर भाषा की पोषणा निज भाषा को त्याग।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

★ पहाड़ी के उस पार ★

(ले०—कु० सुदर्शन खोसला, प्रभाकर)

जीवन की ओर से आती हुई शीतल, मन्द समीर में रह रह कर वह खोती रही। शस्यश्यामला-तरु के उर से, छन छन कर स्वर्णित आभा आती रही और वह मुग्ध सी ताकती रही। वह पुष्पों की मुखश्री को छेड़ती, कभी सरिता के तट की ऊंची शिला पर बैठी उछलती तरल तरंगों में नृत्य करती स्वर्णित सी रश्मियों को झांका करती। प्रकृति उस की सङ्गनि थी, पर्वत की गोद में उस का जन्म हुआ था। वह रह २ कर हरित वृक्षों की लहराती डालियों से झूल पड़ती या फिर नन्हीं दुधिया घास पर ही मचल लेती। वह बच्ची तो थी ही, फिर भला क्यों न बचपन के आँचल में हिंडोले लेती। वह पर्वत के उर पर उछलते नालों को नन्हें २ पांवों से मापा करती या विहङ्गों के उमड़ते नृत्य में शामिल हो जाती! एकाकीपन कभी कभी उसे खलने लगता लेकिन वह फिर अपनी प्रकृति की पलकों से खेलने लगती। वह अपनी कुटिया में मां के साथ रहती थी। कुटिया और मां, यही उसका सीमित जीवन था। हाँ प्रकृति का विस्तृत आंचल उसके पिपासित नेत्रों को हंसाने के लिए काफी था। उसका भोला सा मुख देख कर चन्द्र-हास भी मन्द पड़ जाता। उसकी उलझती रश्मियां सदा ही कुटिया के टूट २ कर हटे छेदों से छन २ कर उसके निद्रित मुख-मण्डल पर पड़ा करतीं। मां के बूढ़े मुख पर एक स्मृति की रेखा फैलसी जाती तथा वह धीरे २ अपनी बालिका के मुख पर कंपित हाथ फेरती २ सो जाती।

एक दिन कुटिया के पीछे वह फूलों के हार पिरो पिरो कर कुछ गुनगुनाये जा रही थी। सहसा भीतर से मां ने कराहते हुए पुकारा, 'शशि! ज़रा इधर आना' शशि ने झोली के फूल डाल दिए और भाग कर मां के पास चली आई। मां ने मस्तक का चुम्बन लेते हुए धीरे से उसे गोद में ले लिया तथा धीरे धीरे कहना आरम्भ किया—'बेटी तुम नहीं जानती, बच्ची हो अभी! मैं अन्तिम तूफान के निकट हूं, देखो, उस ओर—मुझे, पहाड़ी के उस पार कोई बुला रहा है। पर तुम अनजान सी प्रकृति के आंचल में अकेली बिल्कुल अकेली क्या करोगी? तुम्हारे नन्हे २ पांव भीषण झाड़ियों में फंस कर रह जाएंगे। आह! मां की बूढ़ी गालों पर दो आंसू चमक पड़े। शशि ने मां के दृगों पर प्रथम बार अश्रु देखे, वह अधीर हो उठी, बस माँ से लिपट गई। सामने वाले वृक्ष के नीचे भी एक हिरणि अपने बच्चे को सूंघ रही थी परन्तु उसकी आंखों में भी कुछ चमक रहा था—शायद आंसू!

शशि खोई २ सी रहने लगी मानो उसकी कुटिया रूठ चली हो! बचपन की अंगड़ाई तथा प्रकृति सोने जा रही हों, शायद मां की ममतामयी गोद भी उसे एकान्त घाटी में छोड़ कर 'पहाड़ी के उस पार, जाने का बहाना खोज रही हो। उसके साथ जो फूलों की पंखड़ियां जागृत हुई थीं वह कुम्हला चलीं, उसके पुष्पों की मालाएं भी मौन-शुष्क चीख रही थीं। एक-ढेर के रूप में शशि यदि कभी सरिता के तट पर आत्म विभोर सी पांव तरंगों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालती तो मानो जल से उठते। वह कहीं शान्ति न पा सकी।'मां,मां,' का शब्द ही हर वृक्ष की अंगड़ाई से, पुष्पों की मुस्कान तथा पहाड़ की हर कंदरा से फूट २ कर निकला करता। वह दिन-प्रति दिन उमड़ती आवाज को सहन न कर सकी तथा एक दिन शिलाओं से गिरती हुई तट पर के जल में गिर पड़ी।

'उठो देवो, मूक क्यों हो ?' शशि कांप रही थी, खुली वेणी पर भोला मुंह बादलों में शशि की आभा सा दिखता था। उसने धीरे २ बचपन की घाटी पार तो कर ही ली थी— शायद तभी ही भोलेसे मुख पर थकान की बूंदें थीं। "उठो न" किसी ने पुकारा! शशि ने अपनी पलकें खोल दीं। आश्चर्य से उसके अधरों से एक चीख निकल गई। उसने भयभीत हो कर अपना मुंह ढांप लिया। आगन्तुक ने कहा—"डरती क्यों हो उठो हम खेलें, देखो मेरे पास बांसुरी है। अरे उठो भी मैं भी तो तुम्हारी ही भांति मानव हूं। नवयुवक ने धीरे से उसे उठा दिया। शशि ने देखा— उसके मस्तक पर घुघंराले बाल अठखेलियां कर रहे थे तथा मुख पर विचित्र प्रकार का हास्य नृत्य कर रहा था। शशि सचेत सी हो गई— उसका भय खुशी में बदल गया। उसने बिखरी वेणी समेटी तथा भीगे वस्त्र निचोड़े फिर अपने साथी का हाथ पकड़ कर उसे ऊपर ले गई। अपनी कुटिया की ओर। मां ने शशि को बंसी वाले के साथ आते देखा—वह मुस्कुरा दी। उसने मुग्ध दृष्टि से देखा। शशि ने पुकार कर कहा—'मां! देखो मेरा साथी।'

'हूं', अब मैं शान्ति से मर सकूंगी। जाओ शशि! देखो प्रकृति भी तुम्हें विदा देने से पूर्व हृदय पर शिला धरे बैठी है।' बंसी वाले ने सिर झुका दिया। मां ने दोनों को शुभ कामनाओं के कुछ पुष्प उपहार में दिये।

गीत

(श्री 'सरोज' एम० ए०)

यह क्या धुंवा धुंवा सा छाया रहता
हर दम आगे पीछे ?
वीरानी गलियों से लेकर गंगा तट तक
अमराई, ऊंचे टीले मन जाता है एक
प्रातः सायं रोज़ देखता यही धुंवा मैं
इतना भी क्या, अब तक अपना नहीं हुआ मैं,
आगे चलता हूं लेकिन कोई पीछे को
रह रह जैसे मुझ को खींचे। यह०
अपने से बाहर आने पर खोया खोया
मैं लगता हूं, मानो विश्व दूध का धोया
एक अकिंचन की परवशता सांझ सकारे
बरसाती जाती है भू पर दृग जल खारे,
यह एकाकी जीवन, यह परवश बेबस मन
अपना सूखा हिय तल सींचे। यह०
अपना सीना ऊंचा करके, शीश उठाए
नयनों के आगे विभ्रम का जाल बिछाए
कुछ अपने को बहुत लगाते, धूल झोंक कर
जग की आंखों में, बनते हैं परम पूज्यवर,
मैं आदर्शों के पीछे मिटता रहता हूं
कांटे मेरे ऊपर नीचे। यह०

बंसी वाला शशि को लेकर चला, धीरे धीरे पहाड़ी के उस पार। प्रकृति रो पड़ी नन्हें २ नालों के रूप में अश्रु ढुलक पड़े। जीवन पथ को मापते हुए दोनों दूर जा रहे थे! हरित वृक्ष झनझना कर चीख पड़े। पक्षियों की आवाज़ में 'शशि, शशि!' का शब्द ही सुनाई देता था। शशि को जीवन साथी मिल गया लेकिन प्रकृति एकाकी थी, एक दम अकेली। चन्द्र की किरणें सिमट कर झोंपड़ी पर पड़ीं लेकिन वह चीख रही थी। कुटिया में दो आंखें कहीं दूर लगी थीं—बहुत दूर पहाड़ी के उस पार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ० १५ का शेष)

यदि हम यूं करते रहे, तो कब जागेंगे भाग ।२८।

शिक्षा

स्वावलम्बी नर को करे शिक्षा पूर्ण वही ।
उद्यमहीन विधायिनी शिक्षा वाच्य नहीं ।२९।
हस्तोद्यम के साथ ही शिक्षा का आरम्भ ।
यदि होवें तो हिन्द के छात्र बनें स्वालम्ब ।३०।
अंग्रेजी सरकार की शिक्षा नीति नैव ।
अनुकूल है त्याग दो भारत जन अतएव ।३१।
बुनियादी तालीम की नव पद्धति ऐ हिन्द ।
बापू की आविष्कृता स्वीकृत कर स्वच्छन्द ।३२।
अंतिम डिग्री तक जहां आवश्यक उपयोग ।
हाथ पांव का है, तथा अनिवार्य उद्योग ।३३।
सारी शिक्षा प्रान्त की भाषा में दी जाए ।
लेकिन जमने पाए ना प्रान्तीयता-भाव ।३४।
सम्प्रदाय के भूत की यहां न होवे भांति ।
नैतिक शिक्षा पद्धति की होवे यह रीति ।३५।
बच्चे बूढ़े मर्द औ' औरत लें तालीम ।
घर घर में फिर हिन्द के फैले यह तालीम ।३६।
भारत के हर प्रान्त के लाखों करोड़ों छात्र ।
बुनियादी तालीम से बनें योग्यता पात्र ।३७।
भाषा भारत व्यापिनी सीखेंगे खुद वे ।
सारे भारत नागरिक मिटे भेद का मैं ।३८।
बुनियादी तालीम यह राष्ट्र स्थिति अनुसार ।
देंगे विद्यापीठ जो कर भारत उपकार ।३९।
देंगे भारत उन्नति में वे पूरा योग ।
नहीं तो होंगे, वर्धक बेकारी का रोग ।४०।
सोद्योग शिक्षा यदि तकली चर्खा संग ।
पाएं भारत छात्रगण हों बेकारी भग ४१।
खादी का उद्योग ही यदि हम लें अपना ।
तो स्वराज्य का बापू के हो सच्चा सुपना ।४२।

गांधीवाद

यदि चाह है देश में बढ़े सुखद समृद्धि ।
तो बापू के मार्ग पर चल जनता सीधी ।४३।
नाना वाद-विवाद में मत फँस भारत देश ।
गांधीवाद तेरे लिये है जीवन सन्देश ।४४।
चल कर बापू मार्ग पर जगद् गुरु पद पाय ।
सोने की चिड़िया पुनर भारत तू बन जाय ।४५।
होगी सारे विश्व में भारत तेरी धाक ।
गांधी मार्ग आरूढ़ तू रहा यदि निर्दोष ।४६।
गांधी सदृश सपूत से भारत ! तेरा नाम ।
अखिल विश्व में पा रहा आज अग्रणी धाम ।४७।
समझ जगे उस ही दिवस भारत ! तेरा भाग ।
हुआ बापू का जन्म जब तब भू पर अभिराम ।४८।
टूट चुकी थीं बेड़ियां तेरी उस दिन आप ।
जिस दिन जन्मा गांधी सा, महापुरुष निर्दोष ।४९।
श्री कृष्ण के जन्म पर यथा देवकी बंध ।
टूटे, बापू से तथा भारत मां के बंध ।५०।
आदर्शों में बापू के यदि तुम हो श्रद्धालु ।
अपने जीवन में उन्हें पूर्णतया तुम पालो ।५१।
व्यष्टि और समष्टि में करें खूब परचार ।
सिद्धांतों का बापू के तो हो बेड़ा पार ।५२।
गांधीवाद में जनरुचि को जाग्रत करणार्थ ।
सेवा करियेगा स्वयं इर्द गिर्द निस्स्वार्थ ।५३।
घर में और पड़ौस में खूब स्वच्छता होय ।
मदद गरीबों की तथा रुग्ण प्रचर्या होय ।५४।
खादी का उपयोग औ' देश व्यापी विस्तार ।
इस रीति से हम करें गांधीवाद परचार ।५५।
स्वावलम्बी रचनात्मक कार्यक्रमों पर जोर ।
देते थे बापू सदा, करो हिन्द जन गौर ।५६।
गांधीवाद से भटक कर यदि हम चले कुपथ ।
विश्व नष्ट हो जाएगा, है यह कटु पर तथ्य ।५७।
विश्व समस्याओं का हल गांधीवाद के मध्य ।
खोजें तो पाजाएं हम, स्वतः सरल, मतिगम्य ।५८।
प्रभुता के मद में यदि त्यागा गान्धी मार्ग ।
हमने, तो फिर भटक कर पा न सकेंगे मार्ग ।५९।
गांधीवाद की रोशनी में कर लें यदि काम ।
तो पाएंगे कृत्य का हम सुन्दर परिणाम ।६०।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र० आपकी राय में क्या 'नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जीवत हैं ?

—सुशील कुमार १०वीं कक्षा भिवानी।

उ० वह मर कर अमर हो गये हैं। दी०

प्र० रूस और अमेरिका के स्कूल कैसे और वहां की पढ़ाई क्या हमारे जैसी ? सुनीति अमृतसर।

उ० हम ने न तो अमेरिका का कोई स्कूल देखा है और न रूस का, हाँ इसी अंक में पृष्ठ ८ पर एक रूसी स्कूल का विवरण छपा है। इस लेख सम्बन्धी चित्र टाईटल पेजों पर छपे हैं। किसी आगामी अंक में हम किसी अमेरिकन स्कूल का भी विवरण छापेंगे। दी०

प्र० क्या रूस और चीन में कोई ऐसी रेलगाड़ी है जिसे बच्चे ही चलाते हैं और उसके यात्री भी बच्चे ही हैं ?

—प्रकाश गुप्ता मेरठ

उ० चीन के विषय में तो हमें ज्ञात नहीं, हाँ रूस की राजधानी मास्को में एक बच्चों की रेल गाड़ी अवश्य है जिसके ड्राईवर, गार्ड, यात्री आदि सब बच्चे ही हैं। इस रेल गाड़ी का चित्र हम पिछले अंक के मुख्य पृष्ठ पर छाप चुके हैं। दी०

उ० हम इस वर्ष गर्मी की छुट्टियों में काश्मीर जा रहे हैं, कहिये अपके लिए वहां क्या भेजूं ? सेव, बादाम, अखरोट या कुछ और ? —मोहिनी, गुरुदासपुर

उ० हमें बहुत प्रसन्नता है कि तुम काश्मीर जा रही हो। वहां से बचों की जानकारी के लिये अपनी यात्रा का पूरा विवरण भेजनाता कि उन्हें भी तुम्हें प्राप्त होने वाले आनन्द में से थोड़ा हिस्सा मिल सके। हमें सिवाय तुम्हारी प्रसन्नता के और कुछ नहीं चाहिए। दी०

प्र० अगर हमें भूख न लगा करती तो क्या होता ? कुन्दन लाल देहली।

उ० तब हम जड़ होते चेतन नहीं। दी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

★ पत्नी लिखित पत्र ★

(श्री कृष्ण कुमार कथूरिया गुड़गाँव)

कल्यंत तथा कमलिनी बचपन में एक दूसरे के समीप रहा करते थे। सदा इकट्ठे खेला कूदा करते थे। तभी से उन में स्नेह की अभिवृद्धि होती गई। और यह ऐसी अवस्था तक पहुंच गई कि उन के माता पिता ने इन का परस्पर विवाह भी निश्चित कर दिया।

उस समय की रीति के अनुसार एक विशेष स्थान पर एक उत्सव मनाया जाता था जिसमें केवल युवक और युवतियां सम्मिलित होती थीं।

उन दोनों ने भी इस उत्सव में भाग लिया। सब नर नारियां अपने सुन्दर २ आभूषणों से सुसज्जित थीं। अपनी रक्षा के हेतु प्रत्येक पुरुष अपने संग कुछ न कुछ शस्त्र लाया हुआ था।

किसी प्रकार के संघर्ष की सम्भावना को दूर करने के लिये यहां के अध्यक्ष ने उचित समझ कर प्रत्येक से शस्त्र ले कर अपने पास एकत्रित कर लिए।

इस उत्सव में बहुत सी रमणियों ने भाग लिया। इसी बीच में कल्यन्त की दृष्टि एक सुन्दर एवं सजीव युवती पर पड़ी। उसको देखते ही वह उस पर आसक्त हो गया। वह उस रमणी के सौंदर्य की ओर खिंच गया था कि कमलिनी ईर्ष्या में उस रमणी से झगड़ने पर उतारु हो गई। कमलिनी का जीवन अब निस्सार हो गया था। यह जानते हुए भी कल्यंत अपनी धुन से न फिरा।

कुछ दिन पश्चात एक रात्रि को ज्ञात हुआ कि कमलिनी उस स्थान से भाग गई है। अन्वेषणक्रिया आरम्भ हो गई परन्तु कहीं भी उसका कोई चिह्न प्राप्त न हुआ।

दूसरे दिन सदूर किसी एक वृक्ष के नीचे उसका मृतक शरीर पड़ा हुआ मिला। उसको गोली लगी हुई थी तथा उसके समीप एक पिस्तौल—जो कि कल्यन्त का था, पड़ा हुआ था।

उस से पूर्व की स्थिति लोगों के सम्मुख स्पष्ट हो गई और इससे उनको सन्देह हुआ कि उसको मारने वाला कल्यन्त के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

अब वे दोनों वंश एक दूसरे के घोर शत्रु हो गये। कल्यंत का पिता अपने पुत्र को बचाने के लिये गाँव के मुखिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास गया। वह कल्यन्त की निर्दोषता से सहमत तो था परन्तु उसे कल्यन्त का भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होता था। कारण यह कि गाँव के बहुत से लोग उसके विरुद्ध हो चुके थे।

मुखिया ने उसके निर्दोष होने का निर्णय देने में अपने को असमर्थ समझा। उसके पास कोई ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था जिससे वह प्रत्यक्ष साक्षी का खण्डन कर देता। अन्त में उस ने अनुभव किया कि ईश्वर के अतिरिक्त और कोई भी सही मार्ग नहीं दर्शा सकता।

एक दिन मुखिया ने अपने एक विद्वान मित्र को एक पत्र लिये हुए देखा तो उस से पूछा—'यह कैसा पत्र है ?'

'पक्षी द्वारा लिखा हुआ पत्र' उस ने उत्तर दिया। 'प्रतीत होता है कि तुमने पी रखी है। कभी पक्षी भी पत्र लिख सकते हैं ?'

'नहीं, मैं सत्य ही कह रहा हूं'। यह पक्षी ही ने तो लिखा है। मैं ने इस पत्र को चील के घोंसले से पाया है।'

'दिखाना ज़रा।'

मुखिया ने इसको देखा और देखते ही उसकी आखें खुल गईं। वह पत्र मध्य में थोड़ा फटा हुआ था। तो भी उसने सुगमता से उसे पढ़ा। लिखा था—

'प्रिय कल्यन्त! आप जानते हैं कि मुझे आप से बड़ा स्नेह है। मुझे विश्वास था कि तुम भी मुझ से इतना ही प्रेम करते हो। परन्तु गत रात्रि से यह प्रत्यक्ष हो गया है कि वह सुन्दरी, जो तुम्हारे मन में बस गई है, ही केवल मात्र आप की जीवन संगिनी बनने के योग्य है। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मेरा जीवन अब नीरस एवं व्यर्थ है अतः इस से छुटकारा पाने का यही एक सुगम मार्ग है।' केवल आपकी ही कमलिनी।

यह पत्र कमलिनी का लिखा हुआ था, ऐसी बात अब गांव में प्रसिद्ध हो गई थी। उन लोगों ने, जिन्हों ने कमलिनी के शव को पाया था, बताया कि उसके वक्षःस्थल पर एक स्वर्णपिन लगा हुआ था और उसके साथ कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा था।

उस मनुष्य ने यह स्वीकार करवा लिया कि यह पत्र वास्तव में पक्षियों द्वारा ही लिखा हुआ था। मुखिया ने निर्णय देते समय अपने कथन की पुष्टि करते हुए यह कहा कि आत्महत्या से पूर्व कमलिनी ने पत्र लिख कर अपने वक्षःस्थल पर पिन द्वारा लगाया होगा। फिर चील ने अपने स्वभावानुसार झपटा मार कर उस पत्र को उड़ा लिया होगा या इसके फलस्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंडहर कहते हैं युवकों से

(ले०श्री राधे लाल कपूर, जयपुर)

खंडहर कहते हैं युवकों से,
परिवर्तन देखे हैं मैं ने,
ज्वाला भी मैं ने देखी है,
मैं ने कितनों को चढ़ते भी
देखा है अपने जीवन में,
वे दिन भी हैं याद मुझे
मुगलों के अब तक,
प्यालों पर प्याले चलते थे,
साकी के कोमल हाथों से;
नृत्य, गान संगीत सभी कुछ होता,
संगीतों की ध्वनि से गूंज
रहे हैं ये मेरे स्वर,
कितनी धूपें कितनी रातें
मैंने जीवन में देखी हैं,
सन सत्तावन आज मुझे वह
वह पिछली याद दिलाता है,
कितना खुश था जब जनता
के खून बहे थे सत्तावन में,
आज़ादी के उस पथ पर,
लाशें ही लाशें थीं पथ पर,
मुझे गर्व था लक्ष्मी पर,
नाना पर, तांता टोपी पर,
बूढ़े मुग़ल बहादुर पर,
हिन्दू और मुसलमानों पर,
युवकों पर नेताओं पर, राजाओं पर,

आया परिवर्तन फिर जग में,
लहराया फिर मेरे सर पर,
वह झंडा रंग विरंगा,
वह चिह्न गुलामी का मेरी,
मेरी ही छाती पर तो था,
दिन बीत गये रोते रोते
वह ठाठ देख विदेशी के,
सोये थे नहीं मेरे युवक,
वे मर मिटने को फिर तत्पर,
थे आज़ादी के ही पथ पर,
बाता एक युग कोलाहल में,
लो आया राज्य अपना देखो
पूछो तो इन नेताओं से,
कहते हैं हमने राज्य लिया है,
बिना खून के अंग्रेज़ों से,
पर पूछो तो जनता मुझ से,
मैं ने तो अपने नयनों से,
वे दिन स्वराज्य के देखे हैं,
अपने ही राज्य के देखे हैं,
खूनों की नदियां देखी हैं,
मानव को मानवता से गिरते
देखा आज़ादी में,
इस बिना खून की आजादी में,

कागज़ का कुछ टुकड़ा पिन के संग रह गया।
इस प्रकार पची लिखित पत्र से
निर्णालय में एक मनुष्य का जीवन बच गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

★ अभिलाषा ★

(ले०—कु० पुष्पा ठुकराल, सैकण्ड ईयर जालन्धर)

बाल्य-सुलभ प्रेम कितना पवित्र होता है और चंचलता कितना मनोमुग्धकारिणी हुआ करती है। इस प्रकार के प्रेम की पवित्रता भी जीवन के पथ में भयंकर तूफ़ान लाकर ऐसी अनोखी हलचल मचा देती है, जिस के परिणाम सोचने का प्रणयी जन कभी प्रयत्न नहीं करते और यह दशा उसी आरम्भिक चंचलता तथा निश्छल प्रेम के कारण होती है। इसी प्रकार की चंचलता में आज राजीव तेज़ी से चलता हुआ चन्दा के घर की ओर भाग रहा है।

आज राजीव "पांचवीं" कथा में उत्तीर्ण हो कर पहले दिन छठी में बैठने जा रहा था। मां ने आज उसे नया सूट पहनाया था और वह सूट दिखाने के लिये ही चन्दा के घर शीघ्रता से जा रहा था। परन्तु उसके

(शेष पृष्ठ २६ पर)

बच्चों की लाशें देखी हैं
लाशों पर लाशें देखी हैं
कूड़े के उन ढेरों पर,
माताओं बहनों के गौरव को
लुटते देखा है,
एक एक दाने पर मैं ने
आज़ादी के बाद अरे
और जिसे यह कहते कल्पना
स्वप्न मूर्ख का
बना वही सरकार बनी
साकार कल्पना,
और इसे जीवन कहते हैं
जहां न रोटी कपड़ा तन को
रक्षक जहां बने भक्षक हैं
रिश्वत ले ले मोटी मोटी
अब भी कुर्सी पर बैठे हैं

अब भी क्यों भूखों मरते हैं
अब भी क्यों नंगे सोते हैं
लाल मेरे अब भी पटरी पर
गरमी सर्दी में सोते हैं
मैं खंडहर हूं, मुझ में इतना
बल है, तेरा साथ निभाऊं,
ऐसी तू सरकार बदल दे
युवक ! ऐसा राज्य पलट दे
बढ़ आगे को कर कुछ हिम्मत
परिवर्तन ला दे भारत में
ऊंच नीच का भेद न हो
समता हो मानव जीवन हो
रोटी हो कपड़ा तन को हो,
सोचें सभी निर्माण देश का
ऐसा तू स्वराज्य बना दे
युवक ! ऐसा राज्य बना दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-चित्र !

पाषाण की लीला

(ले० – श्री यशपाल गोयल, बी. ए. सहारनपुर)

हां, वह असभ्य थी, पूर्णतया असभ्य। दिन में इधर उधर पागलों की भांति घूमना, उदर पूर्ति के लिए किसी के द्वार पर निर्भर रहना, रात्रि को किसी गली अथवा फुटपाथ पर पड़े रहना, यही थी उसकी दिन चर्या।

पतझड़ की तपती हुई लू, वर्षा की भयंकर झांझा, शिशिर की कड़कती शीतल पवन उसको तनिक भी विचलित न कर पाती।

शैशव काल बीत गया हंसता, खेलता, थिरकता, खिलखिलाता और फिर आया यौवन काल का रंगीला चित्र; वह वधु बन गई। अपने पी के घर किस बात का अभाव था, पति का प्रेम, सास सुसर का आदर धन, मान, प्रेम सब कुछ न्यौछावर था उसके चरणों पर।

और यह जीवन की विषाद घटना, पति कार की झपट में आ मर गये। अज्ञात पथ के पथिक, मांग का सिंदूर पुछ गया। टूट गईं चूड़ियां और मिल गई उपाधि विधवा की। बदल गया सब कुछ, लांछनों की वर्षा होने लगी, 'दो वर्ष भी न रहने दिया मेरे लाल को, खा गई मेरे बेटे को।' सब निष्ठुर बन गये और एक दिन वह निकाल दी गई बाहर कूड़े की भांति।

और अब वह बन गई पागल। धीरे २ यौवन का रंगीला चित्र बदल गया वृद्धावस्था में, बसन्त के बाद पतझड़ आ गया, शरद अमा की गहरी भयानक रात्रि, शीतल वायु शरीर को तीर की भांति बेंध रही थी और वह शून्य निर्जन रात्रि की भयंकर नीरवता को चीरती हुई चली जा रही है जगत-आश्रय दाता-भगवान के मन्दिर की ओर शांति का वरदान मांगने के लिये।

अब वह मन्दिर में घुसने लगी, पर द्वार बन्द कर दिया गया। वह बैठ गई मन्दिर के बाहर और अट्टहास कर उठी, पाषाण हा! हा!! केवल पाषाण।

'तुमने शांतिसागर को विवेक दृष्टि से नहीं देखा ओ पगली!' पुजारी ने कहा।

'इन मन्दिरों में जहां असहायों का क्रन्दन गूंजता है, मानव शोणित से निर्मित इस मन्दिर में निवास करता है आप का शान्तिसागर? पगली कह रही थी।

'तुम्हें ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं है?'

'है! पर मन्दिर और उस में विराजा पाषाण मूर्ति पर नहीं।'

'तुम नास्तिक हो।'

'हो सकता है!'

उठ कर चलने लगी, कंठ सूख रहा था पुजारी से पानी मांगा 'यहां कोई पानी नहीं है, तुम्हारे जैसे नास्तिक के लिये।'

प्यास से गला जलता हुआ प्रतीत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे पढ़ाई में कमज़ोर क्यों होते हैं ?

(श्री मदन लाल अध्यापक जैन हाई स्कूल फिरोज़पुर)

प्यारे विद्यार्थियो ! मेरे अनुभव में यह बात आई है कि आज कल पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों की संख्या अधिक है । यदि कक्षा में पचास विद्यार्थी हैं तो उन में से पच्चीस लड़के पढ़ाई में कमजोर पाये जाते हैं। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि अधिकतर लड़के कमज़ोर क्यों होते हैं ?

(1)कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या का अधिक होना। हाई स्कूलों में प्रायः एक सैक्शन में ५५,६० लड़के होते हैं जो अधिक हैं। शिक्षा विभाग के नियम के अनुसार अधिक से अधिक एक कक्षा में ४० या ४५ लड़के होने चाहिएं। इतनी संख्या को अध्यापक पूरे ध्यान से पढ़ा नहीं सकते । इतनी अधिक संख्या को सम्भालना अध्यापक के लिए असम्भव है । यदि लिखाई के काम की देख भाल की जाए तो पूरा घण्टा चाहिए। यदि पाठ अच्छी तरह सुना जाए तो भी अधिक समय लगता है इस लिए वे विद्यार्थी जो पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं रखते उन्हें काम से जी चुराने और श्रेणी से पीछे रहने का अवसर मिल जाता है। शिक्षा विभाग के अफसरों को चाहिए कि ऐसा नियम बनाएं कि किसी मंज़ूरशुदा स्कूल में किसी कक्षा में ४० लड़कों से अधिक न हों। इस तरह बच्चे अध्यापकों से अधिक लाभ उठा सकेंगे और पढ़ाई में कमज़ोर लड़के थोड़े होंगे ।

(2) घर का काम प्रति दिन न करना

हर विषय के बारे में अध्यापक घर का काम देता है । काम की अधिकता तथा विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने के कारण काम की अच्छी तरह पड़ताल नहीं होती जिससे बच्चों में काम करके न लाने की आदत पड़ जाती है । लगातार काम न करने से वे सुस्त, निकम्मे और कमज़ोर हो जाते हैं। इस लिये होमटास्क का प्रति दिन करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है ।

(3)घर पर पढ़ाई के लिये पूरा समय न निकालना

स्कूल में ६ घण्टे की पढ़ाई के अतिरिक्त प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम ४ घंटे घर पर पढ़ना चाहिए। एक टाईम टेबल बना लेना चाहिए और इसके अनुसार हर विषय को प्रति दिन पढ़ना चाहिये ।

☆

लड़खड़ाई और वहीं पर गिर पड़ी और शान्ति-वरदान पा गई । वह प्यासी थी पानी की और उसकी आत्मा मानव के प्रेम की मृत्यु के बाद भी उसका मुख मुस्कुरा रहा था। पाषाण लोला पर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ २३ का शेष)

घर पहुंच कर उसने देखा कि देरी होने के कारण वह पहलेही पाठ शाला जा चुकी थी। राजीव का उत्साह आधा रह गया। जैसे तैसे वह पाठशाला पहुंचा और वहां जाकर देखा चंदा रुआ सा मुंह बनाए बैठी है। उस ने चन्दा के पास जाकर उसकी उदासी का कारण पूछा तो चन्दा उस पर बरस पड़ी और स्कूल में उसके देर से पहुंचने के लिये दिल भरकर उसे कोसा। राजीव ने उस की झिड़कियों को चुप चाप सह तो लिया, पर श्रेणी में जाकर पढ़ न सका और चन्दा का उत्साह तो पहले ही नष्ट हो चुका था। छुट्टी के समय चन्दा ने अपने सखा से सन्धि की ठान ली और अपने घर ले जाने के लिये मिन्नत खुशामद करने लगी। राजीव भी ऊपरी मन से थोड़ा मान दिखाने के बाद उसके साथ चल पड़ा और घर जाकर उसकी माता जी के सामने एक लम्बा चौड़ा अभियोग उसके विरुद्ध रख दिया। माता बाल कलह के आनन्द में विभोर हो कर दोनों को जलपान करवाती हुई दूर की सोचने लगी 'क्या यह बाल—जोड़ी आयु भर के लिए प्रेम की डोरी से बन्धी नहीं रह सकती?' उसका मन बार बार कहने लगा, 'चन्दा और राजीव की जोड़ी बड़ी ही सुन्दर है। जैसे ही यह जोड़ी बाल्यावस्था से निकल कर युवावस्था में पैर धरेगी इसे जोड़े की सुन्दरता को चार चांद लग जायेंगे।' सायंकाल को उसने इस बात की चर्चा अपने पतिदेव से की। पतिदेव को, जोकि एक धनी मानी सेठ थे, यह बात अधिक नहीं जंची उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि पहले राजीव की शिक्षा तो पूरी हो लेने दो। मैं अपनी एक मात्र सन्तान को अनिश्चितता के गढ़े में नहीं फेंक सकता।

समय बीतते देर न लगी। चंदा और राजीव हाई स्कूल से निकल कर कालिज में पहुंचे। उनका बाल सुलभ स्नेह अब निशंकाता की सीमा लाँघ कर मर्यादा के भय से सिकुड़ा सिकुड़ा सा रहने लगा और चंदा की मां का चिरकाल से हृदय में उठा हुआ विचार निश्चय का रूप धारण करने लगा। जब राजीव ने सन्मान सहित बी० ए० की परीक्षा पास की तो चंदा की मां ने सेठ जी पर दबाव डाल कर दोनों की सगाई कर दी। चंदा को चारों ओर से बधाइयां मिलने लगीं और चन्दा आनन्द से झूमने लगी पर यह किसी को पता नहीं था कि उसका यह सुख क्षणिक है।

चंदा और राजीव एम० ए० भी न कर पाये थे कि इधर चन्दा की माँ बेटी को बहू के रूप में देखने की अपूर्ण इच्छा लेकर संसार से चल बसी और उधर राजीव के पिता का देहांत हो गया। चन्दा ने खोया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
111810

मातृस्नेह और राजीव घिर गया आर्थिक समस्याओं से । एम० ए० का परिणाम निकलने से पहले ही राजीव चल पड़ा बम्बई की ओर काम की खोज में जाने से पहले चंदा के हृदय की टोह लेने के लिए उसे मिला। चंदा राजीव के बम्बई जाने के समाचार से दहल उठी । पर उस ने निश्चय दिलवाया कि वह उसके आने तक प्रतीक्षा करेगी ।

मातृ विहीना चंदा राजीव के दूर जाने से और भी अनमनी रहने लगी उधर उसके पिता के हृदय में राजीव की ओर से ग्लानि बढ़ने लगी ।उन्हों ने सोचा, राजीव एक कलर्क से बढ़ कर और कुछ नहीं हो सकता और वह अपनी एक मात्र कन्या को कलर्क के पल्ले बांध कर सदा के लिए दुःख में नहीं छोड़ सकता। उन्हों ने चंदा का सम्बन्ध एक मिल के मालिक से करने की बात छेड़ दी व नहीं जानते थे कि उन के इस कार्य से चंदा के हृदय को कितनी ठेस पहुंचेगी । चंदा दिन रात शोक और दुःख में डूबी रहने लगी। उसे कुछ समझ नहीं आता था कि वह क्या करे वह आत्मघाती भावों का शिकार बनने लगी। रह रह कर उसके हृदय में विचार उठने लगे कि इस संसार में उसका जीवन सार्थक नहीं हो सकता । वह अपने बाल्यकाल के साथी और माता द्वारा निर्धारित व्यक्ति को पति के रूप में नहीं पा सकती। उसके दुःखों का अन्त आत्महत्या कर के ही हो सकता है । किन्तु उस क्षण ही उसका हृदय कह उठता आत्म हत्या का विचार करना जीवन की वास्तविकता से मुंह मोड़ना है । यह कोरी कायरता और निर्बलता का प्रदर्शन करना होगा । उसे इस संसार में जीना होगा और सब प्रकार से कष्टों को झेल कर अपने प्रेम को सार्थक बनाना होगा । उसकी आत्मा राजीव की हो चुकी है और वह राजीव की ही रहेगी। संसार की दृष्टि में यदि वह राजीव की पत्नी नहीं हो सकती तो प्रभु की दृष्टि में रहेगी। उस ने आयु पर्यन्त विवाह न करने की प्रतिज्ञा कर ली और पत्र लिख कर पिता को अपने निश्चय की सूचना दे दी ।'यदि आप धनाभाव के कारण राजीव को मेरे योग्य नहीं समझते तो मैं भी मानवता हीन धनवानों को अपने योग्य नहीं समझती ।'

किन्तु आह भाग्य ! इधर चन्दा तो राजीव के लिए अपने पिता की भावनाओं को ठुकरा रही थी और उधर राजीव धनवान बनने के लिए बम्बई के लखपति सेठ मदनमोहन की एक मात्र कन्या से विवाह रचाने की तैयारी कर रहा था। उसने बाल्य काल के स्नेह को भुला दिया था और यौवन के आरम्भ के प्रेम से उसकी आखें अन्धी हो गई थीं, धन लोलुपता से । इस लोलुपता ने उसे हृदय-हीन ही नहीं धृष्ट भी बना दिया

(शेष पृष्ठ ३० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैशाखी १३ अप्रैल

ऐ जलियाँवाले बाग !

(ले०—श्री शाँत शास्त्री 'शालिहास')

तू हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई का अमिट स्मारक है, तू कायर-'डायर' के फायर अपनी छाती पर झेल कर अब तक भी उन दागों को अपने सीने में छिपाये हमें प्रेरणा दे रहा है, प्रगति पथ में बढ़ने की । ऐ बाग! १६१६ की वैशाखी की वह रंगीन संध्या हर वैशाखी पर तुझे याद तो आती होगी, जबकि गोरे शासन ने अपनी काली करतूतों से तेरी लाली को मिटाने के लिए अपना ही मुंह काला कर लिया था ।

'रोलेट-एक्ट' का उपहार देकर, महायुद्ध के समय के किए वायदे भुला, समुद्र पार की सरकार ने जो अपनी बर्बरता प्रकट की, उसका पहला निशाना तू था। आज भी तेरे उस कूए' का सारा जल गोरों के काले दिल का प्रतीक बन हमें उन शहीदों की याद में दो आंसू टपकाने को विवश कर देता है, जो किसी बूढ़ी मां की बुढ़ापे की लकड़ी थे, किसी स्नेहमयी भगिनी के 'वीर' थे, किसी गुणवती पत्नी की मांग के सिंदूर थे, या नव बधू के लाल चूड़े की लाज थे । आज उन माताओं की खूनी गोदियां, बहिनों की आंखों से निकले दो बूंद आंसू और चिर सुहागिन (विधवाओं ?) के सूने हाथ और रूखे चेहरे तेरी ओर बरबस अपना ध्यान खींचने को विवश कर देते हैं। तू क्या कम है एक पवित्र शिवालय से ? तू क्या कम है एक महान तीर्थ से ? या तेरी शान क्या आज 'राजघाट' से घट कर है ? तू तो तीर्थ है पंजाब का, स्मारक है गोरों की काली करतूतों का । कायर-'डायर' के फायर से हुई निर्मम निरपराध-जनता की हत्या का उद्घोषक है तू ! और है तू खूनी संध्या को चुभने वाली याद !!

क्या तू रोता है आज के नेताओं पर आठ आठ आंसू । जो तेरी कुर्बानी के बल पर आज चमचमाती कारों में घूम २ कर जनता की सेवा कर रहे हैं या, लज्जित है सत्याग्रहियों के 'सत्ताग्रह' को देख कर, उस हत्याग्रह को, जो भाई ने भाई को कसाई समझ कर किया। ऐ जलियांवाले बाग! तेरी जलन क्या उन्हें फिर सत्य मार्ग न दिखलाएगी ? क्या आज की वैशाखी उन्हें फिर उस खूनी सांझकी याद न दिलाएगी ।

अवश्य ! अवश्य !! तेरा मूक संदेश उन्हें फिर अपने पथ पर ले आएगी । टूटे फूटे पंजाब को और ज्यादा टूट फूट से बचाएगी ।

बाग ! तू फिर बाग २ हो जा । वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ शरणार्थी ★

(ले०—श्री सरोज मुलतानी, पत्तोहीरासिंह)

मत पूछ ! क्यों आज उदास हुआ ।
यह पूछ मेरे अरमानों से
मिट्टी में मिले हैं दानों से
गुलशन भी हैं वीरानों से
जिन्हें क्रूर पांव ने कुचल दिया,
अस्तित्व गया सब नाश हुआ । मत पूछ०
मन सुमन लगा अब मुर्झाने,
लगा भाग्य-भानु भी सुस्ताने,
सब परिचित हुए हैं अनजाने,
इस जग में आश्रयहीन हूं मैं
यह आज मुझे विश्वास हुआ । मत पूछ०
भुजबल-पर चलना सीख रहा
शक्ति की मांग में भीख रहा
दुख अनवरत से हूं चीख रहा
अनुमान नहीं इस जीवन में
कितना मुझको है ह्रास हुआ । मत पूछ०
जो अब भी मांग के खाते हैं
पर हम पर रोब जमाते हैं
कुछ अनाप शनाप बक जाते हैं
सुन लेता हूं मैं अब सब की
जब परिस्थितियों का दास हुआ । मत पूछ०
कोई अन्त नहीं, अभी मँज़िल का
हुआ अन्त, तो जीवन और दिल का
अच्छा ! फिर भी भला हो कातिल का
जिसके कारण दुःख भोग रहे
अब देश विदेश निवास हुआ !
मत, पूछ ! क्यों आज उदास हुआ !!

पंजाब के निवासी तेरी क़ुर्बानी को व्यर्थ न जाने देंगे । एकता और मानवता के लक्ष्य को पाने के लिए वे फिर तुझ से प्रेरणा पायेंगे और तेरी शान को मान सम्मान के साथ ऊंचा उठाएंगे ।

आज वैशाखी के पवित्र पर्व पर उन शहीदों की याद में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए तुझे अपना सिर झुकाता हूं । ऐ जलियां वाले बाग़ ! तेरी छाती 'दीवारों) के अमिट निशान हमारी आज़ादी की लड़ाई के अमिट निशान रहें । और तुझ पर उड़ता हुआ निशान (ध्वज) हमारे मानवता और एकता के निशाने (लक्ष्य) का निशान (प्रतीक) हों ।

फातहा गोरे शहीदों पर जरा पढ़ दीजिए ।
एक तरीका है यही भूले हुओं की याद का ॥

सुरेन्द्र—(टैलीफोन पर) हलो, डाक्टर माथुर !

डाक्टर माथुर—हां; मैं बोल रहा हूं ।

सुरेन्द्र—डाक्टर सहेब मेरी पत्नी का आज जबाड़ा उतर गया है । वह बोल नहीं सकती । अगर हफ्ते दो हफ्ते में इस तरफ आने का मौका लगे तो कृपया उन्हें देख लीजियेगा ।

—जंगली चूहे २५ दिन में युवा हो जाते हैं । हर २१ दिन बाद एक जोड़ा दो से नौ बच्चे देता है ।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैलून की सैर

(कु० तारा रानी, सैकण्ड ईयर)

उस दिन बड़ा अच्छा मौसम होने के कारण हमने सोचा कि आज कहीं निकल पड़ें। हमने 'बैलून' जाने का कार्यक्रम बनाया। वहाँ हमने खूब मौज उड़ाई। पहली बार ही हम वहां गए थे, इस लिये बड़ा आनन्द रहा। चढ़ाइयों और उतराइयों को तय करके अंग चूर २ हो रहे थे। पैरों ने चलने से साफ जवाब दे दिया। हमने 'बस' पकड़ने का निश्चय किया। थोड़ी दूर जा कर पता लगाया कि कब और कहां आती है? हम चुपचाप जाकर निर्दिष्ट स्थान पर खड़े हो गये। वह जगह हमारे लिये उतनी ही अपरिचित थी जितना कि उत्तरी ध्रुव।

थोड़ी ही देर में पों-पों करती बस आ पहुंची। बात की बात में हम भी बस में बैठे हवा से बातें करने लगे। बस के लोगों का वार्तालाप गर्मा गर्मी से चल रहा था। कोई कोई कहता था मैं न स्वेटर इस लिए पहना है कि सबको पता रहे कि मैं पहाड़ से आ रहा हूं।' कोई कहता 'जाकर होटल में खाना खाना पड़ेगा।' हम सोच रहे थे कि ये लोग कैसी बेसिर पैर की बातें कर रहे हैं। बस उतराइयों पर लुढ़कती जा रही थी, हम सोचते थे कि यह कोई नया ही रास्ता है। किन्तु...हमारा घर तो चढ़ाई पर है। ऐं—कण्डक्टर पूछ रहा था 'बहिन जी, बनीखेत जाना है?' नहीं मैं ने कहा, 'हमने एजैन्सी जाना है।' 'अच्छा हिमाचल एजैन्सी?' वह बोला 'नहीं जी, नहीं, डलहौज़ी की एजैन्सी, मेरी सहेली कड़क उठी। इस वाक्य से पहले ही बस में एक ठहाका गूंज उठा। कण्डक्टर बोला यह बस तो पठानकोट जा रही है। हम हंसते २ उतर पड़े।

(पृष्ठ २७ का शेष)

और उसने चन्दा को अपने विवाह का निमन्त्रण पत्र तक भेज दिया। उस निमन्त्रण पत्र के साथ एक विशेष पत्र भी था जिस में चन्दा को बताया गया था कि उसकी ओर चन्दा का प्रेम वास्तविक प्रेम नहीं अपितु लम्बे समय तक साथ रहने से उत्पन्न हुआ लगाव मात्र है। वे आपस में मित्र रह सकते हैं पर प्रणयी नहीं। यह सब पढ़ कर चन्दा पर ऐसा कुठार पात हुआ कि उसे मूर्छा आ गई। होश आने पर उस ने अपने को सम्भाला और कहा कि यदि मैं ने महान त्याग के मार्ग पर पग रखा है तो अब पीछे नहीं हटूंगी। मैं ने राजीव से प्रेम किया है तो अपने को नहीं, अपितु उसे सुखी बनाने के लिये किया है। वह यदि नीली को पा कर सुखी है तो अपने को इसी में धन्य समझूंगी। यही मेरी अभिलाषा है और यही मेरा जीवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे पीहर चली गईं

[ले०—श्री शांत शास्त्री 'शालिहास']

वे चली गईं अपने 'पीहर'
साले साहिब की शादी में।
हमने भी समझा कुछ दिन तो,
अब लेंगे सांस आज़ादी में।
इस रोज रोज की झक झक से,
बच्चों व उनकी बम चख से।
पीछा-यूं अपने आप छुटा,
घर कोल्हू की सी चूं चक चक से।
कुछ दिन तो रहे मज़े भाई,
होटल 'तनूर' की खा खा कर।
लेकिन जब दस्त लगे तब तो,
समझा यूं जीना है दूभर।
सो, अपने आप पकाने की ली ठान,
अजी! मन में पक्की।
अब पीस रहा हूं पिस पिस कर,
घर, दफ्तर दोनों की चक्की।
दिन के साढ़े नौ से लेकर,
सायं के साढ़े पांच तलक।
रहता है पहरेदार बना,
ताला बेचारा एक सजग।
केवल सोने भर को सायं सूना,
'हर-होम' सम्भालता हूं।
और लैम्प जला कर गुम सुम सा,
इस्टोव पै दूध उबालता हूं।

फिर सो जाता हूं अरे! नहीं,
हो जाता हूं 'लेडाऊन' बस।
ठण्डे बिस्तर में पड़ा पड़ा,
ताका करता हूं मैं बेवस।
मनुहार अनेकों करता हूं,
निद्रा देवी को हाथ जोड़।
जाने क्यों आती पास नहीं,
जाती है मुझ से मुंह मोड़।
मोहल्ले की साली भाभी भी,
अब घर में आना छोड़ गई।
उनके पीछे से हाय! हाय!!
निद्रा भी तो मुंह मोड़ गई।
लेकिन कसूर अपना ही है,
रो कर कहना भी व्यर्थ अरे।
झट भेज दिया उनको तब तो,
करता हूं अब तो राम! हरे!!
जब वे थीं घर में मुश्किल से,
था खाट छोड़ता आठ बजे।
अब छोड़ बिस्तरा लैट्रिन से,
फारिग हो जाता सात बजे।
छः बजे अंगीठी सुलगाता;
छः बजे चाय पीने वाला।
था महालसी पूरा पेटू,
पड़ गया पका कर खुद खाना।
अब खुज ही खाट उठाता हूं,
और बिस्तर स्वयं बिछाता हूं।
झाड़ू ले, कर में सुबह सुबह,
कमरों में 'रौंद' लगाता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लेता ड्राई क्लीन कभी
मुंह, बालों पर कुछ तेल लगा।
खद्दर का कुर्ता पहन धवल,
तन का लेता हूं मैल छुपा।
न्हाता हूं कभी न न्हाता हूं,
पर खाना रोज़ पकाता हूं।
जी, पाक शास्त्र के नये नये,
सिद्धांत रोज़ सुलझाता हूं।
सब भूल गया हूं राग रंग,
जीवन में दिखता सार नहीं।
अब नमक तेल आटा लकड़ी के,
चक्कर में आराम नहीं।
अब समझा कि घर वालियां,
क्यों करवाती हिन्दू कोड पास ?
रे! बड़ा कठिन है यह धंधा,
संभलो ! मर्दो !! होवे न पास।
गफलत में रहे अगर सोते,
तो खोते ही रह जाओगे।
फिर पकी पकाई रोटी का,
आस्वाद न लेने पाओगे।
अच्छा है उनको खुश रखो,
जेवर देकर, कपड़े देकर।
रिश्वत का ज़माना है भाई,
अपनी उनको रखो खुश कर।
जब चला जायगा सांप तो फिर
क्या होगा लीक पीटने से।
कुछ कर लो टायम रहते हो,
फिर होगा क्या सिर पीटने से।
मैं भी तो उनको अभी आज,
लिख रहा पत्र हूँ त्वरा भरा।
जो आ गईं तब तो ठीक,
नहीं तो दूंगा 'वायर' हाय मरा।
हो गया जुकाम रुक गया काम,
जल्दी आओ संभाल करो।
मैके का तोड़ो मोह अजी,
'पिय' का भी तो कुछ ध्यान करो।

गृह-विज्ञान

—ऊनी बुने कपड़ों को बहुत गर्म पानी से कभी मत धोइये। निचोड़ना हानिकारक सिद्ध होता है, बल्कि हल्के हाथ से दबा कर पानी निकाल लें और किसी चारपाई या तख्त पर सफेद तौलिया बिछा कर उस पर सुखा डालिये। कपड़ा कभी नहीं सिकुड़ेगा।

—यदि किसी रेशमी या सूती कपड़े से रंग निकलने का डर हो तो धोने से पहले गुनगने पानी में चमच नमक डाल कर पांच सात मिनट के लिये उस कपड़े को भिगो रखिए तो रंग कम निकलेगा।

—रेशमी कपड़ों को धोने के बाद एक चमच सिरका डाले हुए पानी से निकाल लीजिए। कपड़ों में अधिक चमक आ जाएगी। —द्रौपदी देवी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझिये तो ?

१-कपड़े क्यों न टांगे
खड़ांऊं क्यों न पहनी
२-छोटा सा लाला
घर का रखवाला
३-अरुण उजाला छा जाता है
सूरज से पहले आता है
४-जिसको काटे उसको
है पूरा हत्यारा
उसको जेल न फाँसी होती
है सबको प्यारा

★

स्वास्थ्य सुधार

त्वचा के लिए सच्चा टानिक : ठण्डा पानी

गरम पानी से हर रोज नहाने से आप कमज़ोर हो जाएंगे। जाड़ों में गरम पानी से नहाने का लालच ज़रूर होता है, पर उससे लाभ के बदले हानि होती है। गरम पानी से नहाने से पहले गरमी लेकिन पीछे ठण्ड मालूम होती है, और ठण्डे पानी से नहाने से पहले ठण्ड लेकिन पीछे गरमी महसूस होती है। ठण्डा पानी खाल के लिए एक सच्चे टानिक का काम करता है। ठंडे पानी के शरीर पर पड़ते ही ऊपरी सतह का खून अन्दर चला जाता है। जिसकी प्रतिक्रिया यह होती है कि भीतर के सभी भागों से खून लौट कर ऊपरी सतह के खाली स्थानों को घेर लेता है। इससे गरमाहट छा जाती है और शरीर फुर्तीला हो जाता है। जो कमज़ोर है उसे ठंडे पानी से नहाना न चाहिये, लेकिन वह भी ठंडे पानी में सिर्फ इतना गरम पानी मिलाये कि उसकी ठंड तो निकल जाये पर वह गरम न हो। धीरे-धीरे ठंडे पानी से नहाने का अभ्यास डालना चाहिए।

—जानकी शरण

यह भी खूब रही !

एक महाशय एक दिन डाकखाने में खड़े हुए वहीं की कलम दवात से एक पत्र लिख रहे थे भीड़ अधिक थी। एक साहेब जो उनके पीछे खड़े हुए थे उनका पत्र पढ़ रहे थे। महाशय जी ने यह देख कर अपने पत्र में इस प्रकार लिखना शुरू किया—'मैं ज्यादा कुछ नहीं लिखना चाहता क्योंकि एक मोटा (बदसूरत आदमी) जिसकी नाक पर एक बड़ा सा मस्सा है मेरे पीछे खड़ा एक एक अक्षर पढ़ रहा है।'

इसको पढ़ कर पीछे खड़ा हुआ व्यक्ति बहुत क्रोधित हुआ और बोला—'आपको मालूम होना चाहिए कि मेरी नाक पर मस्सा नहीं तिल है।'

★

—झांसी के समीप खचोरे कोरी गांव की जय देवी ने एक विचित्र कन्या को जन्म दिया, वह स्वयं उठ कर बैठ जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुटकुले

(१) मास्टर... परिभाषा किसे कहते हैं।
एक लड़का... परियों की भाषा को कहते हैं।

(२) सोहन-(मोहन से) मोहन क्या तुम्हारे पास एक रुपये के टूटे हुए पैसे हैं।
मोहन- नहीं, टूटे हुए तो नहीं हैं लेकिन साबुत हैं।

(३) मास्टर-(लड़कों से) किसी भी जीव के मारने से बड़ा पाप लगता है।

एक लड़का ... मास्टर जी, आपको भी बड़ा पाप लगेगा।

(४) सोहनः— आज भाषण किसके सम्बन्ध में था ?
मोहनः— नींद के
सोहनः— तो उसका परिणाम क्या निकला
मोहन सारे श्रोतागण भाषण के दोरान में ही सो गए।

(५) एक जूते का दुकानदार — (दूसरे आदमी से) भई आजकल तो बिक्री नहीं होती।
दूसरा आदमी— बिक्री हो भी कैसे। तुम तो सब को जूते ही दिखाते हो।

६. प्रोफेसर—अगर कोई देवता तुम पर मेहरबान हो तो तुम, उस से क्या मांगोगे ?

जगदीश—दौलत।

प्रोफेसर—तुम तो लालची हो, यह भी कोई मांगने की चीज़ है।

जगदीश...अगर आप मेरी जगह हों तो क्या मांगेंगे ?

प्रोफेसर— अक्ल।

जगदीश...ठीक है, जिसके पास जिस चीज़ की कमी हो, वह वही मांगता है।

७. मोहन (सोहन से) आपके छोटे भाई के कितने दांत आये हैं ?

सोहन—दांत तो चार आये हैं मगर खूंटा एक ही आया है।

मोहन—कोई बात नहीं तुम्हारे बकरी तो एक ही है।

८. एक वकील साहेब ने अपने पुत्र को बैरिस्टरी का इम्तिहान पास कराया। इस लिये उसका लड़का बैरिस्टर कहलाने लगा। उसके पिता केवल वकील ही कहलाते थे। एक बार अदालत में एक पक्ष की तरफ से वकील साहेब और दूसरी पक्ष की तरफ से उनके बेटे बैरिस्टर साहेब थे। दोनों में बहस हुई लेकिन बहस में किसी कानूनी बात पर बैरिस्टर ने वकील से कहा—'कानून का आपको इतना ज्ञान नहीं हो सकता जितना कि मुझ को, क्योंकि मैं एक बैरिस्टर हूं और आप केवल वकील ही हैं।

इस पर वकील साहेब झिझक पड़े और बोले, तुम केवल बैरिस्टर ही हो लेकिन मैं बैरिस्टर का भी बाप हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल फार्मेसी देहली की

प्रसिद्ध औषधियाँ

गुरुकुल—चाय

चाय के जायके के साथ साथ खांसी, जुकाम कब्ज़ और गले की खारिश को भी लाभ पहुंचाती है। मूल्य 10 आने।

गुरुकुल पेन बाम

हर तरह के दर्दों में राम बाण है। गोला, वाई, चोट सूजन और निमोनिया में भी तुरन्त लाभ देती है। मूल्य 1 रु०।

गुरुकुल भीमसेनी नेत्र बिन्दु

आंखों की मामूली शिकायतों में टपकाने से शीघ्र आराम आता है। मूल्य 5 आने।

गुरुकुल च्यवनप्राश

इसके प्रयोग से ही च्यवन ऋषि वृद्ध से जवान हुए थे। आज ही मंगा कर ताकत का खज़ाना जमा कर लीजिये। मूल्य 7 रु० सेर, $3\frac{3}{4}$ रु० $\frac{1}{2}$ सेर, 2 रु० का एक पाव।

गुरुकुल भीमसेनी काजल

इसके प्रयोग से बच्चों की आंखें सदा सुरक्षित रहेंगी गोया उनका बीमा हो गया। मू० 5 आने।

गुरुकुल भीमसेनी मरहम

चिपकती आंखों के लिये रामबाण है। मूल्य 8 आने।

गुरुकुल फार्मेसी

चाँदनी चौक देहली नं० ६

★

कविता

कसक

(श्री—सरोज मुलतानी पत्तो हीरासिंह)

मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
उदभ्रान्त-स्वान्त में प्रीत लिए फिरता हूँ।
जिसके सुनते ही छलक उठें यह पलकें।
वह करुणामय संगीत लिए फिरता हूं।
मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
स्वप्नों में क्यों ?प्रयत्न करूंगा दर्शन।
दृढ़ निश्चय अशातीत लिए फिरता हूं।
मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
जो मेरे पथ के बन न सके अनुगामी।
उन्हें फिर भी मन का मीत लिए फिरताहूं
मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
क्या दिन थे ?कैसा समय था ? किन्तु अब तो
निज भाग्यों को विपरीत लिए फिरता हूं।
मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
विरहानल, मन के साथ उन्हें न झुलसे।
नयनों में दो कण शीत लिए फिरता हूं।
मैं हार में भी इक जीत लिए फिरता हूं।
उदभ्रान्त-स्वान्त में प्रीत लिए फिरता हूं॥

चुटकला—एक गंजा आदमी देहली के चान्दनी चौक में मोचीसे बूट पालिश करवाने लगा। इतफाक से मोची को कुछ देर लग गई। वह आदमी बोला—अबे चमार, पालिश करने में इतनी देर! — मोची— जनाब यहां कोई नाई तो है नहीं जो जल्दी से आपकी हजामत बना देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4	Daily Attendance Register	2/4
5.	Teachers' Attendance Reg.	1/12
6.	Examination Result "	1/ 2
7.	Pay Bill Register ...	1/12
8.	Library Issue Reg. ...	1/12
9.	Library Stock Register ...	1/12
10.	Class Lib. Issue Note Book	-/12
11.	Sports Issue Reg. ...	1/12
12.	Sports Stock Register ...	1/12
13.	Correspondence Register ...	1/12
14.	Admission and with drawal Reg. (*big size*) ...	2/-
15.	School Contingencies Reg.	1/12
16.	School Property Reg. ...	1/12
17.	Headmaster's Order Book	2/12
18.	Union Fund Register ...	2/12
19-20	Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23	School Discharge Certificate file	2/12
24-26	School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27.	Provincial Certificate forms per 100	2/12
28.	Log Book	2/12
29.	Statistical Register ...	2/12
30.	Cash Book	2/12
31.	Grant-in-aid forms per set	2/12
32.	Fee Account Register ...	2/12
33.	Fund Register	2/12
34.	Letters Despatched Reg.	1/12
35.	Letters Received "	1/12
36.	Stock Register	1/12

For other items write to **us.**

Note :- 50 % surchage will be charged on each item on *a/c* of rise in paper prices

Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना। (१) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज़ उठाना। (७) प्रगति शील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) 'प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहां से भेजा जाता है। कारणवश देर सवेर सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० अग्रिम नियत है। वी० पी० से ७॥) है। विदेशों में वी० पी० नहीं जाता। पेशगी १५ शि० भेजें।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥= के डाक टिकट भेजें।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जा चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हो और जिन के दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार हैं।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्को के किरोव जिले में लड़कों के माध्यमिक स्कूल नं० ५१८ में डाक्टर के कमरे का दृश्य। डा० क्लावदिया मेर्कुलोवा आठवीं श्रेणी के छात्र व्लादिमीर शिलोव के छात्र के रक्त चाप का माप कर रही हैं।

लड़कों के माध्यमिक स्कूल नं० ५१८ के छात्र स्कूली घण्टी के पश्चात शतरंज खेल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सोवियत स्कूल में

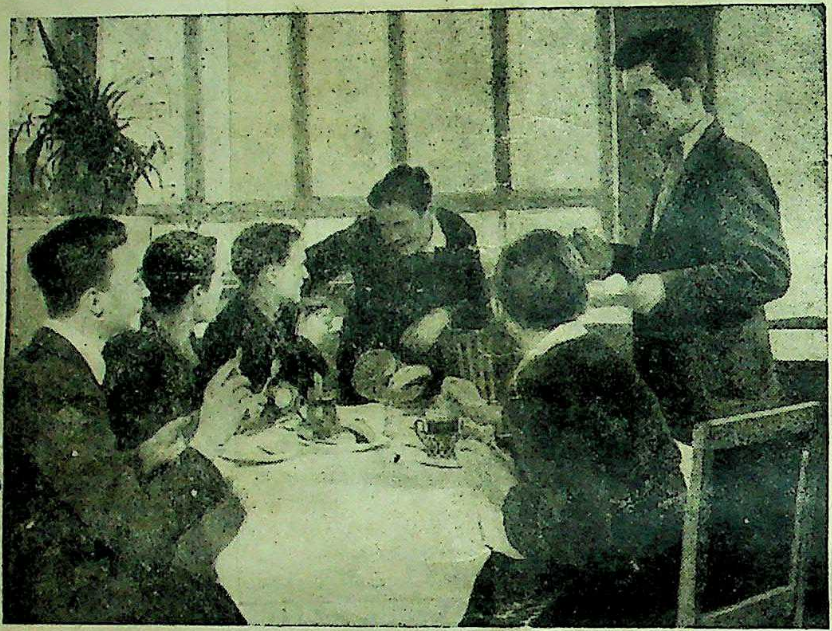

मास्को के किरोव ज़िला में माध्यमिक स्कूल नं० ५१८ के छात्र खाने की छुट्टी में स्कूल के भोजन भवन में दिखाई पड़ रहे हैं।

उसी स्कूल के डाइरैक्टर निकोलाई कास्पेरस्की बाल्देन समिति के सदस्यों से विचार विमर्श कर रहे हैं।

प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, १३७ चहारबाग, जालन्धर शहर में श्री एल० पी० हितैषी द्वारा सम्पादित मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Approved for use in School in Punjab, U P, Bihar Himachal, Pepsu, Bhopal & Hyderabad

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति ।।=)

★

७ सितम्बर

१९५४.

सम्पादक

हितैषी जलालपुरी

Approved for Court Notices in Punjab.

★

अमेरिका में भारतीय राजदूत

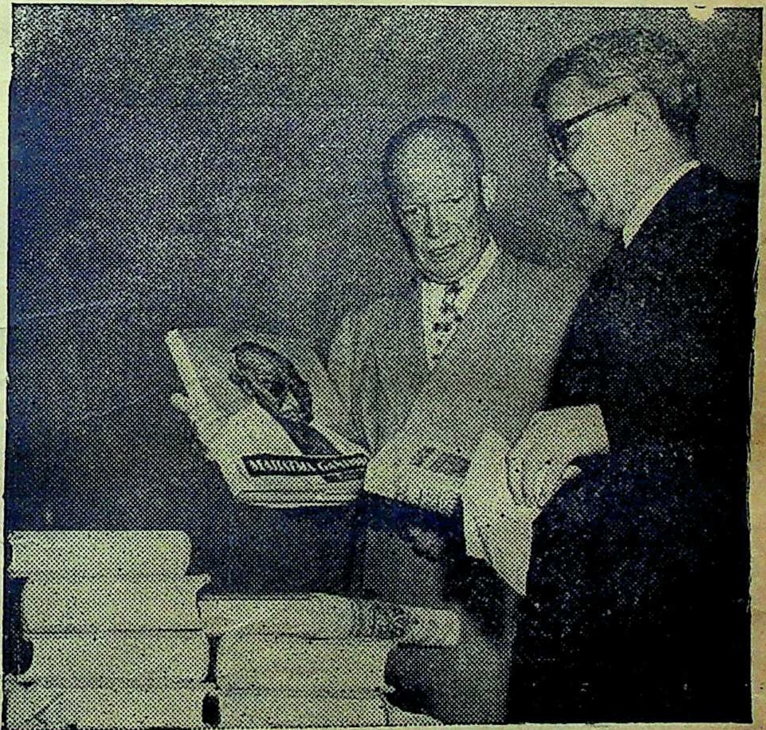

श्री जी० ऐल० महता ने अमेरिका के प्रधान मि० आईज़न हौवर को महात्मा गांधी की बृहद् जीवनी भेंट की (यह उसी अवसर का चित्र है।)

★

THE "Prakash"

Editor: L. C. Hitashi

JULLUNDUR CITY

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरतानिया की नौ आबादियों के नए मन्त्री मि० आलन लैन्नोक्स बौइड (४६) जिन्हें मि० आलिवर लिटलटन के स्थान पर नियुक्त किया गया है।

विंडसर ग्रेट पार्क (लण्डन) में हुए रायल शो में प्रिंस चार्लेस को यह खच्चर भेंट में दी गई। श्री मलिका एलिज़बैथ अपने पुत्र को खच्चर पर सवार देखते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं, उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल, पेप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिये स्वीकृत।

प्रकाश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८ क्रमांक ६१ | जालन्धर, ७, सितम्बर १९५४ | भाग ६ अंक ६ हिन्दी

इस अंक में

कविताएं		पृष्ठ
जन्म जन्म का परिचय ...	'तन्मय'	३
ज़िन्दगी का दिया ...	'विष्णु'	७
गीत	करुणेंद्र	१४
गीत का सागर	कु० 'मधु'	१७
वैदर्भी वन त्याग	'शालिहास'	१८
गीत	'नीलिमा'	२०
मेरे साथी	सरोज	२०
तारों के दीप	धर्मपाल	२४
ये बीबी के बाबू ...	'शालिहास'	२७
कौन रोता है गगन में	'प्रदीप'	३५
लेख		
शिक्षा में खिलौनों का महत्व ...	मानवती	७
कृषि में अणुशक्ति का प्रयोग		८
विवाह के पंजाबी लोक गीत		११
रूस में संस्कृत का अध्ययन		१५
रेडियो द्वारा बच्चों को शिक्षा		१६
हमारा पड़ोसी देश चीन		२२
मां बाप के व्यवहार का बच्चों पर प्रभाव		२३
प्रेरणा की प्रतीक्षा		३१
लकड़ी के बुरादे से नये उद्योग		३२
कहानियां		
गिरगिट	आन्तनचेखव	१२
बेचारा रिक्शा वाला	'सुरेन्द्र'	२८
नेपोलियन और अंग्रेज़ कैदी		३४

तथा स्थायी स्तम्भ

जन्म जन्म का परिचय

दुनिया से मेरी नई–नई पहचान हुए दो दिन ही,
पर, मरघट से तो जनम जनम का परिचय !

(१)

मेरे तन-मन की मिट्टी जब जग से थकी अघाई,
मरघट के पत्थर से उसने कर ली स्नेह-सगाई,
यहां द्वन्द का कोलाहल नित नूतन इस नगरी में !
पर मरघट की बस्ती जिसमें शांति एक सी पाई !
हलचल से मेरी नई नई पहचान, अधूरी वह भी,
निस्स्वरता से तो किंतु चिरंतन परिचय !
पर, मरघट से तो जनम जनम का परिचय !!

(२)

यहां ज़िंदगी गाती तो पर छन्दों के बन्धन में;
भाव तरस कर रह जाते हैं भाषा के क्रन्दन में
पर मरघट का गीत मुक्त जो देश काल सीमा से
सोता है संगीत न जिसका रागों के निर्जन में
लय-तालों का तो नया-नया अभ्यास, अधूरा वह भी
पर, मरण-रागिनी चिर गुंजित, चिर मधुमय !
पर मरघट से तो जनम जनम का परिचय !!

(३)

यहां रूप की होड़ प्रीति से, आंखें भर भर आतीं,
दिग विमूढ़ अंकुरित अनेकों प्रतिभाएं भर जातीं,
सपनों की लिपि पर सत्यम् की स्याही सदा बिखरती
कविता के अधरों पर लाजें उंगली धर धर जातीं !
जगरूप शिखा पर जलजाने का सुख तो नया २ ही
पर, चपल चिता का अनुभव नया न 'तन्मय' !
पर, मरघट से तो जनम जनम का परिचय !!

—'तन्मय' बुखारिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल और कांटे

(पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० पाकिस्तान को अमरीकी सैनिक सहायता अक्तूबर में पहुंच रही है—भारत ने क्या प्रबन्ध किया है ? -सोम प्रकाश, श्रीनगर।

उ० काश्मीर में पहले से सुरक्षा सम्बन्धी यथेष्ट प्रबन्ध है । आवश्यकता पड़ने पर और सेनाएं पहुंच सकती हैं । -सं०

प्र० आसाम, बिहार, पच्छमी बंगाल और उत्तर प्रदेश में बाढ़ से प्रति वर्ष भारी हानि होती है तब सरकार इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही कर इससे बचने के उपाय क्यों नहीं करती ? -महेन्द्र, लखनऊ।

उ० दैवी विपत्ति कब और किस रूप में कहां आजा-येगी-इस सम्बन्ध में कोई कुछ नहीं कह सकता। वर्षा के दिनों में नदियों में बाढ़ आ जाने से होने वाली हानि को सर्वथा रोक सकना संभवतः मानव सामर्थ्य से बाहिर है-तो भी सरकार कुछ न कुछ कर ही रही है और भविष्य में भी करेगी । -सं०

प्र० क्या सचमुच पंजाब में अमोनिमय सल्फेट और न्यूज़प्रिंट के कारखाने खुलने जा रहे हैं ?

-कुन्दन लाल, धर्मशाला।

उ० सुना तो हम ने भी है, पर यह बेल कब मंढे चढ़ती है देखना केवल यही है। -सं०

प्र० क्या लोक सभा में तलाक का बिल पास हो गया है ? -सुमित्रा शर्मा प्रयाग।

उ० लोक सभा में एक 'विशेष विवाह बिल' ज़ेर बहस है जिस में पति-पत्नी की इच्छा से सम्बन्ध विच्छेद की गुंजाइश रखी गई । यह बिल हिन्दू कोड बिल से सर्वथा भिन्न है। -सं०

प्र० क्या लाल चीन के फार्मोसा पर आक्रमण से तीसरा महान युद्ध न छिड़ जाएगा ?

-राम भरोसे, नागपुर।

उ० होनी को कौन टाल सकता है, तो भी तीसरे महान युद्ध को टालने का पूरा यत्न होगा ही । -सं०

सार-समार

—स्वतंत्रता दिवस सारे देश में धूम धाम से मनाया गया। कुछ स्थानों पर शरारती मुसलमानों ने पाकिस्तानी झंडे लहरा दिये जिस पर उन स्थानों में झगड़ा हो गया ।

—मथुरा में भ० कृष्ण की मूर्ति मुसलमानों द्वारा तोड़ दिये जाने पर फसाद हो गया।

—हिंदचीनी में हुई शांति के कमिशन के भारतीय प्रधानों की अध्यक्षता में डेलीगेशन वहां पहुंच गये हैं ।

—पुर्तगाली बस्ती गोआ में सत्याग्रह जारी है। ७ सितम्बर को पुर्तगाली बस्तियों में हालात की जांच के लिये कमिशन नियुक्त किये जाने के सुझाव पर विचारार्थ नई दिल्ली में पुर्तगाल और भारत के प्रतिनिधियों में बातचीत होगी।

—फ्रांस और भारत में फ्रांसीसी बस्तियों पांडीचेरी और कारिकाल को भारत में सम्मिलित करने के बारे में बातचीत हो रही है।

—अमेरिका से पाकिस्तान को सैनिक सहायता अक्तूबर में आनी आरम्भ हो जाएगी।

—पाकिस्तान सुरक्षा समिति में काश्मीर का मामला पुनः उठाएगा और संभव है रूस वीटो द्वारा उसे उठने न दे ।

—पूर्वी पाकिस्तान, आसाम, बिहार, पच्छमी बंगाल और उत्तर प्रदेश में बाढ़ से बड़ी हानि हुई है।

—२६ अगस्त को जालन्धर में बड़ा ट्रांस मिटर लग गया है ।

—तेहरान में २००० यात्री बाढ़ में डूब गये हैं।

—ईरान के प्रधान मन्त्री जाहिदी ने २५० पुलिस तथा फौजी अधिकारियों को सरकार के विरुद्ध षडयन्त्र के अपराध में कैद किया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बोली 'च

गुसलखाने 'च दफ्तर

देस दी वंड ने ओह कुझ वखाया ए जेहड़ा किसे कदी नहीं सी वेखिया। पीढ़ियां तों वसदे आ रहे घरां नूं लोक छडन ते मजबूर हो गये ते ओजिहे दुख झल्ले जिहड़े ओहनां ने सुफने 'च वी नहीं वेखे सन। सब तों दिलचस्प गल एह वे कि आदमियां नूं पसुआं दियां थावां 'च रहना पिया ते दुकानां घरां 'च बन गइयां। सरकारी दफ्तर इक थां ते न रह के कई नगरां 'च बिखर गए ते कई हालतां 'च दफ्तर दुकानां ते गोदामां 'च बनाने पये। साडे गवांड इक फर्म दा दफ्तर गुसलखाने 'च बनिया होया ए। दूर जान दी की लोड़ ए प्रकाश प्रेस तां पत्रिका दा दफ्तर वी घर दियां बैठकां 'च ही है।

गल असल 'च एह वे कि मुसीबत वेले इन्सान नूं थोड़ा जिहा सहारा वी बड़ा कम दिंदा ए। असां अपनी अखीं डिठा ए कि ओह रईस जेहड़े पलंग तों उठ के आपे पानी भी नहीं सन पी सकदे ओह हुन ढिड पालन लई नौकर बन के दूजियां नूं चाह-पानी पवांदे हन। एह है समय दा गेड़। एस गेड़ तों आदमी चाहवे तां बहुत कुझ सिख सकदा है पर आदमी ऐना मूर्ख ए कि अज तांईं ना ओस ने कुदरत दियां ठोकरां तों सिखिया ए ते ना ओस सिखना ई ए। ओह हुन वी झूठ, फरेब, धोखा ते वड्डी मुनाफेखोरी ते बेइन्साफी करन तों बाज़ नहीं आंवदा। जद ओह कुदरत तों ही कुझ सिखन नूं तियार नहीं तां मनुख ओस नूं की सिखा सकदा ए?

भाइया रेलू

सूचना

इस मास से 'प्रकाश' प्रति मास की ७ तारीख को पोस्ट किया जाया करेगा। कृपया ग्राहक नोट कर लें।

-मैनेजर

शिक्षा समाचार

—बम्बई राज्य के स्कूलों में लड़के लड़कियों को फाऊनटेन पैनों से लिखने की मनाही कर दी गई है।

—१ नवम्बर से पंजाब के स्कूलों में लड़कियों के लिये सफेद सूती शलवार, जैम्पर और चुन्नी और लड़कों के लिये खाकी कमीज़, निक्कर और टोपी (अथवा पगड़ी) की यूनिफार्म नियत कर दी गई है।

—पंजाब यूनिवर्सिटी ने १९५६ से एफ० ए० और १९५८ से बी० ए० के परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्रों के उत्तर हिन्दी में देने की सुविधा दे दी है।

—पंजाब सरकार और अधिक असिस्टेंट इंस्पैक्टर आव स्कूल्ज़ नियुक्त करेगी।

—अक्तूबर में चण्डीगढ में एक बेसिक ट्रेनिंग स्कूल खुल रहा है।

—हिमाचल सरकार ने १०वीं तक हरिजनों की फीस माफ कर दी है।

—कम्युनिटी प्राजैक्ट केन्द्रों में ३२५ नये प्राइमरी स्कूल खोले जायेंगे।

—ट्रावन कोर कोचीन में स्कूल जाने योग्य ७२ प्रतिशत बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं। हर १६०० व्यक्तियों के लिये एक स्कूल है। रियास्त में ५९१२ स्कूल हैं और इन में १९ लाख विद्यार्थी पढ़ रहे हैं।

—ज़िला भटिंडा में १५० और फीरोज़पुर में २३२ प्राइमरी स्कूल खोले जावेंगे।

—डी० बी० मिडल स्कूल घड़ाये, हलवाड़ा, और पेटवाड़ को हाई क्लासें खोलने की स्वीकृति दे दी गई है।

—पंजाब सरकार ने हैडमास्टरों के लिए विशेष ग्रेड नियत करने का निश्चय किया है। शीघ्र ही इस सम्बन्ध में विज्ञप्ति प्रकाशित होगी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

पंजाब यूनिवर्सिटी का इन्कार

कुछ समय से यह मांग की जा रही थी कि शास्त्रियों को भी अंग्रेज़ी के ग्रेजुएटों की तरह यूनिवर्सिटी के चुनावों में वोट देने का अधिकार दिया जाये, और यह मांग बदले हुए मौजूदा हालात में सर्वथा न्यायोचित थी किन्तु यूनिवर्सिटी सीनेट की बैठक में यह मांग अस्वीकृत हो गई और सुनने में आया है कि इसके लिये ज़िम्मेदार हैं वे अंग्रेज़ी के पुजारी जो हिन्दी के प्रेमी होने का दम भरते आये हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी का यह इन्कार लज्जास्पद है।

जागोगे तो पाओगे

यूनिवर्सिटी के इस इन्कार से हिन्दी संस्कृत के अध्यापकों की आखें खुल जानी चाहिएं। वे अब समझ गये होंगे कि उन्हें अपना अधिकार प्राप्त करने के लिये संगठित होना पड़ेगा। इतना हो चुकने पर जो मांग की जायेगी वह ठुकराई न जा सकेगी। अतः एक बार हम फिर हिन्दी संस्कृत अध्यापकों से कहते हैं 'जागोगे तो पाओगे'।

एक स्तुत्य सुविधा

पंजाब यूनिवर्सिटी सीनेट की गत बैठक में निश्चय किया गया है कि १९५६ से एफ० ए० और १९५८ से बी० ए० के परीक्षार्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिन्दी में देने की सुविधा देदी जाए। यह निर्णय स्तुत्य है।

विद्यार्थियों के लिये यूनिफार्म

स्टेट एजुकेशन एडवाइज़री बोर्ड ने जालन्धर में शिक्षा मन्त्री की अध्यक्षता में हुई गत मीटिंग में स्वीकृत स्कूलों में लड़कों के लिये खाकी निक्कर कमीज़ और टोपी (अथवा पगड़ी) और लड़कियों के लिये सूती सफेद जैम्पर, शलवार और चुन्नी की यूनिफार्म १ नवम्बर से, निश्चित कर दी है। अध्यापकों और अध्यापिकाओं को भी यह यूनिफार्म पहननी पड़ेगी।

कुछ अध्यापकों की ओर से उनके उपर लादी गई इस यूनिफार्म को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आक्रमण बताया गया है और मांग की गई है कि उन्हें यह यूनिफार्म पहनने पर बाधित न किया जाये। हम उनकी इस मांग से सहमत हैं और आशा करते हैं कि शिक्षा विभाग अध्यापकों पर से यूनिफार्म सम्बन्धी प्रतिबन्ध को वापिस ले लेगा।

शिक्षा मंत्रियों का सम्मेलन

गत दिनों केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री मौलाना आज़ाद की अध्यक्षता में राज्य शिक्षा मन्त्रियों की एक मीटिंग हुई जिसमें दूसरी ५ वर्षीय योजना में शिक्षा विषयक आवश्यकताओं के समावेशार्थ उनसे विमर्श किया गया। आशा करनी चाहिए कि दूसरी ५ वर्षीय योजना के कार्यान्वित होने पर जहां अध्यापकों के वेतनों का स्तर बहुत ऊंचा हो जाएगा वहां प्रचलित शिक्षा प्रणाली में समयोचित परिवर्तन भी कर दिये जायेंगे।

हिन्दी प्रचारार्थ

गत दिनों केन्द्र के शिक्षा मंत्री मौलाना आज़ाद की प्रधानता में राज्य शिक्षा मन्त्रियों की एक मीटिंग हुई थी जिसमें इस बात पर विचार किया गया था कि अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी के प्रचारार्थ विशेष प्रयत्न किया जाए। हमें नहीं मालूम कि इस सम्बन्ध में क्या क्या निश्चय हुआ था किन्तु हम अपने राज्य शिक्षा मन्त्री से मांग करते हैं कि वह अपने राज्य की जनता को बताएं कि पंजाब में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्थान पर आरूढ़ करने के लिये क्या क्या सुझाव दिये गए और उनको क्रियात्मक रूप देने के लिये क्या कुछ हो रहा है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा में खेल-खिलौनों का महत्व

(ले०—श्रीमती मानवती)

शिक्षा के सभी स्तरों में नई क्रियाओं, नये अनुभवों और नये विचारों की जानकारी के लिये खेल की आवश्यकता है। खेल से विद्यार्थी अनेक व्यक्तियों और उनके विचारों तथा अनुभवों के सम्पर्क में आते हैं और अपनी प्रतिभा को बहुमुखी बना सकते हैं। खिलौने से खेलता हुआ बच्चा जो क्रियायें करता है उनसे उसके स्वभाव को जाना जा सकता है। उन में से बहुत सी क्रियायें पारिवारिक तथा सामाजिक प्रचलन से सीखी हुई होती हैं, जैसे लड़कियां गुड़ियों से खेलते हुए उनको सजाने, संवारने उनके लिये कपड़े सीने व खाना बनाने में आनन्द लेती हैं और मातृत्व की इच्छा को व्यक्त करती हैं। दूसरे प्रकार के खेल वह तभी खेतली हैं जब उन्हें घर में उछल कूद की पूरी सुविधा हो।

खिलौनों का चुनाव बच्चों की मानसिक स्थिति और उनकी रुचि के अनुसार किया जाना चाहिए। प्रारम्भ में खिलौने हल्के, चमकदार; हिलने-डुलने वाले और मधुर स्वर वाले होने चाहिए। भाग सकने की उम्र के बच्चों को गेंद, मुंह से बजने वाले बाजे, तीन पहियों वाली साइकिल आदि चीज़ें देनी चाहिए जो उनके ज्ञान को बढ़ा सकें।

चित्रों का भी महत्व खेल-खिलौनों से कुछ कम नहीं है। चित्रों की सहायता से बच्चे कितनी आसानी से चीज़ों को समझते हैं इसका अनुभव हमने अपने घरों में अनेक बार किया होगा। चित्रों की सहायता से स्कूलों में अक्षर ज्ञान तथा पशु-पक्षियों का परिचय बच्चे आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।

खेल-खिलौनों की तरह बच्चों के चित्र भी सुन्दर और सुरुचिपूर्ण होने चाहिए जिनके प्रति वे आसानी से आकर्षित हो सकें। अच्छे चित्र मनों में अच्छी भावनायें और बुरे चित्र बुरी भावनायें पैदा करते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने तो चित्रों के महत्व के बारे में यहां तक कहा है कि आप अपने बच्चों को जैसा बनाना चाहते हैं उसी प्रकार के चित्रों से उनका परिचय बढ़ने दीजिए। इस तथ्य को जानने वाले माता-पिता, अभिभावक और अध्यापक बच्चों के चरित्र निर्माण में एक बड़ा हिस्सा अदा कर सकते हैं।

अभी ज़िन्दगी का दिया जल रहा है!

भयानक निशा से उलझ दीप रोया,
दुलारा तमस ने, नहीं चाँदनी ने,
विवश ही रहे साज सोये हृदय में,
पुकारा न जिसको कभी रागिनी ने,
मचलता रहा है करुण गीत सा जो,
तरसता रहा है किसी मीत को जो,
तरुण ज़िन्दगी का दिया जल रहा है।

हुआ रश्मियों को न प्यारा कभी जो
बुझा टिमटिमा कर अगर भोर आई-
चुका स्नेह सारा स्वयं सो गया, जब
ऊषा द्वार खोले मधुर मुस्कुराई
पुनः सृष्टि को जब निशा ने सजाया
तभी बेशरम ने नशा फिर चढ़ाया
जलो और भी आस ने फिर कहा है।

ठिठुरती हुई लौ, सुबह के सितारे,
सिसकते रहे रात के जागरण को
कि जीवन समर में सदा रत रहा पर
नहीं काट पाया तिमिर-आवरण को,
मगर शक्ति के श्वास हारे नहीं हैं,
अभी भक्ति के गान हारे नहीं हैं,
थकी ज़िन्दगी का कदम चल रहा है।
अभी ज़िन्दगी का दिया जल रहा है॥

★ —विष्णु खन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि-अनुसन्धान में अणुशक्ति का प्रयोग

एक नये युग के प्रारम्भ की आशा

अमेरिकी अणुशक्ति कमिशन के अध्यक्ष ल्यूइस एल० स्ट्रौस ने अभी हाल में कहा था कि खाद्य पदार्थों की किस्म सुधारने तथा मानव जाति के लिये आवश्यक प्रमुख अनाजों की पैदावार बढ़ाने वाले कृषि-अनुसंधान कार्य अणु को शान्तिपूर्ण उपयोगों में लगाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

अमेरिकी अणुशक्ति का एक मुख्य कार्य अणुशक्ति को शांतिपूर्ण कार्यों में लगाना तथा अणुशक्ति वाली चीज़ों के विकास में तेज़ी लाना है। स्ट्रौस ने बताया था कि इस योजना के अन्तर्गत अमेरिकी अणुशक्ति कमिशन ने आणविक पदार्थों को कृषि-कार्यों में प्रयुक्त करने के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम शुरू किया है।

अमेरिकी अणुशक्ति के स्टाफ में काम करने वाले वैज्ञानिकों की सम्मति है कि कृषि क्षेत्र में आणविक पदार्थों के प्रयोग से पौधों एवं पशुओं के पालन-पोषण और रोगों की रोकथाम करने में, फसलों को नष्ट कर देने वाले हानिकारक कीड़ों का खात्मा करने में तथा कृषि उत्पादन सम्बन्धी अन्य बातों के सम्बन्ध में एक नया युग शुरू हो जाएगा।

न्यूयार्क शहर के समीप लौंग आइलैंड की बुकहैवन राष्ट्रीय प्रयोगशाला में इस समय पौधों पर आणविक पदार्थों के विकिरण के प्रभावों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण छानबीन की जा रही है। रेडियो सक्रिय कोबाल्ट (वह कोबाल्ट जिसे आणविक भट्ठी में रख कर रेडियो सक्रिय कर लिया गया हो) से विकिरण किया जाता है। इस प्रकार की छानबीन का मुख्य उद्देश्य ऐसे परिवर्तन लाना होता है जिन के फलस्वरूप अधिक अच्छी किस्म के पौधे पैदा किये जा सकें।

बुकहैवन प्रयोगशाला में कार्य करने वाले वैज्ञानिक डा० राल्फ सिंगलटन ने इस प्रकार के अनुसन्धान कार्य को कृषि के विकास की दृष्टि से पिछले वर्षों की सब से महत्वपूर्ण घटना बताया है।

पैदावार में वृद्धि

सिंगलटन ने बताया कि बुकहैवन में अणु का शान्तिकालीन कार्यों में प्रयोग किये जाने विषयक परीक्षणों से पहले ही यह प्रकट हो चुका है कि किस प्रकार मूंगफली की पैदावार में ३० प्रतिशत की वृद्धि की जा सकती है। उन परीक्षणों के कारण जई की एक ऐसी किस्म पैदा की गई है जिसे कोई रोग नहीं लगता।

बाद के परीक्षण में, जई की एक ऐसी किस्म से जिसे रतुआ की बीमारी लग जाती है नई किस्म के बीज तैयार किये गये हैं। रतुआ एक ऐसी बीमारी है जिस से हर साल अनाज की बहुत अधिक फसलें नष्ट हो जाती हैं। रेडियो सक्रिय कोबाल्ट के विकिरण से जई के बीजों में परिवर्तन हो गया और उन से ऐसे पौधे पैदा हुए जिनको रतुआ बिल्कुल नहीं लगता। अणु के शांतिपूर्ण प्रयोग द्वारा पदा किये गये जई के पौधों की खेती करने वाले किसान अब यह भरोसा कर सकते हैं कि उनकी फसल अधिक होगी और उन्हें रतुआ जैसी बीमारी की भी चिंता नहीं करनी पड़ेगी।

बुकहैवन के वैज्ञानिक अब पाले या कीड़े से मुक्त मक्का पैदा करने के प्रयत्न कर रहे हैं। उसे बोने से वर्तमान किस्मों की अपेक्षा अधिक उपज होने लगेगी। चूंकि मक्का संसार के करोड़ों लोगों का मुख्य भोजन है, इस लिये इस खोज को बहुत ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगी समझा जा रहा है। जिस प्रकार कई वर्ष पूर्व दोगली मका तैयार होने पर उसका महत्व समझा गया था उसी तरह इस नई खोज को भी बहुत लाभदायिक समझा जाता है।

भोजन को सुरक्षित रखने के तरीके

भोजन को सुरक्षित रखने के नये एवं उन्नत तरीकों को मालूम करने में भी आणविक विकिरण का प्रयोग किया जा रहा है। यह पता लगाया जा चुका है कि आणविक विकिरण से वे कीटाणु समूल नष्ट हो जाते हैं जो भोजन को खराब कर देते हैं।

बुकहैवन प्रयोगशाला में दर्शक ऐसे आलू देख सकते हैं जो दो वर्ष पुराने हैं। उन आलुओं में से जिन पर आणविक विकरण की प्रक्रिया की गई थी वे तो अच्छी हालत में हैं लेकिन बाकी खराब हो गए हैं। वैज्ञानिकों को आशा है कि अणु के प्रयोग से ताज़े तथा डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने के नये तरीके निकल आयेंगे।

दूसरे वैज्ञानिक कृषि-अनुसन्धान के विविध क्षेत्रों में रेडियो सक्रिय आइसोटोप्स या रेडियो आइसोटोप्स का प्रयोग कर रहे हैं। रेडियो-आसोटोप्स का महत्व अणु के शान्ति कालीन उत्पादनों में सब से अधिक है। ये आसोटोप्स लोहे, फास्फोरस या आयोडीन के सामान्य तत्व ही होते हैं सिर्फ उनके अणुओं को आणविक भट्ठी में रेडियो-सक्रिय बना दिया जाता है।

रेडियो-आइसोटोप्स में से प्रकाश की किरणें निकलती हैं और इसी को विकिरण कहते हैं। ऐसा होने के कारण वैज्ञानिक पता लगाने के विविध यन्त्रों की सहायता से यह बता सकते हैं कि वे आइसोटोप्स किसी भी समय कहां हैं। उन को पौधों में, पशुओं एवं मनुष्यों के शरीरों में, खाद में या दूसरी वस्तुओं में दाखिल किया जा सकता है और उसके बाद उनकी गति को देखा जा सकता है अथवा ठीक-ठीक मापा जा सकता है।

शरीर के अन्दर की क्रियाओं का ज्ञान

पालतू पशुओं के सम्बन्ध में किये जाने वाले अनुसन्धान कार्य में रेडियो-आसोटोप्स का प्रयोग किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, अब से पहले कभी भी यह पता नहीं लगाया जा सकता था कि घास आदि खाने से गाय के शरीर में दूध कैसे तैयार हो जाता है। अब, रेडियो आइसोटोप्स की सहायता से वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं कि पशुओं का भोजन किस प्रकार और किन किन रूपों में बदलता जाता है। मुर्गियों के अण्डों के उत्पादन के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार के परीक्षण किये जा रहे हैं।

पौधों का पोषण

कृषि सम्बन्धी अनुसन्धान कार्य में रेडियो आइसोटोप्स का सब से महत्वपूर्ण प्रयोग उनकी सहायता से यह पता लगाने का है कि रासायनिक खाद किस तरह से पौधों के भीतर पहुंचती है और उसे पौधे किस प्रकार जज़्ब करते हैं। रेडियो आइसोटोप्स के इस्तेमाल से पूर्व पौधों की वृद्धि को देख कर तथा फसलों की पैदावार का अन्दाजा करके ही रासायनिक खाद के प्रभाव को जाना जाता था। यह तरीका धीमा तो था ही साथ ही पूरी तरह सन्तोषजनक भी नहीं था।

उदाहरण के रूप में, रेडियो आइसोटोप्स की सहायता से अब यह मालूम करना सम्भव हो गया है कि छोटे पौधों में फास्फोरस का अंश रासायनिक खाद से आता है जो कुदरती तौर पर मिट्टी में रहता है। खाद में रेडियो आइसोटोप्स मिला कर वैज्ञानिक लोग यह पता लगा लेते हैं कि वह खाद मिट्टी में है या पौधों की जड़ों में अथवा ऊपर टहनियों व तनों में है। वे खाद की गति तथा फैलने के क्षेत्र का भी माप कर सकते हैं। वे यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले पृष्ठ से आगे—

भी मालूम कर सकते हैं कि अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिये कहां और कब रासायनिक खाद डालनी चाहिए। वे मालूम कर सकते हैं कि विविध प्रकार की मिट्टियों में किस २ प्रकार की रासायनिक खाद अच्छी रहती है।

उदाहरण के तौर पर, फास्फेट पौधे का आवश्यक अहार है और यह लगभग सभी रासायनिक खादों में पड़ता है। फास्फोरस के रेडियो-आइसोटोप्स किसी भी रासायनिक खाद के सामान्य फास्फेट के साथ मिलाये जा सकते हैं। जब रासायनिक खाद को काम में लाया जाता हैं तो फास्फोरस के रेडियो आइसोटोप्स से हल्की सी निरापद किरणें निकलती है जिनका 'गाइगर काउंटर' या पता लगाने के अन्य यन्त्रों द्वारा पता लगाया जा सकता है। इस प्रकार यह जानना बहुत कठिन नहीं है कि मिट्टी तथा पौधे में फास्फोरस का क्या बनता है।

खाद डालने का समय

रेडियो-आइसोटोप्स के रूप में अणु के इस एक शान्तिकालीन प्रयोग से कृषि के सम्बन्ध में बहुत सी महत्वपूर्ण एवं अज्ञात बातें मालूम की गई हैं। अनुसन्धानकर्ताओं ने पता लगाया है कि पौधे की जड़ें रासायनिक खाद को मिट्टी में फैलाने के तुरन्त बाद फास्फेट का अंश ले लेती हैं। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने मालूम किया है कि चरागाहों की घासें उस फास्फेट को अपने अन्दर लेती हैं जो पत्तियों पर फैलायी जाती हैं और फास्फेट से चरागाह हरे भरे हो जाते हैं।

देखा गया है कि मक्का, तम्बाकू, गन्ना तथा कपास के पौधे वृद्धि की प्रारम्भिक स्थिति में ही फास्फेट ग्रहण करते हैं। इस प्रकार यह पता चला कि यदि इन फसलों वाले खेतों में बाद के दिनों में रासायनिक खाद डाली जाए तो वह बेकार जाती है। इस के विपरीत, यह देखा गया है कि आलू अपनी वृद्धि के समूचे काल में रासायनिक खाद से फास्फेट लेता रहता है।

रेडियो-आइसोटोप्स के प्रयोग से वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया है कि सिंचाई के पानी में फास्फेट को मिलाने से वह पानी मिट्टी को उतना ही लाभ पहुंचाता है। जो किसान इस विधि से अपनी सिंचित फसलों में खाद पहुंचाते हैं उन का खर्च कम हो जाता है।

कीटमार दवाओं में प्रयोग

कृषि अनुसन्धान कार्य में रेडियो-आइसोटोप्स का दूसरा इस्तेमाल कीटमार दवाओं के अध्ययन में किया जाता है। इस क्षेत्र में इस सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी प्राप्त की गई है कि किस प्रकार की कीटमार दवाओं का विभिन्न प्रकार के पौधों पर कैसा प्रभाव पड़ता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ विवाह के पंजाबी लोक गीत ★

(ले०—श्री कृपाल सिंह)

प्रत्येक देश में विवाह के भिन्न भिन्न रीति रिवाज प्रचलित हैं।

पंजाब में विवाह की रीतियों और इस अवसर पर गाये जाने वाले लोक गीतों की अपनी एक विशेषता है। इन गीतों में हास्य और शृंगार रस का बाहुल्य रहता है। विवाह से पूर्व जब सम्बन्ध की घोषणा होती है तो इसे 'कुड़माई' अर्थात् सगाई कहते हैं। कुड़माई के काफी समय पश्च विवाह का दिन निश्चित होता है। जब विवाह का दिन निश्चित हो जाता है तो दो सप्ताह पूर्व दोनों पक्षों के लोग अपने घर पर समारोह आरम्भ करते हैं। इसे 'गौन बैठाना' कहते है। इस दिन महिलाएं सम्मिलित रूप से लोकगीतों का गायन करती हैं। ये गीत जेठ कुड़म (समधी); सौहरा (ससुर), छड़ा; (अविवाहित), काला काली, लाड़ा (दुल्हा), लाड़ी (दुल्हिन) आदि से सम्बन्धितत हास्य गीत होते हैं।

जेठ से शत्रुता और देवर से प्रेम इन लोगगीतों का प्रिय विषय है।

असीं जेठ नूं लस्सी नहीं देनो,
द्योर भावें दुध पी लवे।

(जेठ को तो मैं छाछ भी नहीं दूंगी देवर चाहे दूध पी ले)

'द्योर भाभी दा गहना,
ते गोदी विच खेडदा फिरे'

देवर भाभी का आभूषण है और वह उसकी गोद में भी खेलता रहता है।) परन्तु जेठ के साथ पता नहीं क्यों लगती है कि भाभी कहती है :—

'इहनूं आ जाए किसे दी आई मर जाए जेठ मेरा'

(मेरा जेठ किसी और के स्थान पर ही मर जाए)

सखियां परस्पर मज़ाक करती हैं।

ज़रा एक झलक देखिए :—

'केहड़े जेठ दा तता दुध पीता
सड़ गईयां लाल बुलियां'

(सुन्दरी के लाल अधर मालूम होता है किसी जेठ का दूध पीने से जल गये हैं।)

'असीं जेठ दे नाल नहीं रहना
वखरी चुल्ल कर लौ।'

(जेठ के साथ इकट्ठे नहीं रह सकते इस लिए अपना घर अलग कर लो।

भाभी इसका कारण बताती है :—

'मेरा जेठ बड़ा दुट पैंना
हसदी दे दंद गिनदा।'

(मेरा जेठ बड़ा खराब है क्योंकि जब मैं हंसती हूं तो वह मेरे दांत गिनता है)

जेठ का उत्तर भी फिर वह सखियां स्वयं ही दे देती हैं।

'तेरे दंद मोतियां दे दाने हसदी दे डिग पैनगे।'

(तेरे सुन्दर दांत मोतियों के दाने हैं ऐसा न हो कि तुम्हारे हंसने के समय वह गिर जाएं।)

अनमेल विवाह भी होते हैं और समाज में उनके विरुद्ध आवाज़ भी उठाई जाती है। लोक गीतों में इस पर कैसा व्यंग्य है :—

'सुत्ती होई दे सरहाने रिछ बनके
पंज सौ गिना लिया मापियां।

(अनजान को मां बाप ने मूल्य लेकर बड़ी आयु वाले के साथ ब्याह दिया।

इस पर किसी ने तो मां बाप की इज्जत रख ली, परन्तु किसी ने शोर भी किया :—

'हाय वे रब्बा!

(शेष पृ० १८ पर.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रूसी कहानी—

★ गिरगिट ★

(ले०—श्री आन्तन चेखव)

पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट ओत्चुमेलोव अपना नया ओवरकोट पहने बगल में एक बंडल दबाए बाज़ार से जा रहा है। उसके पीछे ही लाल बालों वाला एक पुलिसमैन हाथ में एक टोकरी लिए लपका हुआ चला आ रहा है। टोकरी ऊपर तक बेरों से भरी हुई है; जो उन्होंने अभी ज़ब्त किये हैं। चारों तरफ खामोशी है। भूखे जबड़ों की तरह खुले हुए दुकानों और सरायों के दरवाज़े, ईश्वर की सृष्टि को निराशा से तक रहे हैं। यहां तक कि कोई भिखारी भी आसपास दिखाई नहीं देता।

'अच्छा; तो तू काटेगा, क्यों बे ! शैतान कहीं का का !' ओत्चुमेलोव के कानों में सहसा यह आवाज़ आई। 'देखो, काटने न पाये। अब तो काटने के खिलाफ भी कानून बन गया है। पकड़ लो ! आह आह !'

एक कुत्ते के पिपियाने की आवाज़ सुनाई देती है। ओत्चुमेलोव इधर-उधर नज़र दौड़ाता है, कि पित्चुगिन की लकड़ी की टाल में से एक कुत्ता तीन टांगों पर लंगड़ाता हुआ भागा चला आ रहा है और मुड़-मुड़ कर चारों तरफ देखता जाता है। कलफ़दार सूती कमीज़ पहने हुए, वास्कट के बटन खोले, एक आदमी उसका पीछा कर रहा है। वह कुत्ते पर झपटता है, लपक कर उसे पकड़ने की कोशिश करता है, और गिरते गिरते भी कुत्ते की पिछली टांग पकड़ लेता है। कुत्ते की पें पें फिर सुनाई देती है और वही आवाज़ 'जाने न पाए' दुकानों से ऊँघते हुए लोग गरदन बाहर निकाल कर देखने लगते हैं और देखते ही देखते लकड़ी की टाल के पास एक भीड़ जमां हो जाती है, मानो ज़मीन फाड़ कर निकल आई हो।

'हुज़ूर, मालूम पड़ता है कुछ गड़बड़ है,' पुलिसमैन ने कहा।

ओत्चुमेलोव बाईं ओर मुड़ा और भीड़ की तरफ चल दिया। लकड़ी के टाल के द्वार पर उसकी मुठभेड़ उस आदमी से हो गई जिसकी वास्केट के बटन खुले हुए थे। जिसका अभी ऊपर ज़िक्र किया जा चुका है। वह अपना दाहिना हाथ ऊपर को उठाए भीड़ में एकत्रित लोगों को अपनी उंगली दिखा रहा था। उसकी उंगली से खून बह रहा था। ऐसा लगता था कि उसकी शराबियों की सी सूरत पर साफ लिखा हुआ है, 'मैं तुझे इसका मज़ा चखाऊँगा, बदमाश कहीं का !' और सचमुच उसकी उंगली विजय की पताका मालूम पड़ती थी। ओत्चुमेलोव ने उस व्यक्ति को पहचान लिया। वह रूकिन सोनार था। भीड़ के बीच में एक सफेद बोर्ज़ोई कुत्ता दुबका हुआ ऊपर से नीचे तक कांप रहा था। उसका मुंह नुकीला था, पीठ पर पीला दाग़ था और आगे के पंजे बाहर फैले हुए थे। यही कुत्ता इस गड़बड़ का ज़िम्मेदार था।

'क्या हंगामा मचा रखा है यह ?' ओत्चुमेलोव ने भीड़ को चीरते हुए सवाल किया। 'यह भीड़ क्यों लगा रखी है ? उंगली क्यों हिला रहे हो ? क्या हुआ है उंगली में ? कौन चिल्ला रहा था ?'

'हुज़ूर मैं अपनी राह जा रहा था,' रूकिन ने अपने मुंह पर हाथ रख कर खांसते हुए कहना शुरू किया, मित्री मित्रिच से लकड़ी के बारे में कुछ बातें कर रहा था। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था। एकाएक मालूम नहीं क्यों इस बदमाश ने मेरी उंगली में काट लिया। हुज़ूर माफ करें, मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामकाजी आदमी ठहरा और फिर हमारा काम भी बहुत नाजुक है। मैं तो हरजाना ले लूंगा कम से कम एक हफ्ते तक यह उंगली काम के लायक न होगी और कानून में भी कहीं नहीं लिखा है कि अगर जानवर नुकसान कर दे, तो उसे चुपचाप बर्दाश्त कर लिया जाए। अगर सबको ऐसे ही काटने लगे तो जीना दूभर हो जाएगा।'

'हूं अच्छा ?' ओत्चुमेलोव ने अपना गला साफ करके त्योरियां चढ़ा कर कहा, 'ठीक' 'अच्छा, यह कुत्ता है किसका ? मैं इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैं उन लोगों को कुत्तों को खुला छोड़ रखने का मज़ा चखाऊंगा। वे लोग जो कानून के मुताबिक नहीं चलते, उनके साथ सख्ती से पेश आना पड़ेगा। जब जुर्माना होगा, तब मालूम पड़ेगा उस बदमाश को कि कुत्ता पालना क्या होता है और उसमें और ढोर-डँगरों में क्या फर्क है। मैं ठीक कर दूंगा उसे। 'येल्द्रीन !' पुलिसमैन को सम्बोधित करके सुपरिन्टेन्डेंट ने चिल्ला कर कहा, 'पता लगाओ कि यह किसका कुत्ता है और रिपोर्ट लिखकर कुत्ते को सरवा दो। फौरन ! यह ज़रूर पागल होगा''मैं पूछता हूँ किसका है यह कुत्ता ?'

'मुमकिन है, जनरल जिगालोव का हो' भीड़ में से किसी ने कहा।

'जनरल जिगालोव का ? येल्द्रीन, जरा मेरा कोट तो उतार दे। बड़ी गरमी है। मालूम होता है बारिश होगी। अच्छा, एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि उसने तुम्हें काटा कैसे ?' ओत्चुमेलोव रूकिन की तरफ मुड़ा। 'मुझे यकीन है कि यह तुम्हारी उंगली तक तो पहुंच भी नहीं सकता। यह छोटा सा जानवर तुम लम्बे-चौड़े पहलवान। किसी कील वील से उंगली काट ली होगी और सोचा होगा कुत्ते के सर मढ़ दो। मैं खूब जानता हूं तुम जैसे लोगों को ! मैं तुम बदमाशों को अच्छी तरह पहचानता हूं।'

'इसने उसके मुंह पर जलती सिगरेट लगा दी थी, हुजूर ! बस, यों ही मजाक में। और वह कुत्ता कोई बेवाकूफ तो है नहीं, उसने काट लिया। हुजूर ! यह खुद ऐबी है।'

'अबे काने, झूठ क्यों बोलता है ? जब तूने देखा नहीं, तो उड़ाता क्यों है ? सरकार तो खुद समझदार हैं। सरकार खुद मालूम कर लेंगे कौन झूठा है कौन, सच्चा।' और अगर मैं झूठा हूं तो अदालत से फैसला करा लो। कानून में लिखा है कि अब हम सब बराबर हैं। हमारा भाई खुद हथियारबन्द पुलिस में है। बताए देता हूं।'

'अच्छा बकबक बन्द करो।'

'नहीं साहेब, यह जरनैल साहेब का नहीं है' पुलिसमैन ने दृढ़ विश्वास से कहा। 'जरनैल साहेब के पास ऐसा कुत्ता कोई है ही नहीं। उनके सब शिकारी कुत्ते हैं।'

'तुम्हें ठीक मालूम है'

'जी; हुजूर !'

'मैं भी जानता हूं। जनरल साहेब के सब कुत्ते अच्छी नस्ल के हैं और एक से एक कीमती कुत्ता है उनके पास। यह तो कोई ऐसा ही वैसा है। न देखने में अच्छा; न डीलडौल में कुछ। कोई लैंडी कुत्ता होगा। कौन रखेगा ऐसा कुत्ता ? तुम लोगों का दिमाग़ तो ख़राब नहीं हुआ ? अगर ऐसा कुत्ता मास्को या पीटर्सबर्ग में दिखाई दे; तो जानते हो ? बिना कानून की परवाह किये सीधे उसका गला घोंट दिया जाए। रूकिन तुम्हें चोट लगी है। हम लोग इस मामले को यों ही नहीं टाल सकते''''इन को मज़ा चखाना पड़ेगा। ऐसे काम नहीं चलेगा''

'लेकिन मुमकिन है जरनैल साहेब का ही हो' पुलिसमैन फिर सोचकर ज़ोर से बोला; इसके माथे पर तो लिखा नहीं है। उस दिन मैं ने जरनैल साहेब के अहाते में बिल्कुल ऐसा ही कुत्ता देखा था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां-हां, जनरल साहेब का तो है ही, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं!' भीड़ में से किसी की आवाज़ आई।

हूं...भाई येल्द्रीन, ज़रा मुझे कोट पहना दो। हवा चल रही है, मुझे सर्दी लग रही है। कुत्ते को जनरल साहेब के यहां ले जाओ वहां मालूम करो। कह देना कि मैंने इसे सड़क पर देखा था और भिजवाया है और हां, देखो, यह भी कह देना कि इसे सड़क पर न निकलने दिया करें... मालूम नहीं कितना कीमती कुत्ता हो और अगर हर सुअर इसके मुंह में सिगरेट घुसेड़ता रहा तो कुत्ता शीघ्र ही तबाह हो जाएगा। कुत्ता बहुत नाज़ुक जानवर होता है। और तू, हाथ नीचा कर, गधा कहीं का! उँगली उठाये रहने से क्या होगा? सारा कुसूर तेरा ही है।'

'वह जरनैल साहेब का बावर्ची आ रहा है, उससे पूछ लिया जाए। ऐ प्रोख़ोर, इधर तो आना भाई! इस कुत्ते को देखना तुम्हारे यहां का तो नहीं है?'

'अमां हटो, हमारे यहां कभी भी ऐसा कुत्ता नहीं था।'

'इसमें पूछने की क्या बात है? बेकार वक्त खराब करना है', ओत्चुमेलोव ने कहा। 'आवारा कुत्ता है, इसके बारे में बात करना समय बरबाद करना है। यह कहता है कि सड़क पर का कुत्ता है, तो ज़रूर होगा। मरवा दो इसे, झगड़ा खत्म हो।'

'हमारा तो नहीं है,' प्रोखोर ने फिर कहा, 'यह जरनैल साहेब के भाई का है। अभी थोड़े दिन हुए वह आए हैं। हमारे जरनैल साहेब को शिकारी कुत्ते पसन्द नहीं हैं। लेकिन सरकार के भाई हैं न, उनको बहुत पसंद हैं।'

'तो क्या तुम्हारा मतलब है कि जरनैल साहेब के भाई आए हुए हैं? कौन व्लादीमीर ईवानिच?' ओत्चुमेलोव ने पूछा और एक हर्षपूर्ण मुस्कुराहट उसके चेहरे पर दौड़ गई। 'गुड लार्ड! और मुझे मालूम भी नहीं हुआ। अच्छा, तो वह भाई से मिलने आए हैं।'

'हां, मिलने ही आए हैं।'

'गुड लार्ड! मुझे पता भी न चला! तो भा की मुहब्बत खींच लाई। ज़रा ग़ौर तो करो, मुझे खबर भी न हुई। तो यह कुत्ता हिज़ अनार है। बड़ी खुशी हुई सुनकर! इसे लेते जा अपने साथ। कुत्ता बुरा नहीं है। कितना ते है? चिः चिः। बेचारे की उंगली को काट लिया। हः हः। पपी, कांप क्यों रहे हो? गुर्र...गुर्र... ख़ हो गया, बदमाश कहीं का। बड़ा अच्छा कुत्ता है

प्रोखोर ने कुत्ते को बुलाया और उसे लेक लकड़ी की टाल से चला गया। भीड़ रूकिन क मज़ाक उड़ाने लगी।

'मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं,' ओत्चुमेलोव ने उ धमकाते हुए कहा और अपना ओवरकोट कसक लपेटते हुए बाज़ार से हो कर घर का रास्ता लिया

गीत

समय ने मुझे इस तरह गुदगुदाया
हंसी भी न आई, रुदन भी न आया
न पूछा किसी ने कि क्या दर्द मेरा,
हृदय में रहा वेदना का बसेरा,
उठीं अश्रु भरकर व्यथा की घटाएं,
विकल प्राण ने भी तुम्हें खूब टेरा।
उभरती रहीं स्वांस के संग कराहें
न तुमने सुना रोक भी मैं न पाया।
फंसा मैं रहा उलझनों में सदा ही,
न सोया कभी दुःख हमेशा जगा ही,
सुखों से हुई कब मुलाकात मेरी,
रहा खोजता जब कि सुख मैं सदा ही।
झुलसते रहे मेघ मेरे नयन में,
पलक से मगर नीर बाहर न आया।
गिरीं बिजलियां ही सदा ज़िन्दगी पर,
मुसीबत मिली नित नए रूप धर कर,
धरा पर मिले दुःख भूचाल बन कर,
गगन में मिले किन्तु तूफ़ान बन कर।
न जाने मिली प्रेरणा किस तरफ से,
मरण को चरण की डगर भी बनाया। —करुणेंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस में संस्कृत का अध्ययन

भारतीय-विद्या (इंडोलोजी) भाषातत्व के सबसे महत्वपूर्ण विषयों में एक है। इसका कारण भारतीय संस्कृति के विकास की दीर्घकालीन अवधि तथा भाषातत्व-सम्बन्धी भारत की प्राचीन परम्पराएं ही नहीं वरन् युरोपीय भाषाशास्त्र के विकास पर भारतीय विद्या का गहरा प्रभाव भी है। प्राचीन भाषा के ज्ञान से तुलनात्मक व्याकरण के विकास में सहायता मिली है। इसी लिये सोवियत वैज्ञानिकों ने संस्कृत के अध्ययन को इतना अधिक महत्व दिया है।

संस्कृत में बढ़ती हुई दिलचस्पी १६५० के विचार विमर्श के बाद सोवियत भाषा-विज्ञान की प्रगति से सम्बद्ध है। अब तक की ज्ञात भारतीय-युरोपीय भाषाओं में प्राचीनतम भाषा। संस्कृत का अध्ययन तुलनात्मक भाषा-शास्त्र की समस्याओं तथा भारतीय भाषाओं के इतिहास-सम्बन्धी प्रश्नों का विवेचन करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

संस्कृत का अध्ययन मास्को, लेनिनग्राद, और तिबिलिसी विश्वविद्यालयों में, सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान में तथा प्राच्य अध्ययन के मास्को स्थित संस्थान में होता है।

मास्को तथा लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन की समृद्ध पृष्ठभूमि है।

मास्को विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन को पेत्रोव, फौतुनातोव, मिलर तथा पोर्झेजिंस्की के शिक्षणकार्य और वैज्ञानिक शोध ने आगे बढ़ाया।

अध्ययन और अनुसन्धान वैदिक, महाकाव्यीय तथा क्लासिकल संस्कृत में होते थे।

इस समय मास्को के राज्यीय विश्वविद्यालय में पेटरसन संस्कृत के अध्यापक हैं।

विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन का तीन साल का पाठ्यक्रम है। सामान्य तथा स्नातकोत्तर छात्र महाभारत, हितोपदेश एवं पंचतन्त्र से लिए अंश, कालिदास के नाटक तथा मनुस्मृति पढ़ते हैं। 'भारतीय भाषातत्व की भूमिका' नामक विशेष ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं का विश्लेषण शामिल है।

मास्को राज्यीयविश्वविद्यालय के भाषातत्व विभाग में व्यापक पैमाने पर शोधकार्य होता है।

मास्को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने संस्कृत में अपने शोध पर विशेष निबन्ध लिखे हैं। इस प्रकार पेटरसन ने 'प्राचीन भारतीय तथा भारतीय-युरोपीय अन्य भाषाओं में सामान्य भूतकालिक क्रिया की बनावट', तथा 'संस्कृत में क्रिया पद' पर गवेषणामूलक निबन्ध लिखे हैं।

निकट भविष्य में 'संस्कृत में कर्मकारक के प्रयोग', 'द्वन्द्व समास', तथा ऋग्वेद में क्रियाओं के वर्गीकरण के ऊपर एक निबन्ध प्रकाशित होने वाला है।

तुलनात्मक ऐतिहासिक भाषा विज्ञान, भारतीय एवं ईरानी भाषातत्व तथा प्राचीन भारत के इतिहास का विशेष अध्ययन करने वाले छात्रों की संस्कृत में बढ़ती हुई दिलचस्पी को दृष्टि में रखते हुए मास्को राज्यीय विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक संस्कृत की पाठ्यपुस्तक तैयार कर रहे हैं। 'संस्कृत का प्राथमिक पाठ्यक्रम' का प्रथम भाग पहले ही तैयार किया जा चुका है।

हाल ही में प्रस्तुत किये गए एक गवेषणामूलक निबन्ध का विषय था 'महाकाव्यों की संस्कृत में पद्यरचना', स्नातक की डिग्री के लिये प्रस्तुत तीन तथा कई सालाना निबन्ध संस्कृत को समर्पित हैं। छात्र 'सावित्री' से लिए गये अंशों का अनुवाद तैयार कर रहे हैं तथा पंचतंत्र के अनुवाद पर काम कर रहे हैं।

लेनिनग्राद राज्यीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन की परम्पराएं मीनायेव, ओबेरमिल्ल ओल्डेनबुर्ग, श्चेरबात्स्कोई के शोधकार्य से सम्बद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ रेडियो द्वारा बच्चों को शिक्षा ★

अमेरिका में लाखों बच्चे लाभ उठा रहे हैं।

रेडियो द्वारा प्रसारित किये जाने वाले शिक्षणात्मक कार्यक्रमों ने अमेरिकी स्कूलों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, यहां तक कि वे अब कक्षाओं के अध्ययन कार्यक्रम के स्थायी अंग बन गये हैं। इस समय अमेरिका में १६० ऐसे रेडियो स्टेशन हैं जो स्कूलों के लिए शिक्षणात्मक कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। इस के अलावा इसी प्रकार के और रेडियो स्टेशन खोलने की योजनाएं भी बनाई जा रही हैं।

रेडियो कार्यक्रमों को बढ़ती हुई उपयोगिता का श्रेय स्थानीय शिक्षाशास्त्रियों और छात्रों के अभिभावकों को है क्योंकि उन्होंने रेडियो की उपयोगिता और कमियों को अच्छी तरह समझा और शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित करने वाले रेडियो स्टेशन खोलने के लिये धन भी संचित किया। इन्हीं शिक्षाशास्त्रियों और अभिभावकों पर यह निर्णय करने का उत्तरदायित्व है कि किन परिस्थितियों में रेडियो कार्यक्रम छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

अमेरिका में शिक्षा-व्यवस्था का संचालन ऐसे हजारों शिक्षा बोर्डों द्वारा होता है जिन को बहुत व्यापक अधिकार रहते हैं। इसके इलावा शिक्षा पद्धति ऐसी है जिसमें आवश्यकतानुसार आवश्यक फेर बदल की जा सकती है। सम्भवतः इसी लिये स्कूल विभिन्न विषयों पर विभिन्न ढंग से ऐसे शिक्षणात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत कर पाये हैं। अमेरिकी कस्बों या नगरों को यह निर्णय करने की बहुत कुछ स्वतन्त्रता है कि स्कूलों में किस ढंग से शिक्षा दी जाए और स्कूल में कौन से विषय पढ़ाये जायें। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा सम्बन्धी नवीनतम विधियों के सम्बन्ध में उन्हें परीक्षण करने की स्वतन्त्रता है।

उदाहरणार्थ आर्लिंगटन (वर्जिनिया) स्कूलों के छात्र समाज के विभिन्न कार्यों से सम्बन्धित कार्यक्रमों को सुनते हैं और उनमें भाग भी लेते हैं—जैसे पुलिस के कार्य, जीव-कल्याण तथा मानसिक दृष्टि से स्वस्थ समाज। ओहायो में स्कूलों के छात्र रेडियो-कार्यक्रमों और नाटकों द्वारा राष्ट्र के इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हैं। शिकागो के सरकारी स्कूलों के बालकों को 'कहानी सुनिये' शीर्षक रेडियो कार्यक्रमों द्वारा भोजन, वस्त्र; आश्रय यातायात, दवा तथा विज्ञान से सम्बन्धित अन्य विषयों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की जाती है। डेट्राइट, बाल्टिमोर, क्लीवलैण्ड तथा सिनसिनाटी के छात्रों को रेडियो कार्यक्रमों द्वारा सवाल हल करना सिखलाया जाता है तथा अन्य विषयों की भी जानकारी कराई जाती है। इसके अलावा अमेरिका के अन्य शहरों में छात्रों को रेडियो द्वारा अन्य बहुत से विषयों की शिक्षा दी जाती है।

स्कूलों के शिक्षकों पर रेडियो कार्यक्रमों की सफलता बहुत अधिक निर्भर करती है। यदि रेडियो कार्यक्रमों द्वारा प्रेरित की गई विचारधारा और भावों को कायम रखना है तो यह आवश्यक है कि शिक्षक उन रेडियो व्याख्यानों के बाद भी छात्रों का पथ प्रदर्शन करते रहें।

शिक्षकों को चाहिए कि वे रेडियो भाषणों के लिये उसी प्रकार से तैयारी करें जिस प्रकार वे एक सामान्य पाठ पढ़ाने के लिये करते हैं। तभी छात्रगण उनके अनुभव से कोई ठोस लाभ उठा सकेंगे। स्कूल रेडियो कार्यक्रमों की सूची और सारांश प्रकाशित करते हैं। शिक्षकों को चाहिये कि वे उसी गम्भीरता के साथ सूची और संक्षिप्त विवरण का अध्ययन करें जिस प्रकार पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों, फिल्मों तथा अन्य पाठ्यसामग्री का अध्ययन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं।

शिक्षणात्मकरेडियो कार्यक्रम की सबसे बड़ी आशंका यह है कि शिक्षक इन कार्यक्रमों को शिक्षण की परम्परागत विधियों के पूरक के रूप में इस्तेमाल न करके कहीं एकमात्र इन्हीं पर आश्रि न हो जायं। साथ ही यह भी भय है कि वे उन रेडियो भाषणों की उचित व्याख्या न करें और अपनी ओर से कुछ और अधिक बतलाने की कोशिश छोड़ दें। लेकिन अब शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं को अधिकाधिक समझते जा रहे हैं।

शिक्षणात्मक कार्यक्रमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लाखों छात्र इन कार्यक्रमों को सुन सकते हैं और इस प्रकार उन्हें अपने नगर, राज्य और देश के कार्यों में भाग लेने के लिये अधिक अच्छा अवसर प्राप्त हो जाता है। मोटी मोटी पुस्तकों की सामग्री इस प्रकार पेश की जाती है कि वह छात्रों को बहुत आसानी से समझ में आ जाती है।

'नैशनल एसोसियेशन ऑव् एजुकेशनल ब्रॉडकास्टर्स' ने टैप नैटवर्क नामक एक संस्था की स्थापना की है। इससे स्कूलों में अध्यापन-कार्यों में रेडियो का बड़े पैमाने पर उपयोग करने में बहुत सहायता मिली है। 'टैप नेटवर्क' द्वारा लगभग १०० रेडियो स्टेशनों से बहुत से शिक्षणात्मक कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। ये कार्यक्रम विभिन्न प्रतिष्ठानों द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से चलते हैं। संक्षेप में 'टप नैटवर्क' ने रेडियो द्वारा शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित करने के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया है।

शिक्षणात्मक कार्यक्रम प्रसारित करने वाले रेडियो स्टेशनों को चलाने पर अधिक खर्च नहीं बैठता, परन्तु छात्रों की कल्पनाशक्ति बढ़ाने और ज्ञान-वृद्धि करने में इन से बहुत अधिक सहायता मिलती है। उदाहरणार्थ क्लीवलैंड (ओहायो) के सरकारी स्कूलों के लिये कार्यक्रम प्रसारित करने वाले रेडियो स्टेशन पर हर वर्ष १,१५,००० डालर खर्च होते हैं। इस रेडियो स्टेशन से प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रमों को १,०८,००० छात्र सुनते हैं तात्पर्य यह हुआ कि प्रत्येक छात्र के पीछे केवल एक डालर से कुछ अधिक खर्च बैठता है। शिक्षणात्मक रेडियो कार्यक्रमों की उपयोगिता को देखते हुए यह खर्च सर्वथा नगण्य है।

★

गीत का सागर बहाए जा रही हूं !

वेदना में डूब कर संवेदना जागी हृदय में;
इस लिये मैं प्रीत का सागर बहाये जा रही हूं।
मौत को देकर निमन्त्रण जिन्दगी में हंस रहे जो,
लक्ष्य केवल दृष्टि में रख कण्टकों पर चल रहे जो।
विश्व में नव चेतना फूंके लगन उनकी इसी से;
प्रेरणा के स्वर सुषुप्तों में जगाये जा रही हूं।
हार के उर में विजय की नित सरल मुस्कान खिलती
और निशि के बीत जाने पर ऊषा की तान छिड़ती।
यह चिरन्तन सत्य सहसा लुप्त हो जाए न जग से
हार को ही जीत का उत्सव बनाये जा रही हूं।
कह रहा पतझड़ कि देखो मैं अकेला जी रहा हूं,
बन सकूं मधुमास इससे शीत आतप सह रहा हूं।
व्यर्थ हो जाए न उसका यह अटल विश्वास इससे,
मैं स्वयं मधुमास बनकर मुस्कुराए जा रही हूं।
है कठिन दुख की अमावस में हंसी के गीत गाना;
और टूटी नाव, लहरों पर तिराकर कूल पाना।
किन्तु यह काठिन्य सम्भव एक दिन हो इसलिये मैं
पत्थरों में फूल दृढ़ता के खिलाए जा रही हूं।
फूल मुरझा तो गया पर कर गया सौरभ प्रसारित
मर्म जीवन का यही, 'मिटकर करो जग को सुवासित'
फूल की यह मौन वाणी हो मुखर सबके हृदय में,
इस लिये मैं गीत जीवन, के सुनाए जा रही हूं॥

★ —मधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ० ११ का शेष)

कोठे उत्तें कोठरी, उत्तें बुड्ढे दी अटारी
हाए वे रब्बा, उत्तें बुड्ढे दी अटारी
पल्ला चुक के देखदी, मेरे बाबे दा हानी
हाए, वे रब्बा, मेरे बाबे दा हानी

(हाय ईश्वर, मैंने जब अटारी पर चढ़ कर देखा तो यह मेरा पति मेरे दादा का हम उम्र दिखाई दिया)

काले गोरे रंग का झगड़ा भी प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रूप प्रकृति की देन है; परन्तु समाज ने गोरेपन के 'नाज़' को उठाया कालेपन का मज़ाक उड़ाया ही है :—

'गोरी रन दा की सलाहिए,
जिऊं मक्खन दा पेड़ा
औंदा जांदा राही मुसाफ़िर
मुड़ मुड़ मारे गेड़ा।
मैं कोई झूठ बोलिया; कोई न
मैं कोई कुफ़र तोलिा, कोई न'

(गोरी युवती की क्या तारीफ की जाए जैसे मक्खन का पेड़ा हो। आता जाता राही मुसाफिर भी मुड़ मुड़ कर देखता है। क्या मैंने झूठ कहा है ? नहीं)

काली रन दा की सलाहिए,
जिऊं मोरी दा गारा।
आऊंदा जांदा राही मुसाफ़िर
दे के लंघ जाये लारा'
मैं कोई झूठ बोलिया, कोई न,
मैं कोई कुफ़र तोलिया, कोई न।

(काली औरत की क्या तारीफ की जाए जैसे नाली का गन्द। आता जाता मुसाफ़िर भी नाक भौं सिकोड़ कर लांघ जाता है। क्या मैं ने झूठ कहा है ? नहीं।)

इस प्रकार के समारोह कई दिन चलते हैं और अन्त में विवाह का शुभ दिन आ जाता है। जब दुल्हा अपनी 'सालियों' में पहुंचता है तो फिर उससे जी भर कर मज़ाक किया जाता है। सालियां गाती हैं:–

'कुड़ी ते साडी तिले दी तार है,
मुंडा तां दिस्दा कोई कुम्हार है।'

'हमारी लड़की तो बड़ी सुन्दर है परन्तु लड़का तो कोई गदागर दिखाई देता है।'

इस प्रकार लड़के के मां बाप पर प्रेम भरे कटाक्ष किये जाते हैं। इन कटाक्षों को पंजाबी में 'सिट्ठनियां' कहते हैं।

रात के समय अग्नि के आस पास चार फेरे होते हैं। जिन्हें पंजाबी में 'लावां' कहते हैं। इस के बाद प्रातः काल ही 'डोली' में बिठा कर दुल्हिन को दुल्हा के घर ले जाया जाता है। जब घूंघट निकाले दुल्हिन अपनी सुसराल में बैठी होती है तो उसकी नन्दें गाती हैं।

गोरा गोरा रंग शरबती अखियां,
घुंड विच्च कैद कीतियां
पैरीं गोरी दे स्लीपर काले
तुरदी दे पैर बोच्च दे

(हमारी भाभी ने सुन्दर रंग और शरबती आंखें घूंघट में कद कर रखे हैं। पैरों में काला जूता है जिससे गोरे पैर लजा रहे हैं) थोड़े समय बाद दुल्हा की बड़ी भाभी आकर कहती है।

'दिल करदे मुंडे दा राजी;
उठ लै जा सारियां नूं'

(अब दुल्हे को मन प्रसन्न करने दो। मुलाकात का समय दो और सब ऊपर चली जाओ)

गतांक से आगे–

वैदर्भी-वन-त्याग

(श्री शांत शास्त्री 'शालिहास')

एक अकेला ही उद्यत हूं।
सहने कष्ट अनेक घने।
क्षमा ! क्षमा ! ओ पिक वयने !
"अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितं"
आत्म पुकार यही कहता
भागधेय पर तुझे छोड़ कर
मैं जाता हूं भूशयने (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ-बाप के व्यवहार का बच्चों पर प्रभाव

(श्री बाला तनेजा)

मां-बाप बच्चों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं जैसा उनके साथ बचपन में किया जाता है । समझ लीजिए किसी बच्चे की मां नियमों की बहुत दृढ़ है और अपने बच्चों द्वारा उनका पालन बड़ी सख्ती से करवाती है, तो इसका प्रभाव बच्चे पर ज़रूर पड़ेगा । अगर बच्चा यह सोचने लगे कि सख्ती से काम कराना अच्छा होता है तो बड़ा होकर वह भी वैसा ही बन जाएगा ।

अगर माँ का स्वभाव बड़ा सरल और मीठा है तो बच्चा अनजाने में अपने मित्रों में बैठकर मां के सद्गुणों की प्रशंसा करता रहेगा—और बड़ा होकर उन्हें अपनी प्रकृति का एक अंश बना लेगा ।

कठोरता और स्नेह

कई बार ऐसा देखा गया है कि एक बच्चा दूसरे बच्चे से लड़-झगड़ कर जाता है तो मां बिना कारण पूछे उसे पीटने लगती है । कई माताएं तो ऐसी होती हैं कि जो बच्चों को इतना प्यार करती हैं कि प्यार में उसे और अपने आपको पागल बनाये रखती हैं । ये दोनों प्रकार की माताएं बच्चों को बहुत हानि पहुँचाती हैं । पहली अवस्था वाले बच्चे ढीठ हो जाएंगे और दूसरी अवस्था वाले आत्म-विश्वास खोकर हमेशा के लिये दूसरों के गुलाम बन जाएंगे ।

माता-पिता में अनुरूपता

मां-बाप के आपस के व्यवहार का असर बच्चे पर बहुत पड़ता है । अगर स्त्री-पुरुष में हमेशा कलह होती रहे तो बच्चे पर इसका असर बहुत बुरा पड़ेगा । हो सकता है, इसी घबराहट में बच्चा पढ़ना लिखना छोड़ दे और बुरी आदतें सीखने लगे । जिन घरों में ऐसी कलह होती रहती है वहां देखा गया है कि बाप बच्चों में कम दिलचस्पी लेने लगता है । बच्चे सोचने लगते हैं कि शायद वे आज़ाद हैं और उन पर किसी की रोक-टोक नहीं । वे चोरी इत्यादि करने लगते हैं । इसी झगड़े के कारण अगर मां भी बच्चे का ध्यान रखना छोड़ दे—तो सोच लीजिए बच्चों की हालत क्या होगी ?

बच्चों का हृदय बहुत कोमल होता है । इस लिये मां-बाप को चाहिए कि बच्चों को ऐसे वातावरण से दूर रखें । बच्चों के सामने कभी तीखी आवाज़ में न बोलें—नहीं तो वह भी यही सीख जाएगा ।

कठिनाइयां मत बताइए

कई बार मां-बाप बच्चों के साथ अपनी कठिनाइयों पर तर्क करते रहते हैं । इससे बच्चे के दिल में बहुत अशांति पैदा हो जाती है । अगर आप छः या सात साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बच्चे से कहें–राज, अब तुम्हारा स्कूल जाना बन्द कर दिया जाएगा क्योंकि हम से तुम्हारी फीस नहीं दी जाती। मासूम बच्चा उस समय तो समझ न पायेगा, मगर स्कूल में बैठे २ उसे यह ख्याल अवश्य आएगा कि यह गरीब है और फीस न दे सकने के कारण उसे स्कूल जाना छोड़ना पड़ेगा। वह अन्दर ही अन्दर बिलख उठेगा और जो घाव उसके दिल पर होगा वह कदापि ठीक न हो सकेगा। अप्रसन्नता के साथ २ उसमें हीन भाव भी पैदा हो जाएगा और यदि उसे पढ़ाई जारी भी रखनी पड़े तो उसका दिल उसमें लगेगा ही नहीं।

मां-बाप का अच्छा स्वभाव

जिन घरों में स्त्री-पुरुष की अच्छी पटती है उनके बच्चे बहुत खुश प्रकृति के होते हैं। परम्परा के विरुद्ध जाना बच्चे कभी पसन्द नहीं करते। अगर बच्चा किसी से लड़ता झगड़ता है तो मां के यह कहने पर कि हमारे घर में यह रिवाज नहीं कि दूसरों के साथ लड़ा-झगड़ा जाय, बच्चा स्वाभाविकतया लड़ना-झगड़ना बन्द कर देगा। इसका अभ्यास उसे ऐसा पड़ेगा कि वास्तविक जीवन में आकर वह सदा ही प्रसन्न प्रकृति वाला बना रहेगा।

★

–श्रीमती विजय लक्ष्मी इंडोनेशिया का दौरा करके वापस आ गई हैं।

बालक

बच्चे होते भोले भाले,
होते उनके ढंग निराले।
काम खुशी से वे करते हैं,
नहीं किसी से भी लड़ते हैं
हर दम खुश उनके मन होते
हृष्ट-पुष्ट उनके तन होते,
ये बालक प्रणवीर बनेंगे,
भारत का शुभ काम करेंगे,
बालक सबसे करते प्यार,
होते उनके उच्च विचार,
हम भी भारत के बच्चे हैं,
मां के वीर पूत सच्चे हैं।

–महावीरप्रसाद शर्मा

★

तारों के दीप

सांझ हुई जब अपने अपने,
हमने बिस्तर बिछवाए,
नील गगन में ऊपर दीपक,
परियों ने तब जलवाए।

तारों की किरणों में परियां,
पुस्तक पढ़तीं टक-टक-टक,
इसी तरह वे याद करेंगीं,
अपना पाठ सवेरे तक।

सुबह सवेरे हो जाएगा,
तारों का जब तेल खत्म,
सारे तारे बुझ जाएंगे,
सूरज चमकेगा चमचम।

★

—धर्मपाल शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ २२ का शेष)

था कहीं कहीं तो अब भी इस प्रकार के जूते पहना दिये जाते हैं ।

यहां के लोगों का मुख्य भोजन चावल है। यहां चिड़िया के घोंसलों का शोरबा भी बनायाया जाता हैं जो बहुत अच्छा समझा जाता है ।

माता-पिता की आज्ञा का पालन यहां के बालकों का प्रथम कर्तव्य माना जाता है । चीनी अपने पूर्वजों को पूजते हैं । वे मन्दिरों में उनके नामों की तख्तियां लगाते हैं और उन पर फूल आदि चढ़ाते हैं ।

यदि तुम्हें किसी चीनी परिवार में भोजन का निमन्त्रण मिले तो तुम्हें बड़ी खुशी होगी । किन्तु खाने के समय तुम देखोगे कि वहां तुम्हें चम्चों के स्थान पर लकड़ी की दो पतली डंडियां दे दी जाती हैं और उन्हीं से तुम्हें भोजन करना पड़ता है ! उन्हीं डण्डियों से तुम्हें चावल, मछली, मुर्गी और सब्ज़ी खानी पड़ेगी । ये सब सामान तुम्हारे सामने अलग २ प्यालियों में रख दिया जाता है।

इसी के साथ साथ तुम्हें आटे की मीठी गोलियां भी मिलेंगी जो बहुत स्वादिष्ट लगती हैं ।

चीनी तुम से हाथ नहीं मिलायेंगे, वे तुम्हें हाथ जोड़कर नमस्कार करेंगे या तुम्हारे आगे झुक जाएंगे ।

यहां वर्ष में बहुत से त्यौहार भी मनाये जाते हैं । इनमें पूरे चाँद का त्यौहार, कंडीलों का त्यौहार, अजगर-नावों का त्यौहार मुख्य हैं । चीनी मानते हैं कि यह अजगर चांद-सितारों आदि पर शासन करता है और ग्रहण होने पर उसे डस लेता है । उसे शांत करने के लिये ही यह त्यौहार मनाया जाता है ।

यहां पतंगबाज़ी का लोगों को बहुत शौक है और छोटे बड़े सभी पतंग उड़ाते हैं ।

चीन में चारदीवारी से घिरे लगभग ४००० नगर हैं । ये नगर एक दूसरे से बहुत मिलते हैं। यहां की राजधानी पीकिंग है । इसके चारों ओर एक विशाल दीवार थी । उसमें १६ दरवाज़े थे । परन्तु यह दीवार लड़ाइयों में काफी टूट गई है ।

चीन का सब से बड़ा बन्दरगाह कैन्टन है जो पर्ल नदी पर बसा है ।

चीन के दक्षिणी भागों में रेशम के कीड़े पाले जाते हैं । चीन का रेशम विश्व भर में प्रसिद्ध है । इसी क्षेत्र में चाय भी बहुत होती है ।

चीन की 'चीनी मिट्टी के बर्तन' संसार भर में प्रसिद्ध हैं । वे इतने सुन्दर होते हैं कि देखते ही बनता है ।

चीन की आबादी ४५७२४८२२१ तथा क्षेत्रफल ४४८०९९२ वर्गमील है । इस में तिब्बत की आबादी शामिल नहीं है । ★

—भारत सरकार १०० रेलवे इंजन और ५००० माल गाड़ी के डिब्बे विदेशों से मंगा रही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुटकुले

१–चिरागअली नामक एक तहसीलदार की अदालत में किसी गंवार का मुकद्दमा आया। संयोग से वह गंवार खुशी से फूलकर कुप्पा हो गया और कृतज्ञता भरे स्वर में तहसीलदार से बोला–'हजूर आप, जैसे क़ाबिल अफसर का नाम किस गधे ने चिराग-अली रख दिया, आप तो गैसअली हैं !'

२–बेटी-'मां तुम्हारा एक बाल बिल्कुल सफेद हो गया है।'

मां–'हां बेटी ! इसका कारण है तेरी शैतानी, जिसकी वजय से मैं बहुत तंग रहती हूं।'

बेटी–'तब तो मां बचपन में तुम बहुत शैतान रही होगी, क्योंकि नानी के तो सारे बाल सफेद हैं।'

३–यजमान-'पंडित जी ! सूर्यग्रहण का सूतक कब लगेगा ?

पंडित जी–(मुंह में पूरी का कौर डालते हुए)–'जब मैं खाना खाकर उठ जाऊंगा।'

यजमान–'पंडित जी, ज़रा मैं भी भोजन कर लूं, तब तक आप न उठिए !'

४–मुन्नू ने साइकिल वाले से साइकिल खरीदी और यह लिखा-पढ़ी करा ली कि एक महीने में जो कुछ टूटे-फूटेगा उसे वह बना देगा। एक दिन मुन्नू साइकिल वाले के पास पहुंचा और कहने लगा–'तुमने वादा किया था था कि एक महीने में टूटने-फूटने पर तुम बना दोगे।'

साइकलवाला–जी हां ! बताइए क्या टूटा है ?

मुन्नू–'मेरे दो दांत !'

एक पैसे का महत्व

भारत में लगभग ३५ करोड़ मनुष्य रहते हैं। ये ३५ कोटि मनुष्य यदि एक सप्ताह में एक पैसा रख छोड़ें तो एक वर्ष के अन्त में उनके पास १८,२०,००,००००० पैसे अर्थात लगभग २८,४३,७५,००० रु० हो जाएं।

इन पैसों को पृथ्वी की परिधि पर एक पंक्ति में बराबर रखें तो वे इतनी की इतनी ११ पृथ्वियों की परिक्रमा करने के उपरान्त भी भारत में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक बिछाए जा सकते हैं।

इन पैसों को यदि एक के ऊपर एक रखा जाए तो संसार की सबसे ऊँची चोटी गौरीशंकर के समान ऊँचाई की २७१८ चोटियां बनाई जा सकती हैं, अथवा सँसार में सबसे गहरे प्रशान्त महासागर के पेंदे से ये पैसे बिछाए जाएं तो वे पानी के ऊपर भी २७११ गौरीशंकर बना सकते हैं !

इस धन से ३९,५१७२२ स्वर्ण मुद्राएं मोल ली जा सकती हैं।

इस प्रकार एक पैसे से इतनी धन-राशि एकत्र की जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ ये बीबी के बाबू ! ★

(श्री शांत शास्त्री 'शालिहास' भिवानी)

ये बीबी के बाबू चले जा रहे हैं,
है क़द इतना लम्बा, कि बिजली का खम्भा
लचकती कमर देख होता अचंभा,
है आंखों पै चश्मा, न बूटों में तस्मा,
मगर हैट ओढ़े, चले आ रहे हैं,
ये बीबी के बाबू चले.......

है रंग इनका नीला मगर सूट पीला,
दबा पान मुंह में बने हैं रंगीला
'क्रमेलक' सी गरदन में नकटाई बांधे,
ये लनडोंग जैसे भगे जा रहे हैं,
ये बीबी के बाबू चले.......

फटी जेब खाली, न चेहरे पै लाली,
जो सूरत निराली, तो सीरत है काली,
ये अन्दर से रोते व ऊपर से हँसते,
जी, जूतों को घिसते, बढ़े जा रहे हैं,

छावनी से भागा।' (पृ० ३४ का शेष)

नैपोलियन–(बहुत ज्यादा प्रभावित होकर) बूढ़ी माँ ? ओह इसने मुझे अपनी प्यारी मां की याद दिला दी है । (पहरेदार से) इस नवयुवक को जाने दो !'

नैपोलियन (कुछ सिक्के अपनी जेब से निकालते हुए) 'इतना काफी होगा ? अपनी माँ को ये सिक्के देना और कहना कि एक दूसरी प्रिय माता के पुत्र ने उसके पास उसके प्यारे पुत्र को भेजा है।

ये बीबी के बाबू चले.......

ये बीवी से डरते, पिता से झगड़ते !
औ' आफिस में दिन भर हैं कागज़ रगड़ते
ये ए. बी. पढ़े हैं, जी ऐबी बड़े हैं !
न रोको इन्हें सौ सौ बल खा रहे हैं। यह....

हैं रिश्वतभी खाते, पकड़ में न आते।
जी, बालाई इनकम से दावत उड़ाते।
खुद खाते, हैं हैड को भी खिलाते।
इसी से तरक्की किये जा रहे हैं।
ये बीवी के बाबू चले.......

ये दफ्तर में बैठें ये कुर्सी पै लेटें।
बिना दाम, बिन काम बोलें न भेंटें।
डेली हों खुद लेट, 'पित्रन' पै ऐंठें।
जले भुनभुनाते ये भन्ना रहे हैं।
ये पत्नी को पूजें, नहीं उनसे जूझें
औ' फरमाइशें उनसे, हरदम ही बूझें
बेबी व उनके परस को उठाए
ये बीवी के पीछे चले जा रहे हैं।
ये बीबी के बाबू चले.......

करें जी हजूरी !
मगर ऐंठ पूरी
ख्वाहिश सभी
इनकी रहती अधूरी
कर्ज से दबे, फाइलों से लदे
ये जवानी में बूढ़े नज़र आ रहे हैं
ये बीबी के बाबू चले जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

★ बेचारा रिक्शा वाला ★

(ले० कु० सुरेन्द्र रानी बी० ए० जालन्धर)

'महलों में रहने वाले हमें तेरे दर से क्या ?' गाना चल रहा था और मैं रेडियो सैट पर सिर रखे सुनने में मस्त थी । गाने को भूल कर मैं ना जाने कल्पनाओं में घिरी क्या सोच रही थी ? गरीबी-अमीरी का कितना सुन्दर चित्र था ? एक एक करके मेरे मन में कितने ही विचार आने लगे ! भगवान भी क्या खेल खिला रहा है। कोई धनवान है तो कोई निर्धन ! किसी को आँसू पिलाता है तो किसी को फूलों पे सुलाता है । क्षण भर में बस्तियों को उजाड़ कर वीरान कर देता है और वीरानों में देखते ही देखते बहार आ जाती है । ऐसा जान पड़ता है मानो मानव बेजान पुतली की तरह उसके छिपे संकेतों पर नाच रहा हो ।

कौन जानता था कि १५ अगस्त १९४७ युगों २ से इकट्ठे रहते आ रहे भाइयों को एक दूसरे से अलग कर देगा । लाखों लोग घरों से बेघर हो जाएंगे ! मानवता रो रो कर हजारों के लुटे सोहागों और अनाथ बच्चों की अन्तर्वेदना प्रगट करेगी किन्तु उसे समझने वाला कोई न होगा........................सहसा मेरी विचार शृंखला 'मजुंल' ! की प्यारी ध्वनि कानों में पड़ते ही टूटी और मैं ने उठ कर द्वार खोला तो क्या देखती हूं कि एक युवती सामने खड़ी है ! एक निमन्त्रण पत्र मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा—'अंजला' जी ने भेजा है । अवश्य आइएगा । वह खुद नहीं आ सकीं इसके लिए उन्होंने क्षमा मांगी है ।' पूर्व इसके कि मैं उस से कुछ पूछती वह नमस्ते कह तेज़ी से पग उठाती हुई देखते ही देखते काफी दूर चली गई, मानो उसे बहुत जल्दी हो । निमन्त्रण पत्र खोला तो पता चला कि अंजला के जन्म दिन के उपलक्ष्य में उसी शाम को छः बजे पार्टी है । घड़ी की ओर देखा, साढ़े पांच बज रहे थे ।मैं जाने के लिये शीघ्र ही तैयार हो गई । मेरे पड़ोस में राजू रिक्शा वाला रहता है । मैं ने देखा उसकी रिक्शा घर के बाहर खड़ी थी । उसे बुला मैं सहेली के यहां चल पड़ी । समय बहुत कम था इस लिये मैं चाहती थी कि वह जितनी जल्दी हो सके मुझे वहां पहुंचा दे । वह पूरा ज़ोर लगा रहा था फिर भी ऐसा जान पड़ता था जैसे रिक्शा की गति मन्द हो ।मैं सहेली की पार्टी पर अन्य सहेलियों, उनसे होने वाली बातों, वधाई के साथ किए जाने वाले हंसी मज़ाक और उसे भेंट में मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले उपहारों और पार्टी में प्रस्तुत किये जाने वाले खाद्य पदार्थों के विषय में भूल कर उस रिक्शा वाले के विषय में सोचने लगी। चार आने के लिये वह इतनी गरमी में पांव से नंगा, शरीर पर फटे हुए कपड़े, इस पर भी बेफिक्र, अपनी धुन में मस्त ज़ोर लगाए जा रहा था। मुझे शीघ्र पहुंचना था इस लिये रिक्शा पर बैठ तो गई किन्तु ऐसा लग रहा था जैसे मेरी आत्मा ग्लानि से अन्दर ही अन्दर चीख रही हो और कह रही हो कि मानव को मानव की पीठ पर सवार होने का क्या अधिकार—इस लिये है कि वह निर्धन है और मैं उसकी रोटी के लिए उसे पैसे दे रही हूँ ? सचमुच मनुष्य पेट के हाथों मजबूर होकर कभी २ मानसिक अत्याचार सहने को भी उद्यत हो जाता है।

मुझे राजू पर दया आ रही थी। बाप उसका पहले ही मर चुका था। बूढ़ी माँ और दो छोटी बहनें–इन तीनों जनों का परिवार था उसका, जिनकी आजीविका के लिये वह मैट्रिक पास होते हुए भी मनुष्यों का बोझ 'गधा' बन ढोने को विवश हो रहा था। आज उसका पिता जीवित होता तो क्या यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर किसी ऊंचे पद पर न होता ? इसको इस अवसर से वँचित करने वाली है यह 'निर्धनता', जिसने उसे अपना बन्दी बना रखा है और वह सुबह से शाम तक रिक्शा चलाता है। खून पसीना बहा कर इतना भी नहीं कमा पाता है कि चार प्राणी अच्छा खा और पहन सकें। अभी न जाने और क्या कुछ सोचती कि सहसा मेरे बताए पते पर रिक्शा जा रुकी और मैं उसे पैसे दे सहेली के यहां जा पहुँची।

मेरा मन भारी २ सा था किन्तु वहां की चहल-पहल हँसी, मज़ाक और इधर उधर की बातों में कुछ समय के लिये मैं 'राजू' और उसके विषय में भूल गई। किन्तु जब रात को वापिस लौटी तो उसकी माँ को गली से बाहर सड़क के पास आंखों में किसी की प्रतीक्षा लिये खड़े देखा तो वहीं उतर गई और उससे पूछा, 'क्या बात है, इतनी घबराई हुई क्यों हो ?' 'अभी तक राजू नही आया। कभी का आ जाना चाहिए था उसे, न जाने क्या, हुआ आज अभी तक नहीं लौटा'। मैंने सान्त्वना देते हुए कहा, 'घबराती क्यों हो, आ जाएगा, बच्चा तो है नहीं, अभी नौ ही तो बजे हैं। हो सकता है कि सिनेमा की सवारियों के लिए किसी सिनेमा के बाहर खड़ा हो। चलो घर चलें। जैसे मेरे इन शब्दों ने इकलौते बेटे की माँ को धीर बन्धा दी हो, और क्षण भर के लिये आई अनिष्ट की आशंका दूर हो गई हो–वह मेरे साथ घर के लिये चल पड़ी।

अगले दिन मैं रेडियो स्टेशन से अपना प्रोग्राम देकर लौट रही थी कि इनकमटैक्स के

(शेष पृ० ३० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ्तर के करीब एक भीड़ लगी देखी। एक रिक्शा उल्टी पड़ी थी और एक तरफ एक लारी खड़ी थी। दो सिपाही कुछ पूछताछ कर रहे थे! कुछ लोग बातें कर रहे थे। सहसा मेरे कानों में आवाज़ आई, एक कह रहा था—'बेचारे के चोट बहुत आई है शायद ही बचे।' एक ने दूसरे से कहा, चलो, भई चलो, खा-मखाह् थाने और कचहरी में शहादतों के लिये खराब होना पड़ेगा।' यद्यपि मैं घायल रिक्शा वाले को न देख सकती थी और ऐसी दुर्घटनाएं आए दिन होती रहती थीं। फिर भी न जाने क्यों मेरा मन सशंकित सा था कि कहीं बेचारा 'राजू' तो नहीं? दूसरे ही क्षण मैं ने अपने मन को दुत्कारा कि भगवान इतना अन्यायी नहीं हो सकता। वह उसके परिवार की रोटी पैदा करने वाले को क्यों छीनने लगा? यही विचार ले मैं बिना कुछ पूछे घर को चली आई और अपने काम में लग गई! अभी थोड़ा ही समय मुझे बिस्तर पर लेटे हुआ था कि राजू के घर के सामने शोर सा सुनाई दिया। कोई व्यक्ति उसकी मां से कह रहा था—'राजू, की रिक्शा की टक्कर लारी से हो गई है और वह हस्पताल में घायल पड़ा है। यह सुन उसकी माता और बहनों के हृदय पर क्या बीती होगी? इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं। घर में हाहाकार मच गया और मां रोती चिल्लाती हस्पताल पहुंची। मैं घर से निकल 'राजू' की बहनों को सान्त्वना देने का निष्फल प्रयास करने लगी। उसकी अश्रुधारा में मानो उनके अन्त्र की पीड़ा ढल रही थी और वे चाहती थीं कि अपना सारा दुःख इस मार्ग से बाहर कर दें। कितना हृदय-विदारक वातावरण था। भगवान को दयालु समझने वाला भी क्षण भर के लिए यह कहने पर विवश हो जाता है कि यह कैसा न्याय है उसका जिसे न्यायकारी कहा जाता है। यह कैसी विडम्बना है उसकी दया की जिसे दयालु कहा जाता है। मैंने उन्हें एक काल्पनिक दुर्घटना का वृतान्त सुनाते हुए यह समझाने की चेष्टा की कि उस दुर्घटना में घायल बच गया था इस लिये राजू भी बच जाएगा। कितना मीठा झूठ था, भाग्य के साथ विद्रोह करने के लिये! और दूसरे दिन मैं ने देखा, पैसे लेकर दूसरों को रिक्शा में उनकी मंज़िलों तक पहुंचाने वाला राजू किसी दूसरे की रिक्शा में खामोश, कभी न टूटने वाली निद्रा में मां की गोद में घर आ रहा था-आखिरी मंज़िल की ओर—महा प्रयाण के लिए। मेरे हृदय से निःश्वास के साथ निकला, 'आह बेचारा राजू'—और निर्धनता के इस शहीद के लिये श्रद्धांजलि के रूप में मेरी आंखों से दो आंसू आप से आप टपक पड़े। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ प्रेरणा की प्रतीक्षा ★

(श्री महेन्द्र बावरा एम० ए०, एम० ओ० एल० जालन्धर)

एक बार एक स्नेही सम्पादक ने मुझ से कहा, 'मिस्टर बावरा ! पत्रिका के लिए कुछ लिखो ।' मुझे तब लिखने का अभ्यास कम था, यद्यपि सोचने का अधिक, मैं ने झिझकते हुए उत्तर दिय, 'अवश्य यत्न करूंगा, साहेब ।'

कहने को तो कह दिया, पर अब चिंता हुई कि क्या लिखा जाए ? बहुत कुछ पढ़ा था, सुना था और देखा भी था, किन्तु लेख का विषय क्या हो, यह समस्या थी । कभी समाज वाद, पूंजी वाद की ओर ध्यान जाता और कभी अध्यात्म वाद की ओर दृष्टि फिरती । राजनीति, धर्म, दर्शन तथा मनोविज्ञानादि विषय स्वयमेव विचारों की शृंखला में जुड़ते और टूट जाते ।

सायं हो गई, सूर्यदेव विश्राम के लिये अस्ताचल के शिखर पर पहुँच रहे थे, श्रीमती जी खाने के लिये आगृह कर रही थीं, गरमी बढ़ रही थी और मैं उलझन न सुलझने के कारण छटपटा रहा था, अचानक मुझे वालपोल के इन शब्दों की याद आई—

"वेट फार दि मामेंट आफ इंस्पीरेशन"

खाना खाने के बाद मैं अपनी कुर्सी पर फिर आ बैठा, अब मैं निश्चिंत होकर उस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था । आंख उठा कर देखा घड़ी दो बजा रहीथी, मैं कलम हाथ में थामे निस्तब्ध बैठा था, कई बार निद्रा देवी ने झकझोरा, पर व्यर्थ मैं चट्टान की तरह जमा हुआ था, चारों ओर नीरवता का साम्राज्य था, अंधेरी रात थी फिर भी मुझे किसी प्रकार की ईश्वर-प्रेरणा नहीं हो रही थी ।

इसी उधेड़बुन में रात बीत गई पांच बज कुके थे, प्रभात होने को था, मेरी घबराहट की कोई सीमा न थी ,मुझे—

अब प्रसिद्ध उपन्यास कार वालपोल पर भी गुस्सा आ रहा था, पश्चाताप भी हो रहा था कि ईश्वर प्रेरणा की प्रतीक्षा के बजाय कुछ और ही क्यों न लिख डाला ? 'अच्छा सम्पादक महाशय से काम का बहाना बना दूंगा या उनसे क्षमा मांग लूंगा' इस प्रकार के हीनता के विचार ले मैं उठने को ही था कि एक तीखी तथा ऊंची आवाज से मेरे कानों के छिद्र भर गये । साथ की बिल्डिंग में कुक्कुट राज बोल रहा था कुक्कड़ूं····कड़ूं शायद वह सोये हुओं को कह रहा था—'जागो'

पक्षी की भाषा में उत्थान व कर्मयोग का वह संदेश मुझे बहुत प्रिय लगा ।

चुटकुला— ★

चाचा—मैं ने तुम्हें कितनी बार बीच में बोलने से मना किया है ?'

भतीजा—'जी ! मैंने नहीं सुना ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ लकड़ी के बुरादे से नये उद्योग ★

मैडिसन (विस्कौन्सिन) : औद्योगिक अनुसन्धान के फलस्वरूप, अमेरिकी वैज्ञानिक लकड़ी के बुरादे और काठ-कबाड़ से नई नई उपयोगी वस्तुएं तैयार कर रहे हैं और जिन चीज़ों के बारे में यह समस्या रहती है कि उन्हें कहां और कैसे सम्भाला जाये, उनसे नये २ कारोबार शुरू किये जा रहे हैं।

लकड़ी की पतली परतों को सरेस से एक साथ मिला कर तथा अन्य नई विधियों के ज़रिये वैज्ञानिक घटिया किस्म की लड़की को समुद्रों में चलने वाले मज़बूत जहाज़ों, कोमल खाद्यन्त्रों, फाऊंटनपैन के खोलों और टैलिफोन रिसीवरों के निर्माण में इस्तेमाल करके उन धातुओं की बचत करते जा रहे हैं जिनकी दूसरे कार्यों के लिये बहुत अधिक आवश्यकता है।

अमेरिकी अनुसन्धान के परिणामों का स्वतन्त्र संसार के बहुत से देशों के वैज्ञानिकों द्वारा दिलचस्पी के साथ अध्ययन किया जा रहा है। हाल में जिन सिद्धान्तों को लेकर नये कार्य किये गये हैं, उनके बारे में देहरादून (उत्तरप्रदेश) की वन अनुसन्धान-शाला और कालेज को बराबर सूचना होती रहती है। देहरादून संस्था भारत की परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए इन विधियों का लाभ उठाने के लिये प्रयत्न-शील है।

यह अनुसन्धान मुख्यतः इस दृष्टि से किया जा रहा हैं कि लकड़ी काटने और चीरने से जो बहुत सा बेकार बुरादा या छीलन जमा हो जाता है, उसका किस प्रकार सदुपयोग किया जाये? जिस किसी भी पेड़ को काटा जाता है, उसका दो तिहाई अंश बेकार हो जाता है और जिस किसी लट्ठे को चीरा जाता है, उसमें से लगभग १५ प्रतिशत सिर्फ बुरादे के रूप में निकल जाता है। वनों के प्रबन्धक और संरक्षक बहुत समय से यह कह रहे हैं कि इन कारणों से संसार के बड़े-बड़े जंगल शीघ्र ही समाप्त हो जायेंगे।

बहरहाल, आज लकड़ी के बुरादे, लकड़ी के छोटे २ टुकड़ों तथा फेनोलिक रेजिन (एक रासायनिक मिश्रण) को मिला कर सस्ता प्लास्टिक तैयार किया जाता है। यह प्लास्टिक फाऊन्टेनपैन के खोल, टेलीफोन रिसीवर तथा अन्य बहुत सी चीजें बनाने के काम आता है।

लकड़ी के इन छोटे-छोटे टुकड़ों, बुरादे तथा अन्य बेकार अंश से उपयोगी चीज़ें ही तैयार नहीं की जातीं, बल्कि उनसे और भी बड़े फायदे उठाये जाते हैं। एक पीढ़ी पहले जिस लकड़ी को बढ़ई बेकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ कर फेंक देते थे, उसी को आज पहले से भी अधिक मज़बूत बना दिया जाता है।

यह कार्य लकड़ी की पतली परतों को एक साथ मिला कर किया जाता है और इन परतों को मिलाने के लिए नई प्रकार की सरेसें इस्तेमाल की जाती हैं। इनमें 'गौल्सेस १०' एक खास किस्म की सरेस है, जो सामान्य तापमान में लकड़ी को १० मिन्ट के अन्दर जोड़ देती है। इस पर पानी का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता और इससे जोड़ी गई लकड़ी दूसरी लकड़ियों से बहुत ज्यादा मजबूत होती है। अब घटिया किस्म की लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों को लेकर उससे सीधा या घुमावदार कैसा भी मज़बूत शहतीर तैयार किया जा सकता है। इस लकड़ी से सस्ते और मज़बूत जहाज़ तैयार किये जा सकते हैं।

मकान बनाने में धातु और लकड़ी को भी मिला कर इस्तेमाल किया जा सकता है। कंक्रीट और इस्पात के क्षेत्रों में हुई प्रगतियों के बावजूद, भविष्य में बहुत सी इमारतों के फर्श, दीवारें और छतें इसी ढंग से तैयार हुआ करेंगी।

बेकार लकड़ी से एक और चीज़ भी तैयार की गई है। इसे 'पेपरेग' कहते हैं। यह इतना सख्त होता है कि इसे धातु काटने वाले औज़ारों से ही काटा जाता है। 'पेपरेग' का प्रयोग हवाईजहाज़ों के पंखे, हवाईजहाज़ों की कुर्सियां तथा बड़े माल-वाही विमानों के फर्श तक बनाने में किया जाता है।

लकड़ी को आज जिन बहुत से कार्यों में इस्तेमाल किया जा रहा है, वह सब रासायनिक विधियों के कारण ही सम्भव हुआ है। रासायनिक विधियों का प्रयोग किए जाने से लकड़ी न तो फूलती-सिकुड़ती है और न उस पर दीमक, आग आदि का ही कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, यदि लकड़ी के सलीपर पर रासायनिक द्रव्य छिड़क दिया जाए तो उसकी आयु सम्भवतः ६ वर्ष और बढ़ जाएगी।

और मोटरगाड़ियों के इस युग में, एक नई प्रगति यह हुई है कि अब घोड़ों की नाल लकड़ी की लुगदी से बने कागज़ और सीमेंट को मिला कर बनाई जाने लगी है।

यह भी खूब रही!

एक पादरी साहेब गिरजाघर में उपदेश दे रहे थे। आधा उपदेश खत्म हो चुका था तभी उन्होंने अचानक गिरजाघर की खिड़कियों की तरफ देखा और छोटे पादरी को संकेत से बतलाया। उन्होंने कहा, 'देखो भाई खिड़की खोल दो?'

छोटे पादरी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, खिड़की क्यों खुलवाते हैं पादरी साहेब बाहर तो बर्फ पड़ रही है और ठंडी हवा से हाथ पांव ठिठुर रहे हैं।

'यह तो मैं जानता हूं' पादरी साहेब बोले, 'लेकिन जितने भी वैज्ञानिक हैं, वे इस बात को मानते हैं कि कमरे की खिड़कियां बन्द कर के सोने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक घटना—

★ नैपोलियन और अंग्रेज़ कैदी ★

(श्री सत्यपाल डौले; झांसी)

नैपोलियन महान् एक समय फ्रांस का बादशाह था। अपने समय का वह सबसे बड़ा जनरल था। अपने अनेक उत्तम गुणों के साथ वह इस महानता तक धीरे धीरे उठा।

उसकी मां लिटिजिया बोनापार्ट का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। यद्यपि वह साधारण घर की थी तथापि वह चतुर और योग्य थी। नैपोलियन का कृतज्ञ हृदय उसे कभी नहीं भूला।

एक छोटी सी कहानी हमें बताती है कि नैपोलियन अपनी मां को कितना प्यार करता था। एक समय नैपोलियन फ्रांस के उत्तर में इंगलिश-चैनल के नज़दीक डेरा डाले था ! वह इंग्लैंड पर हमला करने की योजना बना रहा था। इस योजना में वह कभी सफल नहीं हुआ। उसकी छावनी में बहुत से कैदी थे, जिनकी सावधनी से देख-भाल की जाती थी जिससे वे भाग न जाएं।

एक दिन प्रातः काल एक पहरेदार ने एक नवयुवक अंग्रेज़ कैदी को बादशाह के सामने पेश किया। उसने कहा—'श्रीमान, कल आधी रात में यह आदमी डेरे से भाग गया था और एक छोटी सी नाव में खाड़ी को पार करने की तैयारी कर रहा था।'

नैपोलियन—'नवयुवक, क्या तुम जानते हो कि कौन सी सज़ा तुम्हारी राह देखती है ?'

कैदी—'मौत, श्रीमान !'

नैपोलियन—'ओह ! तब तुम इसे जानते हो। परन्तु क्या तुम यह भी जानते थे कि समुद्र के किनारे पहरेदारों को धोखा देना कितना कठिन है !'

कैदी—'श्रीमान् मैं इसे भी जानता था।'

नैपोलियन—'तब तुमने इसके लिये प्रयत्न क्यों किया ?'

कैदी—खामोश

नेपोलियन—(गुस्से से) 'तुम्हारा क्या नाम है ?'

कैदी—'जान राबिंसन श्रीमान, और मैं ससेक्स का रहने वाला हूं।'

नैपोलियन— परन्तु तुमने भाग जाने का क्यों प्रयत्न किया ?'

कैदी—बताता हूं श्रीमान। मेरी वहां बूढ़ी मां है, जो इस संसार में बिल्कुल अकेली है। मुझे विश्वास है कि वह दुख से मर जाएगी यदि वह मुझे नहीं देख लेगी। इस विचार ने मुझे पागल कर दिया और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप जानते हैं?

★(८) रेलवे

(१) भारत में ७२००० रेल्वे स्टेशन हैं।

(२) प्रथम भारतीय रेल १८५३ में बम्बई और कल्याण के बीच ३२ मील बनी थी

(३) भारत संसार में चतुर्थ नम्बर में है। रेलों की लम्बाई ३३००० मील के लगभग है।

(४) भारत की रेलों के पटरियों की बीच की दूरी ५ फीट ६ इंच, संसार में सब से अधिक है।

(५) E. I. R. में सब से अधिक मनुष्य यात्रा करते हैं।

(६) पहली Air Conditioned रेल १८२५ में दिल्ली बम्बई के बीच चली।

★(९) सिनेमा

(१) १८९६ में भारत में प्रथम मूक सिनेमा बना।

(२) अप्रैल १९१३ में प्रथम भारतीय चित्र "हरीश्चन्द्र" बम्बई में दिखाया गया।

(३) आलम आरा प्रथम बोलता चित्र था।

(४) 'Court Dancer' प्रथम अंग्रेज़ी चित्र भारत में बना।

(५) १९३१ में जर्मनी से प्रथम रंगीन भारतीय फिल्म 'सेरेन्ध्री' रंग कर आई।

(६) भारत फिल्मों में संसार का दूसरा देश है जहां प्रतिवर्ष लगभग २७५ चित्र बनते हैं।

कौन रोता है गगन में ?

(श्री यशपाल यश 'प्रदीप' सहारनपुर)

कौन रोता है गगन में?
ऊषा की लालिमा में........
अलि, सुधा पान कर झूमता है
मस्ताना बन घूमता है।
लुटा अपना सुहाग........
कौन रोता है कुंज बन में?
कौन रोता है गगन में??
निशा की कालिमा में.......
दीप शिखा, अधर पान कर गाती है
मचलती है, इठलाती है।
जला अपना प्रेम........
कौन रोता है दीपांगन में?
कौन रोता है गगन में??
संध्या की नीलिमा में........
चन्द्र दृग पर खोल मुस्काता है
नाचता है, इतराता है,
खा जलते अंगारे.......
कौन रोता है कानन में?
कौन रोता है गगन में??

चुटकुला—

★

बड़े मियां—एक पिंजड़ा चाहिए।

दुकानदार—यह देखिए, और भी बहुत से हैं।

बड़े मियां—ज़रा जल्दी कीजिए मुझे रेल पकड़नी है।

दुकानदार—मगर मेरे पास तो चूहे पकड़ने के पिंजड़े हैं, रेल पकड़ने के नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

School Registers & Forms

REVISED PRICELIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4	Daily Attendance Register	2/4
5.	Teachers' Attendance Reg.	1/12
6.	Examination Result "	1/ 2
7.	Pay Bill Register ...	1/12
8.	Library Issue Reg. ...	1/12
9.	Library Stock Register ...	1/12
10.	Class Lib. Issue Note Book	-/12
11.	Sports Issue Reg. ...	1/12
12.	Sports Stock Register ...	1/12
13.	Correspondence Register ...	1/12
14.	Admission and with drawal Reg. (*big size*) ...	2/-
15.	School Contingencies Reg.	1/12
16.	School Property Reg. ...	1/12
17.	Headmaster's Order Book	2/12
18.	Union Fund Register ...	2/12
19-20	Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23	School Discharge Certificate file	2/12
24-26	School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27.	Provincial Certificate forms per 100	212
28.	Log Book	2/12
29.	Statistical Register ...	2/12
30.	Cash Book	2/12
31.	Grant-in-aid forms per set	2/12
32.	Fee Account Register ...	2/12
33.	Fund Register	2/12
34.	Letters Despatched Reg.	1/12
35.	Letters Received "	1/12
36.	Stock Register	1/12

For other items write to **us.**

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on *a/c* of rise in paper prices

Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, **JULLUNDUR CITY**

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य–१ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना, उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना।

(२) पञ्जाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना (६) शिक्षा सुधार विशेषत: स्त्री शिक्षा में, के लिये आवाज़ उठाना। (७) प्रगति शील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम–(१) 'प्रकाश' प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहां से भेजा जाता है। कारणवश देर सबेर सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० अग्रिम नियत है। वी० पी० से ७।।) है। विदेशों में वी० पी० नहीं जाता। पेशगी १५ शि० भेजें।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ।।= के डाक टिकट भेजें।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकती है।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाने चाहिएं। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिये भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अश्लील न हों और जिनके दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न हैं।

	1 पृष्ठ	½ पृष्ठ	¼ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०) रु०
३ बार	८०) "	४५) "	२६) '
६ बार	१५०) "	८०) "	५०) "
१ वर्ष	[illegible]	[illegible] "	१००)"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★

(१) अमेरिका के प्रधान आइज़न हावर ने विलार्ड वाईडर वर्ग नामक अध्यापक को 'टीचर आव दी यीअर' की उपाधि दी। उसका पुत्र ग्रेगोरी प्रधान से वार्तालाप कर रहा है।

(२) यह चित्र तोते के पिंजरे का नहीं, यह स्विटज़रलैंड के बने एक क्लाक का है। (दाईं ओर) बाईं ओर एक वाद्य यन्त्र है।

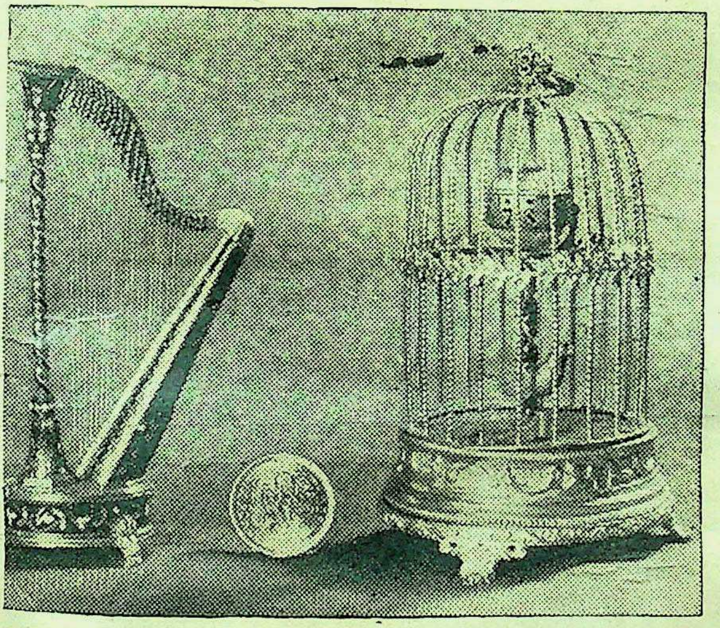

नीचे

(बाईं ओर से) १. वर्षा के कण कई प्रकार के होते हैं गोल भी और ऐसे भी जैसे कि चित्र में दिखते हैं।

(२) कोरिया में युद्ध तो बन्द हो चुका है किंतु उत्तरी कोरिया में युद्ध सामग्री बाहर से लाई जा रही है।

(३) आम विचार कि सांड़ लाल रंग से क्रोधित होता है निराधार सिद्ध हुआ है।

★

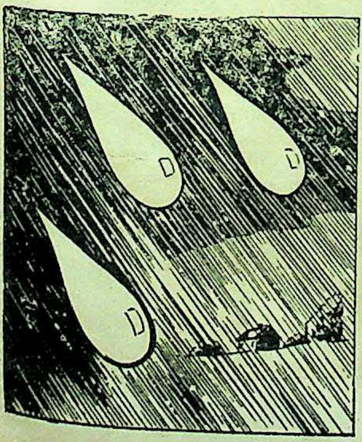

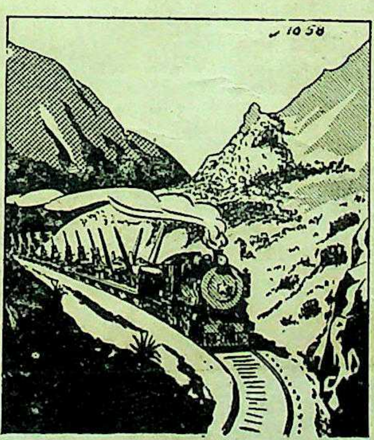

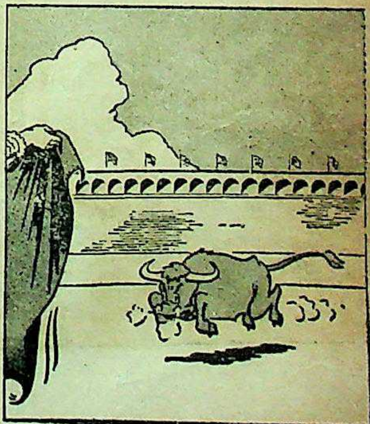

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालम्बो प्लान अन्तर्गत ग्रांट मैडिकल कालेज बम्बई के पैथौलोजी के प्रोफैसर एच० आई० थाला लण्डन में ब्लड ट्रांस फ्यूज़न केन्द्र का निरीक्षण करते हुए। नीचे का चित्र है मास्को के एक स्कूल की लैबारेटरी का।

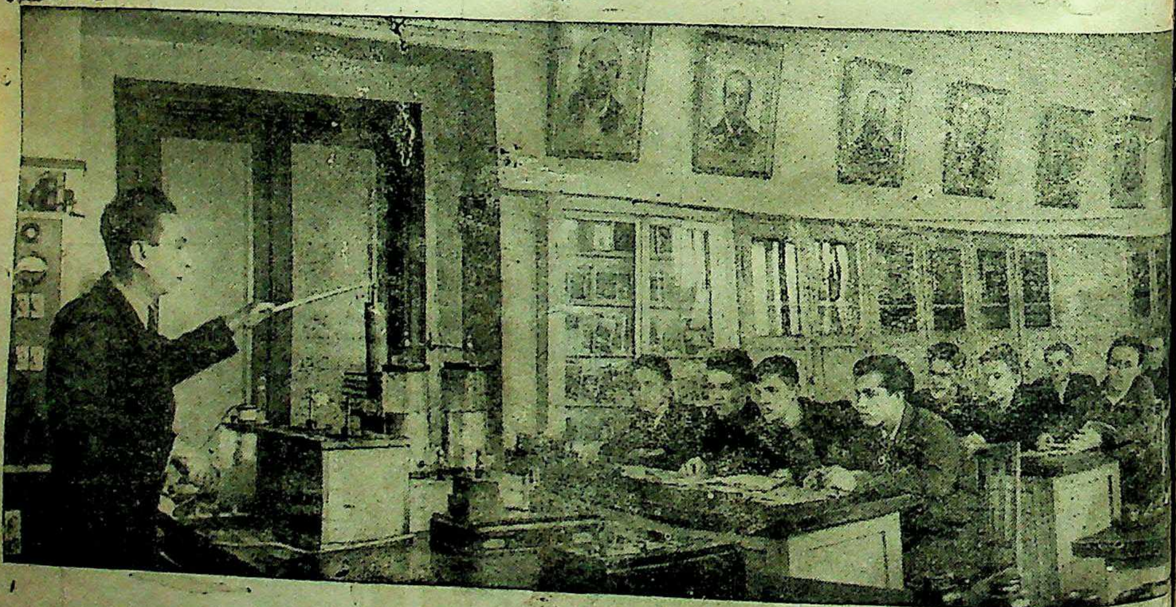

प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, १३७ चहार बाग, जालन्धर में श्री लाल चन्द हितैषी द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Approved for use in Schools in Punjab, U P, Bihar Himachal, Pepsu, Bhopal Hyderabad

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति ।=)

७ अक्तूबर

१९५४.

गुरुकुल पत्रिका

लंडन में भारत की नई हाई कमिश्नर

श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित

जिन्हें श्री खेर के स्थान पर नियुक्त किया गया है । संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रधान पद रिक्त कर नया पद सम्भालने शीघ्र लण्डन जा रही हैं ।

सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी

Approved for Court Notices in Punjab.

THE "Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

JULLUNDUR CITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जहाज़ों के एक रूसी कारखाने के एक टर्नर-ग्रेगोरी की ५० वर्षीय सेवाओं की सराहना में समारोह।

★

उसकी सेवाओं के उपलक्ष्य में एक जहाज़ उसके नाम से वोल्गा में उसी दिन तैराया गया। रूस में मज़दूरों का मान इस प्रकार किया जाता है।

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, हिमाचल, ...मु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिये स्वीकृत।

★ प्रकाश ★

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८ क्रमांक ६२ | जालन्धर ७, अक्तूबर, १९५४. | भाग ६ अंक १० हिन्दी

कहां क्या है ?

कविताएं — पृष्ठ

१. हो न जाए जब तक राम राज्य ···३
२. वैदर्भी वन त्याग 'शालिहास' ···८
३. एक बालक की प्रार्थना 'राजन' १०
४. रूबाइयां संतोषी १३
५. हम उसे इन्सान कह सकते नहीं १३
६. मेरा गीत तन्मय १४
७. शालिहास हासावलि 'शालिहास' १८
८. सावधान रहना त्यागी २०
९. जीवन निर्बाध ३०
१०. जीवन गीत नीलिमा ३३
११. गांधी जयन्ती शालिहास ३६

कहानियां

१. पर नन्द न लौटा 'द्रष्टा' २०
२. और हाथ माथे पर धरा रह गया २७
३. अफसर और किसान २६

लेख

१. बच्चों को बुरी आदतों से बचायें ११
२. जवार से पैट्रोल पैदा किया जाएगा १२
३. दोगले बीज से मक्का की उपज बढ़ेगी १५
४. खूब हैं लण्डन के रहने वाले १६
५. कुत्तों की मनोरंजक कथाएं २२
६. महा पुरुषों के जीवन की घटनाएं २३
७. देहली का लाल किला २४
८. नये आविष्कार ३१
९. गेहूं के भूसे से कागज़ बनेगा ३२

★

हो जाए न जब तक रामराज्य

बापू के वरदानों से, तप-त्याग-तेज बलिदानों से
खोई स्वतन्त्रता पाई है, रूठी आज़ादी आई है,

आशा, उत्साह, उमंग, गंग बहती अविराम है—
हो जाय न जब तक राज राज्य, आराम हराम है।

सब सत्य अहिंसा पालक हों; दारिद्रय-दुख अब घाकल हों
सुख शांति समृद्धि-सुधा बरसे, तन पोषण को न कोई तरसे

भारत गत गौरव प्राप्त करे, करना वह काम है—
हो जाय न जब तक 'रामराज्य' आराम हराम है।

गणतन्त्र लोक हित ममता हो, स्वातन्त्र्य, बन्धुता समता हो
नैतिकता की जय-ज्योति जगे, पौरुष प्रताप; प्रभुता उमगे

जन सेवा का कल्याण कर्म होता निष्काम है—
हो जाय न जब तक रामराज्य आराम हराम है।

मन, वचन कर्म में शुद्ध रहें, सब भांति प्रवीण प्रबुद्ध रहें
दुर्भाव, दम्भ भ्रम-भूत भगे सद्भाव-स्नेह-रस राष्ट्र पगे

शासक शासित सहयोग-योग बनता सुखधाम है—
हो जाय न जब तक 'रामराज्य' आराम हराम है।

—श्री हरिशंकर शर्मा,

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा समाचार

—२३ सितम्बर को पठानकोट के गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल के एक कमरे की छत गिर जाने से एक अध्यापिका और १५ छात्र ज़खमी हो गये।

—पंजाब, पैप्सु और हिमाचल प्रदेशों के लिये एक संयुक्तहाई पावर कमेटी नियुक्त की जा रही है जो सैकण्डरी शिक्षा के दुबारा आरगेनाइज़ किए जाने के सम्बन्ध में सुझाव देगी। इस कमेटी के सदस्यों में तीनों प्रदेशों के शिक्षा मंत्री एजुकेशन डाइरैक्टर तथा वाइस चांस्लर पंजाब यूनिवर्सिटी सम्मिलित होंगे। इस कमेटी के सैक्रेटरी मि० ए० सी० जोशी असिस्टेंट डाइरैक्टर आव एजुकेशन पंजाब होंगे।

—इसी मास से चंडी गढ़ में जो सीनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज खुला है उसमें प्रभाकर, ज्ञानी और शास्त्री पास व्यक्तियों की ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई है। १५ अक्तूबर तक प्रवेशार्थ आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये हैं। अनुभवी अध्यापकों को प्रवेशार्थ सुविधा मिलेगी। आवेदन-पत्र तथा नियमावलि ग्यारह आने मनी आर्डर से प्रिंसिपल सीनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज को भेज कर मंगा लें।

—बम्बई में सारे भारत के सैकण्डरी टीचरों का एक सम्मेलन आगामी मास हो रहा है जिसमें आल इंडिया एजुकेशनल कान्फ्रेंस कलकत्ता द्वारा नियुक्त २५ सदस्यों की कमेटी की रिपोर्ट पर विचार किया जायेगा। इस रिपोर्ट में अध्यापकों के वेतनों के स्केलों के बारे में सुझाव दिये गये हैं।

—डिस्ट्रिक्ट बोर्ड टीचर्ज़ यूनियन की एक मीटिंग चौ० उदय सिंह मान एम० एल० सी० की अध्यक्षता में रोहतक में हुई जिसमें निश्चय किया गया कि यूनियन का एक साधारण अधिवेशन अक्तूबर के दूसरे सप्ताह में रोहतक में बुलाया जाए जिसमें डाइरैक्टर आव एजुकेशन डा० त्रिलोचन सिंह को निमंत्रित किया जाएगा।

अपनी बोली 'च

★ प्रेम करन लई हड़ताल ★

इक जापानी सिल्क फैक्टरी 'च कम करन वालियां तेरह हज़ार कुड़ियां ने तिन महीनियां तोड़ी हड़ताल कीती रखी। तुसीं समझदे होवोगे कि ओन्हां एह हड़ताल तनखाहां वधवान वास्ते कीती होवेगी जां एहो जिही कोई होर मंग कीती होवेगी; पर नहीं। ओन्हां ते फैक्टरी दे मालिकां वल्लों कुझ पाबन्दियां लगियां होइयां सन, जिवें—(१) नौकरी करदे होइयां ओह लिपस्टिक, पाऊडर वगैरा श्रृंगार दियां चीज़ां इस्तेमाल करके फैक्टरी 'च नहीं सन आ सकदीयां। (२) किसे नूं फैक्टरी दे पते ते प्रेम पत्र प्राप्त करन दा इख्तियार नहीं सी। (३) ओह फैक्टरी दे किसे पुरुष नाल प्रेम सम्बन्ध स्थापित नहीं सन कर सकदियां। (४) सवेरे कम ते आ के ओन्हां लई इक बौध प्रार्थना गीत गाना ज़रूरी सी।

एन्हां पाबन्दियां दे विरुद्ध ओन्हां हड़ताल कर दिती ते लगातार तिन महीने तक जारी रही। आखीर 'च हड़तालियां दी विजय होई। फैक्टरी दे मालिकां ने एह सारियां पाबन्दिया हटा दित्तियां। हुन ओह कुड़ियां श्रृंगार भी कर सकदियां ने ते फैक्टरी दे पते ते प्रेम पत्र भी मंगा सकदियां ने ते सब तों वड्डी गल एह कि ओह फैक्टरी दे पुरुषां नाल प्रेम भी कर सकदियां ने। हुन ओन्हां नूं प्रार्थना दा बौध गीत भी नहीं गाना पयेगा। हुन तोड़ी आम ख्याल एह सी कि मुंडे कुड़ियां नूं तंग करदे ने या छेड़ छाड़ दी पहल मरद करदे हन पर जापान दियां कुड़ियां दी हड़ताल ने एह भरम दूर कर दिता है तां साबित कर दिता है कि अज दी कुड़ी उच्छृंखल हो रही है ते पतन वल जांदी पई है। पर विनाश ते दौड़ रही जवानी नूं कोई रोक भी नहीं सकदा ते अन्ही होन करके जवानी आप कुझ देख वी नहीं सकदी एसलई भाइया रेलू सिवाये दन्दां विचकार उंगली दे के बिट बिट तक्कन दे होर कर भी की सकदा है?

★ —भाइया रेलू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार-सार

—श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित को लण्डन में हाई कमिश्नर बना कर भेजा जा रहा है।

—इंटरनैशनल कोर्ट हेग में मि० बी० आर राव की मृत्यु से खाली हुई जगह पर डा० पाल का नाम तजवीज़ किया गया है। पाकिस्तान के ज़फरुल्ला भी उम्मीदवार हैं।

पंजाब सरकार ने एक ५ वर्षीय योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत ३७ करोड़ रुपये विकास की योजनाओं पर पर व्यय किये जाएंगे।

—पंजाब सरकार ने लुधियाना में फर्स्ट क्लास ज़राइती कालेज स्थापित करने के लिये केन्द्र से ससहायता मांगी है।

राजपुरा में २० लाख रु० से साइकलों का एक कारखाना स्थापित किया जा रहा है जिस में ५० हज़ार साइकल हर साल बनेंगे।

—भारत सरकार विदेशों से १०० इंजन और ५००० वैगन मंगा रहा है।

—पाकिस्तान ने भाकड़ा नहर के जारी होने और आर्थिक और एक्साइज़ एण्ड टैक्सेशन के अधिनियम काश्मीर पर लागू कियेजाने पर विरोध किया था जिसे भारत सरकार ने रद कर दिया है।

—पाकिस्तान काश्मीर का मामला पुनः सुरक्षा समिति में उठाने जा रहा है। यदि ऐसा हुआ तो रूस वीटो द्वारा इसे उठने से रोक देगा।

—प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू चीन जा रहे हैं।

—इंडोनेशिया के प्रधान मंत्री पिछले दिनों दिल्ली आये। उनका स्वागत किया गया। उनके और पं० जी में महत्व पूर्ण मामलों पर बात चीत हुई।

—पुर्तगेज़ सरकार ने कहा है कि वह गोआ, दमन और देव की भारतीय बस्तियां नहीं छोड़ेगी और प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल ने घोषणा की है कि ये बस्तियां भारत का अंग हैं इसलिये इन्हें एक न एक दिन भारत में शामिल हो के रहना है।

फूल और कांटे

(पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० पाकिस्तान को भारत ने जो ५५ करोड़ रुपया कर्ज़े में दिया था क्या पाकिस्तान ने वह सूद सहित लौटा दिया है? -कृष्णगोपाल अमृतसर।

उ० सूद की कौन कहे मूल धन ही लौटा दे तो गनीमत है। यही नहीं बटवारे की Liabilities का धन, U. N. O. में उसकी मैम्बरी की दी गई फीस, और उसे मुसीबत के समय में भेजे गये गेहूं का मूल्य तक तो प्राप्त नहीं हुआ। उसे जो कोयला भेजा जाता है उसका भी पूरा मूल्य शायद ही प्राप्त होता हो। -सं०

प्र० हमने सुना है कि पंजाब सरकार ने पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये १२ हज़ार रुपये का कपड़ा भेजा है। क्या यह सत्य है? —मनोरमा, देहली।

उ० भेजा जाएगा, यह सर्वथा सत्य है। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि भारत वासी पड़ोसी के दुःख पर सुखी नहीं दुखी होते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि पाकिस्तान वाले इस से कोई सबक़ सीख लें। -सं०

प्र० हमारे प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू चीन क्यों जा रहे हैं? -सुन्दर लाल, लखनऊ।

उ० वहां के मुख्य मन्त्री तथा अन्य नेताओं को मिलने जा रहे हैं। -सं०

प्र० पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लोक सभा में कहा है कि निकट भविष्य में भारत दुनिया का चौथा बड़ा राष्ट्र समझा जायेगा—इससे उनका क्या अभिप्राय है। -मोहिनी, अम्बाला।

उ० यही कि अब तक अमेरिका रूस और चीन इन तीन देशों को दुनिया के बड़े देश समझा जाता रहा है किन्तु अब इनके साथ एक चौथे बड़े देश भारत का नाम भी लिया जाया करेगा। -सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

एक बड़े अभाव की पूर्ति

पंजाब सरकार ने सीनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज में शास्त्री, ज्ञानी तथा प्रभाकर अध्यापकों के लिये ट्रेनिंग क्लास खोलकर एक देर से अनुभव किये जाने वाले बड़े अभाव की पूर्ति कर स्तुत्य कार्य किया है किन्तु क्या ही अच्छा होता यदि इसकी व्यवस्था चंडीगढ़ की अपेक्षा ट्रेनिंग कालेज जालन्धर में की जाती।

एक नई शिक्षा पद्धति

श्री भौंसले एक अवकाश प्राप्त भारतीय सैनिक अधिकारी हैं। उन्होंने अपने ढंग की एक अनूठी शिक्षा संस्था देहली में खोल रखी है। उसकी शिक्षा पद्धति अन्य स्कूलों में प्रचलित पद्धतियों से सर्वथा भिन्न है। उनकी इस नवीन पद्धति को 'भौंसले शिक्षा पद्धति' का नाम दिया गया है। इसकी दो विशेषताएं हैं।

(१) सैनिक जीवन जैसा नियंत्रण।

(२) धार्मिकता को स्थान।

केन्द्रीय सरकार ने सिद्धांत रूप में इस पद्धति को स्वीकार कर लिया है और परीक्षण के तौर पर एक वर्ष के लिये देहली राज्य के स्कूलों में प्रचलित करने का निश्चय किया है। इस पर होने वाला व्यय केन्द्रीय सरकार सहन करेगी। हम उत्सुकता से इस परीक्षण के परिणामों की प्रतीक्षा करेंगे।

अध्यापकों के वेतन

बदलते हुए हालात ने न केवल अध्यापकों को अपनी स्थिति के प्रति जागरूक कर दिया है बल्कि प्रत्येक विचार-शील व्यक्ति को यह सोचने पर विवश कर दिया है कि वास्तव में अध्यापकों के वेतन का स्तर ऊंचा किया जाना चाहिए। आगामी मास बम्बई में भारत भर के सैकण्डरी टीचरों की एक कान्फ्रेंस हो रही है जिसमें आल इंडिया एजुकेशन कान्फ्रेंस कलकत्ता द्वारा नियुक्त २५ व्यक्तियों की एक कमेटी द्वारा वेतनों के स्केलों के बारे में दिए गये सुझावों पर विचार किया जावेगा। आशा करनी चाहिए कि बम्बई अधिवेशन के निश्चयों को सभी अध्यापकों की स्वीकृति प्राप्त होगी और सभी राज्यों की सरकारें उन स्केलों को अपने यहां चालू कर देंगी।

भारत में शिक्षा प्रगति

भारत की ५ वर्षीय योजना के अन्तर्गत शिक्षा को पर्याप्त प्रगति मिल रही है। गत तीन वर्षों में ६८.५ करोड़ रुपये इस दिशा में भारत सरकार व्यय कर चुकी है। गत वर्ष अगस्त मास में पढ़े लिखे बेकारों को काम पर लगाने के उद्देश्य से गांवों में नये स्कूल खोलने का निश्चय किया गया था। तब से मार्च ५४ तक इस एमर्जेंसी स्कीम के आधीन २८८८० देहाती टीचरों तथा १८०८ सोशल एजुकेशन वर्करों की नियुक्ति हो चुकी है। ५ वर्षीय योजना में ६४७१ बेसिक स्कूल खोलने का निश्चय हुआ था। १९५३ में इन में से २१७९ खुल चुके हैं। इन सब आंकड़ों से शिक्षा के क्षेत्र में हो रही प्रगति का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है।

भूल सुधार

हमें खेद है कि भूल से पृष्ठ ८-६ के स्थान पर १९-२० और १९-२० के स्थान पर ८-६ छप गये हैं। पाठक कृपा करके नोट कर इस भूल का सुधार कर लें। ★ (सम्पादक)

—राजनीतिक पीड़ितों के बच्चों से उत्तर प्रदेश के स्कूलों में फीसें नहीं ली जाएंगी।

—ज़िला हिसार में स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या १२०० से बढ़कर ५००० हो गई है।

—रोहतक गवर्नमेंट कालेज का बी० ए० का छात्र हरचरण सिंह बटाला में नहर में डूब गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी 'पर नन्द न लौटा' का शेष
(कहानी पृ० २०-२१ पर)

गई । तथागत का उन्नत शरीर दृष्टि पथ में आ अटका। तथागत शाँत गम्भीर मुद्रा से नेत्र नीचे किये लम्बे डग भरते हुए चुपचाप चले जा रहे थे, भिक्षा पात्र रिक्त था। नन्द की सारी चेष्टा कुण्ठित हो गई; तूलिका शिथिल पकड़ से छूट फर्श पर गिर पड़ी। सुन्दरी पति की अप्रत्याशित भावभंगी देख, घबरा कर खड़ी हो गई। पूछा—'उद्वेग कैसा, आर्यपुत्र ?' फिर जो खिड़की की ओर दृष्टि गई तब उसने तथागत को रिक्तपात्र जाते देखा।

सुन्दरी के अनुराग—बन्ध भी शिथिल हो गए। तथागत द्वार पर आए दहलीज़ में भिक्षापात्र बढ़ा, गृहस्थ को करणीय उपदेश कहा, पर किसी ने उन पर ध्यान न दिया। गृह का स्वामी प्रेयसी पत्नी के शृंगार मंडन में रत था, दास-दासी उनके विलासार्थ अंगराग अनुलेपन मण्डनादि के विविध उपकरण प्रस्तुत करने में व्यस्त थे। कौन सुनता ?

धीर-गम्भीर स्मित हास्य के धनी बुद्ध चुपचाप चले गए। रिक्तहस्त भूखे तथागत को अपनी दहलीज़ से लौटते देख भाई का अन्तर आकुल हो उठा। नन्द और सुन्दरी की आंखें चार हुईं, चारों में नीर भरा था।

नन्द ने कहा—'सुन्दरी आज तथागत के भिक्षा का दिन था।

नन्द के स्वर में मथी व्यथा थी।

सुन्दरी का मण्डन अपूर्ण था, उसमें विघ्न होना अशुभ का परिचायक था; सौभाग्य की चिन्ता मंडित सौन्दर्य पर सर्पवत कुण्डली मार बैठी। तथागत की अवमानना का कारण फिर अपने आपको जान ग्लानि हुई। नन्द को विशेष उत्तर न देकर उसने केवल धीरे से पूछा—'फिर ?' शंकित स्वर उसके भय का परिचायक था।

नन्द ने सुन्दरी की सकारण शिथिलता देखी। उसके दोनों कन्धों को पकड़े आतुर स्वर में वह बोला—'जाने दो मुझे क्षणभर को, प्रिये, जाना ही होगा। तथागत को मनाकर निमिष में अभी लौटा आता हूं। मंडन में यह विघ्न क्षमा करो।'

'जाओ, प्रिय, राग-रंजन से भिन्न हैं तथागत के वे दिव्य चरण। उन्हें लौटा लाओ। पर देखो, इसके पहले कि मेरे कपोलों के गीले आलेख सूख जाएं, लौट आना।' स्वर राग शिथिल था, संकोच-विह्वल। अघटित अशुभ की आशंका को दबाती याचना स्वर की राह फूटी पड़ी थी।

प्रकोष्ठ से उतरते हुए दोनों के अपराधी जैसे नन्द ने सुन्दरी की ओर देखा, उसका अन्तर विलख उठा। गली से बार-बार मुड़ कर उसने प्रिय के सुलगते अन्तर को देखा। फफकते बिलबिलाते अन्तर को दबाए सुन्दरी नन्द को देखती रही। व्यथित काया निःस्पन्द थी, रोम रोम, में याचना थी। आंखों में बड़ी २ बूंदें टंगी ही टंगी सूख गईं।

नन्द ने अनुनय की। तथागत ने हंस दिया। उसने कंधे पर हाथ रखा, हाथ में भिक्षा-पात्र पकड़ा दिया। संघ के निवास की ओर बढ़ चले। आकुल अंतर नंद भिक्षापात्र लिये चुपचाप पीछे-पीछे चला। आकुल था कि तथागत आज निराहार रहे।

उधर हृदय मथा जा रहा था। टीस उठ रही थी। सुन्दरी को शृंगार के बीच ही छोड़ आया था। उसने कहा था—'इसके पहले कि मेरे कपोलों के गीले आलेख सूख जाएं लौट आना।' पर लौटे कैसे ? भिक्षापात्र तथागत के हाथ में देने की दुःशीलता कैसे करे ? विलास रत होकर वह उपेक्षा का घृणित अपराध पहले ही कर चुका था। चुपचाप अवसर की आशा में बुद्ध के पीछे वह चलता गया। पर अवसर हाथ आया नहीं। वह बार बार कुछ कहना चाहता था, बार बार

(शेष पृ १० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाराप्रवाही

(गतांक से आगे)

★ वैदर्भी-वन-त्याग ★

(श्री शान्त शास्त्री शालिहास)

वैदर्भी-(स्वप्न)

(१)

ठहरो, नाथ ! कहां जाते हो ?
छोड़ अकेली मुझको बन में !
हिंस्र व्याघ्र-गज व्याल-काल सम
डोल रहे हैं अब भी बन में।
अन्धकार है घोर, अकेली—
कैसे जीऊंगी कानन में ?
जग कर प्रिय को खोया मैंने,
देख रही थी अभी सुपन में।

बिलाप–

(२)

छोड़ गए हा ! मुझे अकेली
सचमुच ही हा ! चले गये वे,
निर्मोही बन भले गये वे।
मेरे सुकृत दले गये रे,
फूली मेरी विषवेली।
छोड़ गये हा मुझे अकेली।
खेद नहीं है उसका मुझको
गए छोड़ एकाकी मुझको।
किन्तु दुःख इतना ही है बस
छिप कर जाने की की केलि।
छोड़ गए हा मुझे अकेली !
कहां गए वे जीवनाधार ?
छोड़ गले का 'मुक्ताहार'।
विजय प्राप्त कर के भी हार,
खाई मैंने अजब पहेली !
छोड़ गये हा ! मुझे अकेली !!

(३)

जो शंका थी सत्य हुई—

आते आते कल मारग में,
मार्ग बताते थे वे घर का।
'यह कौशल को जाती सरणि'
'यह विदर्भ को' काम न डर का
मुझे छोड़ने की थी मन में,
तभी तो उनके आंसू ढरका
चिंतित से थे आर्य पुत्र कल
मेरा दायां लोचन फरका,
भीत हृदय से मैंने उनसे
कहा-'रहूंगी मैं अनुचारिका'
हंसकर कहा उन्होंने तब था
'चित्त करो मत बाले हल्का'
सायं भी मैं सावधान थी
पर मेरे दिल में था धड़का
छोड़ रात को चले गए वे,
मेरी शंका सत्य हुई, यदि वे मुझे जगा''
तो क्या रख पाती मैं उनको ?
वे भी क्या रह जाते ?
मुझे उन्होंने मृदुला जाना !
पर क्या वास्तव में पहचाना ?
केवल भार भूत ही माना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भार रूप क्या मुझको पाते ?
यदि वे मुझे जगा कर जाते ?
संग रखते तो चरण दबाती !
थकने पर मधु सलिल पिलाती !
खाने को फल भी चुन लाती।
बैठ छांह में दोनों खाते !
यदि वे मुझे जगाकर जाते ?
क्लेशित करके भी निज तन को
मैं सुख ही पहुंचाती उनको।
अतिप्रसन्न हो गाती गुन को—
उनके, वे मेरे गुन गाते।
यदि वे मुझे जगाकर जाते।

मेरा ही है वाम विधाता।
नहिं तो क्यों यह तन दुख पाता ?
किसको कौन यहां दुखदाता।
दुष्कृत ही है दुख दिखलाते !
यदि वे मुझे जगाकर जाते।
हृदय उन्हें निर्मम है कहता !
क्यों फिर नीर नयन से बहता?
यदि है उनकी यह निर्ममता ?
क्यों आंखों से आँसू आते ?
यदि वे मुझे जगाकर जाते ?
साथ यदि रहते वे मेरे।
हंस गाकर तब साँझ सवेरे।
तरुदल तले डाल कर डेरे।
कट जातीं ये दुख की रातें।
यदि वे मुझे जगाकर जाते।

वैदर्भी विलाप—

(४)

जाएं वे, यदि रहें कुशल से।
मैं भी जी लूंगी वनफल से।
पर वे छोड़ गये हैं छल से।
मुझे अतः हैं कुछ अनभाते।
यदि वे मुझे जगाकर जाते।
क्या वे लौट पुनः आएंगे ?
तृषित नयन दर्शन पाएंगे ?
क्या फिर दोनों हम जाएंगे ?
मिलन-गीत जो रल मिल गाते !
यदि वे मुझे जगाकर जाते ?

(क्रमशः)

★

बूझो तो ?

१— पानी में निशिदिन रहे
जिसके हाड न मांस
काम करे तलवार का
फिर पानी में वास

२—एक धोती ५ मिनट में सूखती है तो १० मिनट में कितनी धोतियां सूखेंगी ?

३—तरह तरह की मेरी टिकिया
मैल तुम्हारा धोता हूं
सोडा तथा तेल से बनता
धोबी का मैं पोता हूं

४—पीटो पीटो चिल्लाते हो
जब मैं उल्टी जाती हूं
सीधी होते ही बस सिर पर
मैं तो चढ़ जाती हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ० ७ का शेष)

तथागत उसकी बात मुंह से निकलने के पहले कुछ पूछ बैठते, बात बदल जाती। भीतर की भीतर रह जाती। नन्द विकल हो उठता !

अन्तर को यत्न से समेट साहस कर नन्द फिर कुछ कहना चाहता, तथागत प्रणाम करने वाले लोगों से आशीर्वचन कहने लगते; क्षेम पूछने लगते। राजमार्ग छूट गया, वीथियां चुक गईं। काल के क्षण दीर्घ होते हुए भी सत्वर निकलते गए। पर बुद्ध को नन्द की बात सुनने का समय नहीं मिला। नन्द अपनी बात कह नहीं सका। सुन्दरी के क्षण कल्पवत बीतते रहे ! मंडन उसका उपहास कर उठा।

तथागत नगर से बाहर निकल गए। नन्द भिक्षापात्र लिए उनकी छाया की भांति था। संघ स्वयं शाक्यसिंह की प्रतीक्षा में था। असंख्य नरनारी निकट दूर के गांवों से आए हुए थे। कपिलवस्तु के नागरिकों से संघस्थली भरी थी।

तथागत नन्द पर स्मित दृष्टि डाल उपदेश-वेदी पर जा बैठे। जनहिताय उनकी वाणी सस्वर हुई ! पहला पहर बीत गया। नन्द भिक्षापात्र लिए उद्विग्न उन्मन खड़ा था। तथागत के मंगल वचन उसके कर्ण-कुहरों को न बेंध सके। उनमें सुन्दरी का अनहद नाद भरा था—'इसके पहले कि मेरे कपोलों के गीले आलेख सूख जायें, लौट आना।'

तथागत उठे, नित्य के कार्य में लगे। नंद से मिलने का उन्हें अवसर न मिला। सुन्दरी प्रकोष्ठ में खड़ी अब भी खिड़की की राह देख रही थी ! शृंगार के फूल उसने मसल डाले, सीमन्त केशतट के मोती उसने बिखेर दिए, मंडन के भक्ति विशेषक (पत्रलेख) उसने शक्ति भर पोंछ दिए। नंद की बिलखती आंखें उसकी आंखों में गड़ी चुभती रहीं, पर नंद नहीं आया।

नंद को तथागत ने बरबस काषायचीवर दे दिए थे, व्याकुल नंद आचार के लाज से तथागत की उपेक्षा न करता। पर तथागत उसका इष्ट जान कर भी उसकी उपेक्षा करते गये। उसका विलास की ओर लौटना उन्हें अभीष्ट न था।

दिन बीते, सप्ताह बीते, मास बीते। ग्रीष्म की आग चराचर को झुलसा गई। पावस के मेघ बिलख-बिलख रोए, शरत का निर्मल आकाश व्यंग्य से हंसा, हेमन्त ने कमल वन को उपल मारे; शिशिर के उघरे नंगे तरुलताओं पर कामुक वसन्त ने पल्लव फूलों के वितान ताने, पर नन्द न लौटा।

रोम रोम उसका शिथिल था। उसके अंतरंग का कण-कण क्रन्दन कर रहा था। धीरे-धीरे प्रकृति के उपकरण उसके लिए सारहीन हो गए। दृश्य जगत उसे निरर्थक लगने लगा। धीरे ही धीरे उसकी कांति निष्प्रभ हो चली, चेष्टा भावहीन मानस निरीह। सुन्दरी की स्मृति उसे हज़ार संकेतों से बुलाती, पर नंद जड़वत पड़ा रहा जब तब उसे सुन पड़ता—'इसके पहले कि मेरे कपोलों के गीले आलेख सूख जाएं लौट आना।'

यशोधरा का कब का सूना पड़ोस भी सुंदरी के क्रंदन के नये स्वर से बिलख उठा, पर नंद न लौटा, न लौटा।

★

एक बालक की प्रार्थना

ऐ विश्व के स्वामी दया के धाम;
अज्ञात ज्ञान सागर महान।
सबके पालक दया की खान,
करो तनिक तो हम पर ध्यान।
होकर विद्या से पुनीत महान;
बनें आदर्शवादी हम बाल ?
अपना चिह्न लेकर छवि शाम,
अपना धर्म फैलाते अभिराम।

—राजेन्द्र 'राजन' पराशर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को बुरी आदतों से बचाने का उपाय

(लेखिका श्रीमती बाला तनेजा)

चुगली

'अम्मां, अम्मां देखो दीप ने क्या किया। बाहर कीचड़ में खेलने लगा, रेत के लड्डू बना कर जेब में डाल लिये। उसके सारे कपड़े खराब हो गये हैं। चल के देखो तो सही.......।' राजू ने आकर दीप की चुगली की तो माँ ने बाहर जाकर दीप के मुंह पर दो-तीन चपत लगा दिये। दीप पहले कुछ मिनटों के लिए झल्ला गया कि मां ने पीटा क्यों। बताइये भला, बच्चा कैसे जानता है कि मिट्टी में खेलना बुरा है ? यह तो उसकी प्रकृति है।

आप कभी किसी बच्चे को चुगली करने के लिये उत्साहित न करें। यह तो ऐसी छूत की बीमारी है कि आज राजू ने चुगली की तो कल दीप भी उस से यही आदत सीख लेगा।

अगर एक बच्चा आप के पास आकर दूसरे बच्चे की चुगली करता है तो आप उसकी बात को टालें नहीं, उसे दुत्कारें नहीं, ध्यान से सुन लें और कुछ ऐसा कह कर संतुष्ट कर दें कि वह उस बात को बराबर दोहराने की अपेक्षा भूल जाये और खेलकूद में लग जाये।

उसी समय जाकर और दीप को झिड़क कर आप स्वयं को या राजू को प्रसन्न करने की चेष्टा न करें। इसका दीप पर बुरा असर पड़ेगा।

वह अपने को दूसरे बच्चों के सामने अपमानित हुआ जानकर राजू से नफरत करने लगेगा और आपकी छोटी सी गलती के कारण बच्चों में ईर्ष्या पैदा हो जाएगी।

आपको चाहिए कि थोड़ी देर बाद दीप को बुलाकर उसे प्यार से समझा दें, आप उससे कहें, 'मिट्टी में खेलना बुरा है, इस लिये नहीं कि कपड़े गन्दे हो जाते हैं, वरन इस लिए कि ज़्यादा देर खेलने से सर्दी या गर्मी लग जाने का डर होता है-जिसके बाद बुखार आ सकता है और खेलना बिल्कुल बन्द हो सकता है।' इस तरह कहने से बच्चा आपकी बात से सहमत हो जाएगा और आगे से न तो कपड़े खराब करेगा और न ही ज़्यादा देर मिट्टी में पड़ा रहेगा।

चोरी की आदत

बच्चा स्कूल जाता है तो कोई पेंसिल उठा लाता है, खेलने जाता है तो किसी का खिलौना उठा लाता है। बचपन में तो आप ध्यान नहीं देंगी। यही कहकर टाल देंगी-'क्या हुआ उठा लाता है तो दे भी आता है।'

बच्चा हमेशा तब चोरी करता है जब उसे किसी चीज़ की ज़रूरत होती है या लालसा। यह मां-बाप का फर्ज़ है कि उनकी प्रकृति की परीक्षा करते जायें और आवश्यकतानुसार कार्य करें। एक दिन सतीश स्कूल से एक पेन उठा लाया। उसके पापा ने जब देखा कि यह तो उसका है नहीं तो उससे प्रश्न किया। सतीश ने कहा कि उसके दोस्त ने उसे दिया है। पापा ने स्कूल से पता करवाया तो मालूम हुआ कि वह पेन चोरी किया गया है। इससे सतीश की खूब मार पड़ी, घर में उसका खाना पीना बन्द करवा दिया गया, स्कूल में उसे परेशान किया गया। अगर सतीश के पास 'पेन' होता तो उसे किसी दूसरे का उठाने का खयाल ही न आता। अब आप कहेंगे कि यह कैसे हो सकता है कि जो बच्चा मांगे उसे ला दिया जाये। ऐसा भी नहीं होता। चाहे बच्चा दो साल का हो, उसे स्वाभाविक तौर पर पता होता है कि उसकी सामाजिक स्थिति क्या

(शेष पृष्ठ १४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवार से पैट्रोल पैदा किया जा सकता है ?

खेती की बेकार चली जाने वाली वस्तुओं का सदुपयोग !

अमेरिका के वैज्ञानिक (जिन में कृषि-अनुसन्धानकर्ता, रसायनशास्त्री तथा टैक्निकल शामिल हैं) खेती की ऐसी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग लेने के तरीके मालूम करने की चेष्टा कर रहे हैं, जिन्हें इस समय बेकार समझा जाता है। उन्हें अपने कुछ अनुसन्धान-कार्यों में तो सफलता मिल भी चुकी है। आशा है कि ऐसे उपाय खोजने पर किसानों की आमदनी तो बढ़ ही जाएगी, साथ ही संसार के उद्योगों और उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सकेगी।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि खेती की बेकार जाने वाली प्रायः सभी वस्तुओं का आर्थिक दृष्टि से कुछ न कुछ प्रयोग अवश्य किया जा सकेगा। वे खेती की बेकार चली जाने वाली वस्तुओं को प्रयोग में लाने के तरीके मालूम करने के लिये कालेजों, कृषि अनुसन्धानशालाओं तथा औद्योगिक प्रयोगशालाओं में अनुसन्धान कर रहे हैं।

इस समय, खेती की बेकार चली जाने वाली कई वस्तुओं को इस लिये काम में नहीं लिया जा सकता है, क्योंकि उन के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों को अभी तक आवश्यक जानकारी हासिल नहीं हुई है। कुछ दूसरी वस्तुओं को इस लिये काम में नहीं लाया जा सकता है क्योंकि उनको जुटा कर उन्हें ठीकठाक करने पर बहुत अधिक खर्च पड़ता है।

चिरकाल से रसायनशास्त्री यह स्वप्न देखते आ रहे हैं कि खेती की उन वस्तुओं को काम में लाया जाय जो यों ही बेकार चली जाती हैं। उनका ख्याल है कि खेती की चीज़ों से नई नई और सस्ती वस्तुएं तैयार की जा सकती हैं। रसायनशास्त्री जानते हैं कि भूमि में पैदा होने वाले पौधों से बहुत सी वस्तुएं तैयार की जा सकती हैं। रासायानिक एवं औद्योगिक रूप में उनका प्रयोग करना कोई कठिन बात नहीं है, किन्तु देखना यह है कि ऐसा करने पर वे मुकाबले की दूसरी चीज़ों से महंगी न पड़ें।

उदाहरण के तौर पर, ज्वार से मोटर का पैट्रोल तैयार किया जा सकता है, किन्तु जब ज्वार को अल्कोहल में परिवर्तित करके मोटर के इंजनों में प्रयुक्त किया जाता है तो उस पर पैट्रोल के उत्पादन की अपेक्षा बहुत अधिक लागत आती है। ज्वार की टहनियों से कागज़ तथा गत्ता बनाये जा सकते हैं किन्तु ऐसा करने के लिये यह आवश्यक है कि ये वस्तुएं लागत और यातायात की सुविधा आदि की दृष्टि से उन वनों का मुकाबला कर सकें जहां भारी मात्रा में सेलूलोज आसानी से मिल जाता है।

'नैशनल फार्म चैमुजिक कौंसिल' नामक एक गैरसरकारी संस्था के वैज्ञानिकों एवं टैनिकल विशेषज्ञों द्वारा २० वर्षों से खेतों में पैदा होने वाली वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रयोग किये जा रहे हैं। मैम्फिस (टैनेसी) में हाल ही में इस संस्था का एक सम्मेलन हुआ था, जिसमें डा० के० स्टार चस्टर तथा कोलम्बस (ओहायो) के डा० वारेन सी० एलिस (जूनियर) ने बताया था कि वह फोक जिसे इस समय बेकार समझा जाता है, दूर दूर फली होती है। उसे व्यापारिक दृष्टि से प्रयोग में लाने के लिये यह आवश्यक है कि उसे ठीकठाक करने के निमित किसी एक स्थान पर जमा किया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन वैज्ञानिकों ने खेतों में बेकार जाने वाली वस्तुओं का परिमाण घटाने तथा उनको वहीं सुधारने के सम्बन्ध में जांच पड़ताल करने का सुझाव दिया है। उन्हों ने कहा है कि इस कार्य के लिये प्रस्तुत साज-सामान को प्रयोग में लाया जा सकता है। उदाहरण के रूप में, कपास ओटने और बेलने की मशीनों, ईख पेलने के कोल्हुओं और खाद्य पदार्थों को डिब्बों में बन्द करने के यन्त्रों का उन मौसमों में इस्तेमाल किया जा सकता है जब वे बेकार पड़े रहते हैं।

उन वैज्ञानिकों ने बताया है कि अनुभव से यह प्रकट हो गया है कि खेतों में नष्ट हो जाने वाली वस्तुओं से अक्सर उसी समय अधिक लाभ हो सकता है जब उनको एक स्थान पर एकत्र कर लिया जाये।

गन्ने का रस निकाल लेने के बाद जो खोई बचती है उसके सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। चूंकि खोई चीनी की मिल के पास जमां हो जाती है इस लिये उसे एक स्थान पर एकत्र करने के लिये नया परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अतः वैज्ञानिकों ने उस के महत्वपूर्ण उपयोग मालूम कर लिये हैं। इसी प्रकार जई के छिलके कारखानों में जमां हो जाते हैं और वे रासायनिक द्रव्य फरफुरल तैयार करने के लिए बड़े मूल्यवान सिद्ध हुए हैं।

काम में ली जाने योग्य सभी बेकार वस्तुएं खेतों में ही नहीं होतीं। उदाहरण के तौर पर मैले व कूड़े-करकट को भूमि को उपजाऊ बनाने के लिये बढ़िया ऐन्द्रियक पदार्थ या खाद के रूप में बरता जा सकता है।

कागज़ बनाते समय जो लिगनिन पैदा होती है वह भारी मात्रा में बेकार चली जाती है। वैज्ञानिक लोग अभी तक उसका उपयोग निकालने में सफल नहीं हुए हैं, किंतु उन्हें विश्वास है कि वे उसे मूल्यवान वस्तु में बदलने में किसी न किसी दिन सफल हो जाएंगे। ★

रूबाइयां

—महेश सन्तोषी

मीत की हर नई मनुहार व्यर्थ जाती है।
ज़िन्दगी थक गई है, भार बनी जाती है।
गगन के दीप तो एकाकी भी जल लेते हैं।
चांदनी चांद से हटकर कहां खिल पाती है।

सुधियों से हृदय का अभिसार नहीं होता है।
अश्रु से आंख का शृंगार नहीं होता है।
प्रिय, कब तलक पतझार के आघात सहूं।
अमर यह सांस का व्यापार नहीं होता है।

स्वप्न तो चेतना आते ही चले जाते हैं।
सत्य और कर्म से हर बार छले जाते हैं।
मैं कल्पना की क्या नई उड़ान भरूं।
अश्रुभार से यह प्राण दबे जाते हैं।

प्रीत के गीत तो हर बात में गाता हूं मैं।
आशा के दीप तो हर रात जलाता हूं मैं।
तुम मिल सको वह सांझ तो आती ही नहीं।
चाह के नीड़ तो हर रोज़ सजाता हूं मैं।

हम उसे इन्सान कह सकते नहीं!

शांति कब पायी मनुज ने स्वास के व्यापार में।
काल से लड़ता रहा वह यहां संसार में।
जो स्वयं पुरुषत्व खो संघर्ष से घबरा उठे—
हम उसे इन्सान कह सकते नहीं।
कब दिया है मार्ग सागर ने किसी जलयान को।
झूमती लहरें डुबोने को चलें हर यान को।
जो कि उनको चीर करके जा नहीं पाये किनारे।
हम उसे जलयान कह सकते नहीं।
बिजलियां गिरती रहीं, बादल कड़कते ही रहे।
यह धरा फटती रही, पर्वत अकड़ते ही रहे।
किंतु इनको गोद में लेकर नहीं जो बढ़ सका—
हम उसे तूफान कह सकते नहीं।
हम कभी नैराश्य में कुछ दृष्य ऐसा देखते हैं।
ज़िन्दगी के सामने है मौत ऐसा सोचते हैं!
मौत के आगे नहीं बतला सके जो ज़िन्दगी—
हम उसे अनुमान कह सकते नहीं। —करुणेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ११ का शेष)

है। एक राजा का बच्चा सवारी के लिये असली घोड़ा ही मांगेगा और गरीब का बच्चा काठ का। लेकिन मिल जाने पर दोनों की तसल्ली बराबर ही होती है। सबसे बढ़कर तो यह मां पर निर्भर है, उसका जैसा व्यक्तित्व होगा, जैसी प्रकृति; जैसी शिक्षा होगी, उसी के अनुसार बच्चे भी व्यवहार करेंगे।

झूठ

झूठ बोलने की बुरी आदत बच्चों में हम अपनी ही गलतियों से पैदा कर देते हैं। असल में किसी के डर और अपने को असुरक्षित समझने के कारण ही बच्चों में यह आदत पड़ जाती है। खेलते-खेलते कपड़े गन्दे हो जाने पर, खाना खाते समय कपड़ों पर सब्ज़ी गिर जाने पर बच्चा सौतेली मां या अपनी ही तीखी स्वभाव वाली मां की झिड़कियों या मारपीट से बचने के हेतु झूठ बोलने लगता है। इसकी अपेक्षा अगर बच्चा थोड़ा सा भी जानता हो कि उसकी मां या दूसरे घर के सदस्य उसकी बात को हमेशा समझ कर ही उसे कुछ कहते हैं तो वह कभी झूठ न बोलेगा, बल्कि हमेशा सत्य बोलकर ही प्रसन्न करने की चेष्टा करेगा।

आम तौर पर देखा गया है कि जिन बच्चों को दुर्भाग्यवश घर में प्यार कम मिलता है वे झूठ बोलने की आदत सीख जाते हैं। जिस तरह हम कहते हैं कि दिमाग़ में कोई उलझन होने के कारण ही बच्चा सिर के बाल नोंचने लगता है, नाखून काटने लगता है, अंगूठा चूसने लगता है। उसी तरह घर में, प्यार कम मिलने के कारण ही बच्चा अपने आपको किसी न किसी ढंग से व्यस्त रखने के लिये या अपनी शक्ति का वाष्पीकरण करने के लिये झूठ बोलने लगता है या चोरी करने लगता है।

सूचनाः—पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें।

मेरा गीत

तुम्हारे स्वर में, गीत जगत का बन जाता है!

मैं ने अपनी व्यथा—विकलता,
बस मुखरित भर ही कर दी थी,
भाषा के अधरों पर कल्पित
कविता की उंगली धर दी थी,
तुमने प्राण प्रतिष्ठा कर दी
मेरे अधचेतन छन्दों में,
मेरा राग, तुम्हारी लय
संगीत जगत का बन जाता है।
मेरा गीत तुम्हारे स्वर में
गीत जगत का बन जाता है।

(२)

रवि का तेज तरंगित शशि में
पाता है अमृत की गरिमा,
और चाँदनी छाया में मुकुलित
नित चन्दा की महिमा,
मैंने जीवन का मंथन कर
पाया था जो गरल अयाचित,
तुमसे स्पर्शित होकर वह
नवनीत जगत का बन जाता है।
मेरा गीत तुम्हारे स्वर में
गीत जगत का बन जाता है!

(३)

दीपक का संसर्ग जलन में
पली अग्नि उपमेय बन गई,
ज्योतिर्जल में निखर कोटिशः
शलभों के प्रति श्रेय बन गई
मैं ने सदा छिपाया पीतम को
सपनों के सुधि कुंजों में।
मेरा मीत तुम्हारी छवि में
मीत जगत का बन जाता है।
मेरा गीत तुम्हारे स्वर में,
गीत जगत का बन जाता है!

—'तन्मय' बुखारिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि—

दोगले बीज से मक्का की उपज में वृद्धि

अमेरिका और कनाडा में उत्पन्न होने वाली दोगली किस्म की मक्का का उत्पादन अब स्वतन्त्र संसार के अन्य क्षेत्रों में भी होने लगा है। इन क्षेत्रों में मक्का की इस नई किस्म से मानव जाति के हित में शांतिपूर्ण और रचनात्मक क्रांति शुरू हो गई है।

अनेक देशों में दोगली किस्म की मक्का स्वाभाविक किस्मों की मक्का का स्थान बहुत तेज़ी से लेती जा रही है। १९५२ में, फ्रांस के १५% मक्का-उत्पादक क्षेत्र में दोगली किस्म की मक्का बोयी गई थी और यह अनुपात निरन्तर बढ़ता जा रहा है। हालैंड में; ११५० और १९५२ के बीच पहले से तिगुने क्षेत्र में मक्का बोई गई और जितने क्षेत्र में दोगली किस्म की मक्का बोई गई, वह कुल मक्का-उत्पादक क्षेत्र का ७५ प्रतिशत था। इटली में दोगली किस्म की मक्का बोने से १९५२ तक का कुल उत्पादन पिछले उत्पादन की तुलना में २,२०,००० टन अधिक बढ़ गया।

फ्रांस और बेल्जियम में अब अधिकतर भूमि में चुकन्दर और आलू की जगह दोगली किस्म की मक्का बोयी जाने लगी है। ग्रीस में १९५२ में १० प्रतिशत मक्का-उत्पादक क्षेत्र में दोगली किस्म की मक्का बोई थी और तब से ग्रीस के किसान अधिकाधिक भूमि में दोगली किस्म की मक्का बो रहे हैं। स्विट्ज़रलैंड के कुछ क्षेत्र अब आलू और गेहूं की बजाय मक्का बोई जाने लगी है। दोगली किस्म की मक्का स्विटजरलैण्ड के मवेशियों के लिए बहुत पुष्टिकारक सिद्ध हुई है।

स्पेन, पुर्तगाल, जर्मनी, आस्ट्रिया, यूगोस्लाविया, तुर्की, मिस्र, अल्जीरिया और मोरक्को में, दोगली किस्म की अमेरिकी मक्का उन किस्मों का स्थान तेज़ी से लेती जा रही है; जिन्हें बोने से इन देशों की पैदावार बहुत कम रही है।

दोगली किस्म की इस मक्का की यह विशेषता है कि यह जल्दी ही पक जाती है, इसे बोने से उतनी ही जगह में अधिक पैदावार होती है, यह तरह तरह के मौसम को अधिक अच्छी तरह सहार सकती है, और इस में कीड़ों, पौधों; रोगों तथा सूखे का प्रतिरोध करने की अधिक क्षमता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य-कृषि संघटन द्वारा हाल में की गई जांच-पड़ताल से पता चला है कि दोगली किस्म की मक्का बोने से यूरोप और भूमध्यसागर के १० देशों में १९५२ में उत्पादकों को २ करोड़ ४० लाख डालर की अतिरिक्त आय हुई। ख्याल किया जाता है कि अगले कुछ वर्षों में दोगली किस्म की मक्का का उत्पादन और अधिक बढ़ जाने से उत्पादकों की आय में चौगुनी वृद्धि हो जाएगी।

खाद्य-कृषि संघटन की ओर से १९५२ में विभिन्न देशों के किसानों को परीक्षण के लिये दोगली मक्का की ४५ किस्में दी गईं। अपने देश की सर्वोत्तम स्वाभाविक किस्मों की जगह दोगली मक्का की इन किस्मों को बोने से ६० प्रतिशत अधिक पैदावार हुई। इन देशों के कृषि-नेताओं और खाद्य-कृषि संघटन का कहना है कि यदि यूरोप में ३ करोड़ एकड़ भूमि में दोगली किस्म की सर्वोत्तम मक्का बोया जाए तो उससे इतनी अधिक पैदावार होगी कि स्वाभाविक किस्म की मक्का से उतनी ही पैदावार हासिल करने के लिए १ करोड़ ८० लाख अतिरिक्त एकड़ भूमि में मक्का बोनी पड़ेगी।

दोगली किस्म की मक्का बोने से, अमेरिकी किसानों की वार्षिक पैदावावार पहले से ७५,००,००,००० बुशल अधिक बढ़ गई। दोगली किस्म की मक्का के विकास के लिए अनुसन्धान तथा परीक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम पर खर्च किये गये

(शेष पृष्ठ १८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब है लण्डन और—

★ खूब हैं लण्डन के रहने वाले ! ★

(श्री ज्ञान कौशिक के अनुभव)

अगले दिन प्रातः जब आंख खुली तो वर्षा हो रही थी। सवेरे का नाश्ता किया और सोचा 'जब वर्षा बन्द हो जाएगी तो काम पर चलेंगे' परन्तु वर्षा ने मानो बन्द न होने की कसम खा रखी थी, मैं निराश होकर अपने कमरे की ओर लौटने ही लगा था कि देखा कि मेरे साथ नाश्ता करने वालों में से प्रत्येक वर्षा की कोई चिंता किये बिना अपने काम की ओर चल दिया। पास ही खड़े एक व्यक्ति से मैं ने पूछा 'क्या इन लोगों को वर्षा में भीग जाने का भय नहीं ?' उसने मेरी ओर बड़े आश्चर्य से देखा और फिर एक विचित्र मुस्कुराहट के साथ उत्तर दिया, श्रीमान् ! वर्षा का कोई नियत समय नहीं किन्तु काम पर जाने का तो समय निश्चित है और फिर वर्षा तो यहां साल के ३६५ दिन पड़ती रहती है।

'परन्तु भीग जाने से बीमार हो जाने का भय तो रहता ही है' मैं ने कहा—'यदि भीगने से इतना डरते हो तो बरसाती और छाता खरीद लो' यह कह कर वह भीगता हुआ अपने काम की ओर चल दिया। मैं ने एक बार इस व्यक्ति की ओर देखा, और फिर देखा बरसते हुए बादलों की ओर और फिर हिम्मत बांध होटल से बाहर हो गया। अब प्रश्न उठा कि कहां और जाऊं कैसे ?

आध पैनी में सलाहकार

सहसा मुझे डाक्टर बलराज के ये शब्द याद आये कि 'लण्डन में यातायात का सबसे सस्ता साधन है जमींदोज रेलवे।

एक श्रीमान बड़ी तेज़ी से जा रहे थे। मैंने दोनों की सी सूरत बना, हकलाते और घबराते हुए पूछा—'यदि आपको बुरा न लगे तो कृपया मुझे यह बताने का कष्ट कीजिए कि क्या यहां कहीं आसपास भूमिगत रेलवे का कोई स्टेशन है ? यदि हां, तो किस ओर और यदि नहीं तो यहां से कितनी दूर है और मुझे यहां कैसे पहुंचना चाहिए ?' उसने मेरे इतने लम्बे-चौड़े प्रश्न का बिना रुके एक संक्षिप्त सा उत्तर दिया—'फालोमी'। अभी दो-चार मिनट ही चले होंगे कि सामने स्टेशन आ गया। टिकट के लिये लाइन लगी हुई थी। उस लाइन में खड़े होकर उसने मेरी ओर दृष्टि कर प्रश्न किया—'शायद नये ही आये हो ?'

'जी हां कल ही !'

'कहां जाना है ?'

'जहां कहीं अच्छी बरसाती मिल जाये।'

इतनी देर में टिकट की खिड़की सामने आ गई थी। उसने दो टिकट खरीदे, एक आक्सफोर्ड सर्कस का जहां उसे जाना था और दूसरा पिकडिली सर्कस का जहां मुझे जाना था। टिकट मेरे हाथ में देते हुए उसने कहा—'यह आपके लिये, स्टेशन से बाहर निकल कर बाएं तरफ पहली दुकान, और मुझे साढ़े तीन पैनी इनायत कीजिए।'

'जी ?'

'यह किराया है।' उसने टिकट की ओर इशारा करते हुए कहा। 'मेरे पास पैनी की फुटकर नहीं थी, इस लिये चार पैनी देते हुए मैंने कहा—'लेकिन मेरे पास हाफ पैनी नहीं हैं।'

'तो क्या हुआ !'

'कहां ठहरे हो ?' मैंने अपने होटल का पता बताया। 'ओह तुम मेरे करीब ही रहते हो,' यह कह कर भीड़ में गुम गया।

यह है लण्डन

'क्षमा कीजिएगा।'

'जी !' मैंने घूमकर देखा यह एक युवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का स्वर था। लिफ्ट से नीचे उतरते हुए उसका बैग शायद मेरे लग गया था। अपने देश के शिष्टाचार के अनुकूल उसने मुझ से फौरन क्षमा मांगी थी। तभी मुझे दिल्ली याद आ गई, जहां एक बार लाजपतराय मार्केट के सामने, मैं पान वाले की दुकान से सिगरेट लेकर बढ़ा ही था कि एक सम्भ्रांत महिला ने अपने भारी भरकम शरीर को धूप से बचाने के लिये अपना खिलौनानुमा छाता इस सपाट से खोला कि उसकी एक तीली मेरी बाईं आंख पर लगी और चीख निकल गई। बाईं आंख पर हाथ रख और दाईं आंख उठाकर मैंने जो देखा तो वह अपने छाते को देख रही थी। उसने जो मुझे अपनी ओर देखते देखा तो तुरन्त आंखें तरेरती हुई बोली—'अन्धे होकर चलते हो, दिखाई नहीं देता; छाता टूट जाता तो ?—यह उस दिल्ली की बात है कल जिसकी शिष्टता और शीलता के उदाहरण दिये जाते थे और वह बात है उस लण्डन की जहां कल बर्बर रहते थे। डेढ़ सौ वर्ष की गुलामी और हुक्मरानी ने दोनों जगह के रहने वालों के दृष्टिकोण में. कैसे आकाश पाताल का अन्तर डाल दिया है। यह बात मैं कुछ क्षणों तक सोचता ही रह गया।

शिष्टाचार का पाठ

मैंने एक युवती से पूछा 'मुझे किस गाड़ी पर जाना है ?' उसने सामने खड़ी हुई गाड़ी की ओर इशारा कर दिया। मैं चलने लगा तो उसने मुझे रोक कर और पास बुला कर कहा—'हम दोनों अपनी अपनी गाड़ी छोड़ देते हैं।' मैं ने कहा—'क्यों' ? उसने कहा —'यह बताने के लिए कि यहां किसी से कहा जाने वाला वाक्य 'श्रीमान' पर आरम्भ होताहै और धन्यवाद पर समाप्त होता है। आप समझ गये ? धन्यवाद।" मैं अपनी असभ्यता पर शरमा गया। मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे गाल पर कस कर तमाचा मार दिया हो। इससे पूर्व कि मैं उसके पढ़ाए पाठ का प्रयोग उसके सामने करता, वह ट्रेन में बैठचुकी थी।

मोलतोल की जरूरत नहीं

पिकाडिली स्टेशन पर उतर कर बाहर आने का रास्ता पकड़ा। बाहर निकलते ही बाईं ओर बरसाती, हैट और ओवर कोट बेचने वाले की एक बहुत बड़ी दुकान थी। सेल्समैन ने मुस्कुरा कर मेरा अभिवादन किया और फिर पूछा—'हैट, ओवरकोट या बरसाती ?' मैंने कहा...बरसाती।

बरसाती पहली मंज़िल; दाईं ओर··और वह दूसरे ग्राहक की ओर घूम गया। वहां दूसरा सेल्समैन मिला, नाप लिया और थोड़ी देर पश्चात उसने मेरे सामने मेरे नाप की कई बरसाती ला रखीं। बरसाती तो मैं ने खरीद ली और पैसे भी दे दिये। लेकिन सेल्समैन से यह प्रश्न कर बैठा—'क्या यहां एक ही दाम होते हैं ?' 'एक दाम; मैं आपका मतलब नहीं समझा। जैसी चीज़ लेंगे वैसे ही दाम होंगे। नहीं, उसने मेरा मतलब समझते हुए कहा—'इस साइज़ की और इस कपड़े की बरसाती की कीमत लगभग सब जगह एक होगी। यदि कोई अन्तर होगा तो फर्म की साख; और उसके नाम का।'

बरसाती लेकर मैं बाहर निकला विचार उठा कि लण्डन और दिल्ली दोनों राजधानियों में व्यापारिक समान्ता होते हुए भी कितना बड़ा अन्तर है। लण्डन यदि यूरोप की सबसे बड़ी परचून की मंडी है तो दिल्ली एशिया की, लेकिन दिल्ली में फव्वारे से फतहपुरी तक आते सिर दर्द की दवा का मूल्य स्वयं सिरदर्द बन जाता है। वहां पहले व्यापारी हैं, उनका निजी लाभ है और यहां है स्वयं से पहले देश

ईमानदारी तो देखिये

जब होटल वापिस लौटा तो चाबी वाले खाने में एक कागज़ में लिप्टी आधी पैनी मिली। कागज़ में लिखा था 'धन्यवाद' सहित वापिस। नीचे सवेरे वाले व्यक्ति के हस्ताक्षर थे। मुझे ऐसा लगा मानों वे हस्ताक्षर कह रहे हों—'तुम मेरे देश में नये हो, तुम्हारी सहायता करना कर्त्तव्य है। मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया।' मैं अनायास कह उठा—वाह, खूब है लण्डन और इसके रहने वाले !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ० १५ का शेष)

प्रति १ डालर के बदले में इन्हें प्रतिवर्ष ७५ डालर की आय हुई ।

यद्यपि (U. S. A.) अमेरिका में पिछले २० वर्षों से मक्का उत्पादक क्षेत्र में निरन्तर कमी होती जा रही है और १९३० के बाद से इस क्षेत्र में लगभग २५ प्रतिशत तक कमी हो चुकी है; किन्तु उत्पादन उतरोत्तर बढ़ता गया है। यह सब दोगली किस्म की मक्का को अधिकाधिक बोने और यान्त्रिक साधनों तथा अपेक्षाकृत उत्तम रासायनिक खाद का अधिक प्रयोग करने का ही परिणाम है ।

१९२४ और १९३३ के दौरान में अमेरिका में प्रति एकड़ भूमि में मक्का की जो औसत पैदावार थी; उसकी तुलना में १९४१ और १९५० के दौरान में १० बुशल अधिक पैदावार हुई। दोगली किस्म की मक्का का विकास १९३३ के बाद हुआ था। दोगली किस्मों में और अधिक सुधार हो जाने तथा अवशिष्ट मक्का उत्पादक भूमि में भी दोगली किस्म के बोने से उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है ।

ख्याल किया जाता है कि कुछ समय में ही संसार के अनेक भागों में मक्का का उत्पादन दुगना हो जायेगा और इस प्रकार इस उत्पादन वृद्धि से जहां अनेक देशों में लोगों के स्वास्थ्य को बनाये रखने और उनकी सामाजिक उन्नति करने में योग मिलेगा, वहां भूख और दुर्भिक्ष की रोक-थाम करने में भी मदद मिल सकेगी ।

मक्का मूलतः अमेरिकी अन्न है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के दुतरफा रास्ते से जिस प्रकार अनेक उपयोगी वस्तुएं और उनके सम्बन्ध में जानकारी अमेरिका पहुंची है, उसी प्रकार मक्का और उसके बारे में, जानकारी अन्य देशों को पहुंची है ।

अन्य कई फसलों की तरह, मक्का को भी अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा कम लागत से अधिक पैदा करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस कार्य में एक देश का टैक्निकल विशेषज्ञ दूसरे देश के उत्पादक को आवश्यक प्रशिक्षण देता है। अन्य देशों के लोगों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित होने से पारस्परिक विश्वास में वृद्धि होती है और उससे कार्य को सहयोगपूर्वक सम्पन्न करने का अवसर मिलता है ।

दोगली किस्म की मक्का विषयक कार्यक्रम के संचालन में संयुक्त राष्ट्रीय खाद्य-कृषि संघटन को अमेरिका के विदेश कार्य-संचालन विभाग तथा यूरोप के आर्थिक सहयोग सम्बन्धी संघटन का सहयोग प्राप्त है ।

(स्फुट दोहे)

शालिहास-हासावलि

(श्री शाँत शास्त्री 'शालिहास')

चार शब्दों में कहूं तो आज कल जीवन यह,
B. A. किया, बाबू बने, पेंशन हुई और मर गए
आज के नर जन्म का है सार इतना ही तो बस,
क्लर्क बन करके जीए और पेंशनर बन कर मरें ।
बाबू जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
फायल में है आंख और आंखों में पानी ।
रिश्वत-इंकार; अफसरी 'शांत' हैं दुर्लभ दोय;
बीबी- बेबी आदि तो पापी के भी होय ।
धन के गाहक सहस नर बिनु धन लहै न कोय;
निधन बाप की बेटी की धन बिन व्याह न होय।
चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घटियो नीर,
घूस दिए धन ना घटे कह गए शान्त कबीर।
आवत ही हरषै नहीं नयनन नहीं सनेह
घूस दिए बिन 'बाबू जी' काम नहीं कर देह।
'शालिहास' संसार में कर लीजै दो काम,
लेने को रिश्वत भली देने को व्याख्यान।
अब 'दहेज' की लूट है लूटि सकै तो लूटि;
'अंटीडोरी बिल' पास भै मिलि हैं कौड़ी फूटि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी   अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र० गोआ में जो आन्दोलन चल रहा है उसके समक्ष गोआ की स्थिति क्या है ?

—इवा सिंह, कक्षा १०, बनगांव ।

उ० स्थिति कुछ यों है, जनता अपनी स्वतन्त्रता के अधिकार के प्रति जागरूक हो गई है । वहां के शासक आन्दोलन को दबाने में प्रयत्नशील हैं और घबराये हुए हैं—वे जानते हैं कि एक न एक दिन उन्हें गोआ छोड़ना ही पड़ेगा । —दी०

प्र० नत्थू राम ने महात्मा गांधी की किस उद्देश्य से हत्या की ? -सोहन लाल, बनगांव

उ० महात्मा जी को साम्प्रदायिकता की भड़कती हुई ज्वालाओं की लपेट से दिल्ली के मुसलमानों को बचाने की चेष्टा से रोकने के उद्देश्य से—यह कोई अच्छा उद्देश्य नहीं था । -दी०

प्र० हमारे स्कूल में पढ़ाया जाने वाला बीज गणित (एलजेबरा) भविष्य में हमारे किस काम आ सकता है ?

—राम कुमार शर्मा, बनगांव ।

उ० यह स्मरण कर पछताने के कि खामखाह हम अपना दिमाग एक व्यर्थ के विषय पर क्यों चटवाते रहे ? —दी०

प्र० यदि हमारे एक गाल पर कोई चांटा मारे तो क्या दूसरी गाल भी उसके आगे कर देनी चाहिए । सुशीला गुप्ता मेरठ ।

उ० महात्मा गांधी से यह प्रश्न पूछते तो शायद वह इसका उत्तर हां में देते पर हमारा उत्तर यह है कि यदि शत्रु हमारी गाल पर एक चांटा मारे तो हमें उसका उत्तर दो चांटों से देना चाहिए । -दी०

प्र० कौन माता-पिता अपनी सन्तान के शत्रु समझे जाते हैं ? -श्याम सुन्दर, देहली

उ० जो अधिक लाड प्यार के वशीभूत हो अपने बच्चोंको बुरी आदतोंसे नहीं रोकते-दी०

प्र० अमीरों के बच्चे अधिक योग्य होते हैं अथवा निर्धनों के -मनोहर लाल, प्रयाग ।

उ० योग्यता पर किसी का अजारा नहीं है निर्धन और धनी दोनों के यहां योग्य और अयोग्य बच्चे पाये जाते हैं । -दी०

(सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कभी न भूलने वाली ऐतिहासिक घटना—

★ ......पर नन्द न लौटा, न लौटा ★

(श्री 'द्रष्टा' हैदराबाद)

तब संघ कपिल वस्तु में ठहरा था । बुद्ध भिक्षाटन के लिए निकले । तपाए सोने के-से जिस्म पर जोगिया त्रिचीवर खूब फबता था । नीचे अधोवस्त्र ऊपर उत्तरासंग, सबसे ऊपर संघाटी । ऐसी ऊंची अभिराम काया कि देख कर गजराज भी राह छोड़ दे, देखने वालों के मस्तक अनायास झुक जाएं । अमिताभ चेष्टा, चाल धीमी, चाप भारी तृष्णा-वासना को जैसे कुचलती हुई, विपुल नयन नीचे ।

आज तथागत कहीं और न रुके, चुप चाप भाई की दहलीज़ में जा पहुंचे । नन्द सौतेला भाई था, तथागत का अन्यतम भक्त, अनुराग का पुंज, शील सौहार्द का अनुपम प्रतीक, नकुल को ले जाने वाले अभिराम कलेवर का निरभिमानी तरुण, मधुर मदिर गायक रेखा-वर्ण का धनी, अभिजात कलाकार ।

सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रमण के बाद राजा शुद्धोदन के बस दो ही आसरे थे, नन्द और राहुल । राहुल दूर की एक मात्र आशा, बुद्ध की अकेली यादगार । नन्द शुद्धोदन के कार्यों में सभी प्रकार का हाथ बंटाता, संथागार में, वनों में । बुद्ध के जाने के बाद राजा का अनुराग इसी नन्द पर केन्द्रित हो गया था ।

सुन्दरी उसी नन्द की विवाहिता थी, अभी हाल की विवाहिता । कवि की निजूठी, कल्पना सी

सावधान रहना !

ये आन्धी औ' अन्धियार पुराने हैं;
ओ ! ज्योतिकणो तुम सावधान रहना ।
जीवन से भी शमशान पुराना है ।
कश्ती से भी तूफान पुराना है ।
कलियो पतझर को तुम न नया समझो
उपवन से भी वीरान पुराना है ।
पतझर को जो नव-पौध सुखाना है ।
फूलो तुमको मधुमास मनाना है ।
ये खंडहर; ये पतझार पुराने हैं,
नन्हे सुमनो तुम सावधान रहना !

चलने वालों के नीचे फूल नहीं ।
तरने वालों के कर में कूल नहीं ।
औरों की तो क्या बात बटोही के,
अपने पग भी रहते अनुकूल नहीं ।
कांटे तो लाखों वर्ष पुराने हैं ।
संकट सारे जाने पहचाने हैं ।
ये पाहन और प्रहार पुराने हैं,
चलते चरणों तुम सावधान रहना !

विध्वंसो से निर्माण नहीं रुकता ।
संघर्षों से इन्सान नहीं थकता ।
लहरों के बन्दनवार समुन्दर में, ।
खेने वालों का यान नहीं रुकता ।
अब भी अङ्गारों में कितना बल है ।
बिजली का क्रोध न अब शीतल है ।
ये बिजली और अङ्गार पुराने हैं;
सुकुमार तृणो तुम सावधान रहना !

हम करते हैं अपने पन से चोरी ।
रहती है मन में मन की कमज़ोरी ।
हमको सत्यों शब्द न सुन पड़ते ।
रहती सपनों की याद मगर लोरी ।
चलते सपने जब चेतनता थकती ।
अपनी आवाज़ न हम तक आ सकती
ये सपने पहरेदार अयाने हैं,
सोते नयनों तुम सावधान रहना ।

—राम अवतार 'त्यागी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोमल; कमल सी अभिराम, हिम धवल उसकी आभा दर्पण स्निग्ध कान्ति। उभरी कोयों को ढकने वाली लम्बी भारी पलकें जब उठतीं श्वेत-श्याम सागर लहरा उठता, जब गिरतीं कपूर की डली पर जैसे दूज का काला चाँद खिंच जाता।

दोनों की हृदयगति साथ चलती। दोनों साथ उठते-बैठते, साथ चलते फिरते, सोते जागते खाते पीते। उनका भाव बन्धन स्नेह अखण्ड था। जगत जैसे उन्हीं के लिए बना था; उन्ही के लिए जगत बना था। दास दासियां भृत्य अनुचर उनकी अहर्निश सेवा कर धन्य मानते, उनके कृपा कटाक्ष से उपकृत हो जाते। नौकर मंडन की अनन्त विभूतियां शृंगार की अटूट परम्परा प्रस्तुत करने में रहते। विविध शीतोष्ण अनुलेप, चन्दन उशीर के उबटन पराग बसे चूर्ण, आलक्तक और गन्ध बसी मादक मदिरा अनुचर नित्य प्रस्तुत करते इन्द्र का प्रासाद लजा जाता।

कादम्बरी के सेवन से प्रिय की कान्ति जब रक्ताभ द्युतिमती हो उठती, मदिर गायक नन्द तब तन्त्री उठा लेता। जैसे २ उसका राग पसरता, नारी का कोमलांग विकल हो उठता, उसका पुलकित गात सिहर उठता। वह अपनी कंटकित बाहुओं को अपने आप ही धीरे-धीरे सहलाने लगती। राग की लहरियां उठतीं और नील अधर में विलीन हो जातीं और अभी जीवन का यह प्रारम्भ था, प्रणय का प्रभात।

तथागत जब आए नन्द सुन्दरी का मण्डन कर रहा था। स्नानान्तर धूप और अगुरु के धुएं से उसने उसके केश सुखाए। फिर उन्हें अभिमत तेल से स्निग्ध किया। चन्दन के स्पर्श से अंगांग शीतल हो गये गमक उठे। होठों को आलक्तक के स्पर्श से लाल कर उसने उसपर लोध्रचूर्ण छिड़क दिया, जिससे उनकी आभा पांडुर हो गई। केशों को एकत्र कर जब नन्द ने उन्हें एक गुच्छ में पोछे बांधा तब उसे संतोष न हुआ; उसने उन्हें झटके से खोल दिया। फिर उनकी अनेक वेणियां बना उनमें लाल-पीले कुसुम डाले और उन्हें पीछे एक के ऊपर एक सजा छत्राकार गुंजलक के रूप में प्रस्तुत कर दिया। सीमन्त और केशतट को आकर्ण निर्मल कान्ति के मोतियों से सजा दिया। कान नीलमणि के मकराकृत कुण्डलों से दमक उठे।

वैदूर्य पात्रों में रखे चन्दन कालेयककेसर के लेप की ओर फिर नन्द न झुका। सुन्दरी पति के प्रयास का फल दर्पण देख अघा गई। जब उसने उसे पात्रों में शलाका से लेप फेंटते देखा तब वह रजत पीठ पर जा बैठी। नन्द भद्रपीठ पर बैठ उसके कपोलों पर पत्रलेख करने लगा। श्वेत रक्तिम हलके गाढ़े रंग शलाका के घुमाते ही खिल उठे। पहले उसने ललाट के मध्य नीचे नन्हीं २ केसर की बिन्दियों का वृत्त बनाया और उनके बीच केन्द्र श्वेत बिन्दु श्वेत चंदन का लिखकर जब उसने 'भक्ति' की सुघराई देखने को प्रिया का चिबुक उठाया तब सुन्दरी के हाथों का दबाव नन्द के कन्धों पर पड़ा। प्रकृति और कला की उस सृजन सीमा को सामने देख नंद का अंतरंग-बहिरंग नाच उठा। प्रिया के होंठ उसने निःशब्द चूम लिये।

फिर नंद शेष सम्पादन की ओर झुका। चिबुक-के कंदर्प गर्त में अञ्जन की उसने बिंदी डाली। काली बिंदी धवल पृष्ठभूमि पर चमक उठी। बकुल की फूटी कलियों की भांति फिर उसने दोनों ओर भरे कपोलों पर नयन कोरों तक दो टहनियां लिख दीं। फिर उनसे चंदन की और नन्हीं टहनियां फूटीं जिन पर लाल नन्हें फूल खिल उठे। दोनों के तन रह रह कर कंटकित होने लगे

पर ठीक तभी जब तूलिका पात्र केस केनर से नन्द ने उठाई ही थी कि वातायन से उसकी दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ कुत्तों की मनोरंजक गाथाएं ★

(श्री जगदीश गुप्त)

मनुष्यों के मनोरंजक और साहसपूर्ण कारनामे तो आपने हज़ारों सुने होंगे, परन्तु पशुओं के कारनामे भी मनुष्यों से कुछ कम नहीं। आज हम आपको कुत्तों और बन्दरों की मनोरंजक गाथाएं सुनाते हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि कुत्ता बड़ा वफादार पशु है। दिल्ली के एक कुत्ते की कहानी बहुत लोगों को मालूम है। उसने स्वामी की मृत्यु पर भूख हड़ताल कर दी और मृतक के सम्बन्धियों से अधिक उसे दुःख हुआ उसने जान दे दी परन्तु खाना नहीं खाया। पैरिस में एक कुत्ता अपने मालिक की आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करता था। जब उसका मालिक नदी के के किनारे बूटपालिश करने बैठता तो उसका वफादार कुत्ता सैर के लिए आए हुए लोगों के जूतों को उठाकर कीचड़ से लथपथ कर देता। उसका उद्देश्य यह था कि मालिक को काम मिल जाए।

शैफील्ड के फायर ब्रिगेड के एक कर्मचारी का कुत्ता हमेशा आग बुझाने अपने मालिक के साथ जाता था। वह आग की भयंकर लपटों में भी कूद पड़ता था और यदि जल रहे मकान में किसी स्थान पर कोई आदमी दिख जाए तो खूब ज़ोर से भौंकने लगता था ताकि उसका मालिक उस आदमी को आग से बचाये। पैरिस में एक कुत्ते ने अपने मालिक के भोजनालय में किसी को विष मिलाते देख लिया। जब उसका मालिक खाना खाने लगा तो कुत्ता ज़ोर २ से भौंकने लगा। मालिक ने उसे हटाने का प्रयत्न किया तो उसका हाथ काट खाया और उसका पाजामा फाड़ दिया। मालिक को क्रोध आ गया उसने खाने की प्लेट उस पर दे मारी। कुत्ता तो घायल हो गया, परन्तु भूमि पर गिरा हुआ खाना एक बिल्ली ने खाया तो तड़प तड़प कर मर गई। इससे पता चला कि कुत्ते ने केवल मालिक को बचाने के लिए यह सब नाटक किया।

न्यूफाउंडलैंड में एक औरत एक नया स्वैटर लेकर बाज़ार से गुजर रही थी कि कुत्ते ने स्वैटर छीन लिया और एक दुकान में घुस गया। दुकान के मालिक ने उसे बताया कि यदि आप उसे एक डबल रोटी दे दें तो वह स्वैटर वापिस कर देगा। औरत ने ऐसा ही किया तो कुत्ते ने तुरन्त स्वैटर वापिस कर दिया।

★

—यदि चींटी आदि काट ले तो जल्दी से नमक के पानी से धो डालिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापुरुषों के जीवन की कुछ घटनाएं

(अरुण)

मज़ाक ?-एक बार वाजिदअली शाह ने विद्यार्थियों की एक दावत की। दावत में बड़ी सुन्दर किन्तु खाली प्लेटें सामने रख दी गईं। फिर नवाब साहेब ने अतिथियों से कहा कि अब खाना शुरू करें। एक मनचले विद्यार्थी ने कहा 'खायें क्या हुज़ुर, प्लेट ?

नवाब ने मुस्कुरा कर कहा—हां, आज प्लेट ही खाने होंगे।

डरते-डरते चखने पर पता चला कि प्लेटें मिठाइयों की बनी हुई थीं

बड़ा कौन ?

अमर उपन्यास, 'टाम काका की कुटिया' की लेखिका हैरियट एलिजाबथ स्टो बर्तन मांजने से लेकर अपने पति के जूतों की मुरम्मत तक स्वयं किया करती थीं। साथ ही वे लिखने के अतिरिक्त भाषण भी दे सकती थीं।

एक बार उनके पति ने प्रसन्न होकर कहा—'तुम्हारी जैसी स्त्री दुनिया में नहीं मिल सकती। भला कौन औरत ऐसी होगी जो इतनी परिश्रमशीला हो और किफायतशार, जिसकी भाषण शक्ति इतनी प्रबल हो, पर जो कभी डाट फटकार न बतावे, जिसमें इतना माधुर्य हो और साथ ही साथ इतनी दृढ़ता भी।'

इसका उत्तर श्रीमती स्टो ने बड़ी मधुरतापूर्वक दिया, 'अगर तुम पहले से मेरे प्रिय पति न होते तो ज़रूर ही तुम्हारे गुणों पर मुग्ध होकर मैं तुम्हारे प्रेम में फंस गई होती।'

मेरा कसूर नहीं है !

एक दिन माता-पिता बड़ी बहिन ब्रोन्या को पढ़ा रहे थे। ब्रोन्या को धीरे-धीरे पढ़ता देख कर मान्या (मैडम क्यूरी) ने किताब हाथों से छीन ली और स्वयं फटाफट पढ़ने लगी। सब दंग रह गये। सन्नाटा छा गया, क्योंकि माता-पिता को तनिक भी पता नहीं था कि मान्या बड़ी बहिन से पढ़ना सीख गई है। मां बाप को चकित देखकर मान्या डर गई। उसने बहिन पर दृष्टि डाली और फिर ज़ोर से रोना शुरू किया, 'माफ करो अम्मां, मेरा कोई कसूर नहीं है। ब्रोन्या का भी नहीं। पुस्तक आसान थी, इसी से इतनी जल्दी पढ़ी गई।

चुटकुला

एक मनुष्य गाड़ी पर खड़ा था। एक भिखारी ने पैसा मांगते हुए कहा—"बाबू जी आपको स्वर्ग में स्थान मिलेगा।" उस आदमी ने कहा—'अब गाड़ी में जगह मिल नहीं रही है। स्वर्ग में स्थान तेरा बाप देगा ?'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ देहली का लाल किला ★

(श्री हरिवंश)

१५ अगस्त को हमारी स्वतन्त्रता के सात वर्ष समाप्त हुए । सात वर्ष पूर्व आज ही के दिन भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर स्वाधीन भारत की पताका फहराई । लाल किला भी एक जीवित इतिहास है । इसकी ओर देखते ही पुरानी घटनाएं स्वयं ही करवटें लेने लगती हैं । लाल किले के सुर्ख पत्थर आज भी कह रहे हैं कि कोई समय था कि कोई पक्षी भी इस ओर दम नहीं मार सकता था । यह वही किला है, जिसमें मुहम्मदशाह रंगीले और शाह आलम ने भोग विलास को उत्साहित किया और यह समझ कर कि उसका पतन कभी नहीं हो सकता, जीवन की सौंदर्यमयी रंगरलियों का रसास्वादन किया ! मुहम्मद शाह रंगीले को नादिरशाह ने, और शाह आलम को गुलाम कादर रोहेला ने इन बातों का अनुभव कराया । इसी किले में वह स्थान भी है जहां सुन्दरियों के मनहर नृत्यों ने हृदय हिलाये हैं और वह स्थान भी विद्यमान है, जहां बैठकर समय के शासकों ने सारे भारतवर्ष को हिलाया है ।

शाह आलम इलाहाबाद में रहता था और नजीब-उद्दौला दिल्ली का शासक था । शाहआलम को नजीबुद्दौला की मृत्यु की सूचना मिली तो उसने दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करने का निर्णय कर लिया । उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह इस कार्य को स्वयं निभा सकता । उसने अंग्रेज़ से सहायता मांगी, किन्तु उसे सहायता न मिल सकी । इसके पश्चात उसने मराठों से सहायता मांगी । उसने होल्कर और सिंधिया से भी सहायता मांगी । उन्होंने दिल्ली पर आक्रमण किया और शाह आलम को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया । अंग्रेज़ यह सब देख रहे थे, इस लिये उन्होंने इलाहाबाद और शाहजा-नाबाद (दिल्ली) को शाहआलम से लेकर नवाब सिराजुद्दौला के हाथ पांच लाख रुपये में बेच दिया । अंग्रेज़ों ने इसीपर बस नहीं किया प्रत्युत पूर्वी देश के कर के रूप में जो २६ लाख रुपये देने का प्रण किया था, उसे भी देने से इन्कार कर दिया । मराठों के कहने पर शाहआलम ने १७७२ ई० में नजीबउद्दौला के लड़के जाब्ता खां को नष्ट कर दिया, और उसकी पत्नी और बच्चों को पकड़ कर दिल्ली ले आया । जाब्ता खां के बेटे गुलाम कादिर की आयु उस समय बीस वर्ष की थी बादशाह ने उसे कत्ल करवाना चाहा परन्तु एक दरबारी के कहने पर उसको छोड़ दिया गया ! गुलाम कादर बहुत सुन्दर लड़का था, बादशाह ने उसे नपुंसक बना कर कुदसिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाग में रखा। दिल्ली की गद्दी पर काबिज हो जाने के पश्चात बादशाह भोग विलास में पड़ गया और मुहम्मदशाह रंगीले के पद चिह्नों पर चलने लगा। लाल किले में हर क्षण रंगरलियां और नाच गाने उड़ने लगे। गुलाम कादिर को ऐसे अवसर पर स्त्री की वेशभूषा में उपस्थित होने की आज्ञा थी। कुछ समय के पश्चात गुलाम कादिर को जागीरदार बना दिया गया। उस के दिल में शाह आलम के विरुद्ध प्रतिहिंसा की आग भड़क रही थी। उसने इस अग्नि को शांत करने के लिये काफी विपत्तियों का सामना करके लाल किले पर अधिकार कर लिया। शाहआलम ने उसे मुख्य मन्त्री बना लिया और वह वापिस चला गया। अक्तूबर १७८७ में वह पुनः दिल्ली आया, उस समय बेदारबख्त दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर चुका था।

बेदारबख्त ने किले में खूब लूटमार की। बेगमों के आभूषणों पर अधिकार कर लिया और उनको नग्न होकर नाचने के लिये कहा। शाही गद्दी पर बैठ कर बेदारबख्त ने घोषणा की कि खानदाने मुग़लिया की शान और लाज समाप्त हो चुकी है और यह वंश अब सर न उठा सकेगा। बेगमात और दूसरे अधिकारियों को असीम कष्ट देकर उसने शाह आलम के कोषों का पता लगाया परन्तु इससे भी वह सन्तुष्ट न हुआ तो उसने शाही सिंहासन में आग लगा दी और उसमें जड़ा हुआ सोना चांदी निकाल लिया। धन की खोज में फर्श और कबरें तक खुदवा दीं। जाब्ता खां पर तबाही के समय जो गुज़री थी, उससे अधिक शाह आलम पर गुजरी।

१० अगस्त १७८८ कादिर मुग़लिया वँश के इतिहास का सबसे भयँकर दिन समझा जाता है। इस दिन गुलाम क़ादिर रूहेला ने पुनः शाह आलम से गुप्त रखी हुई सम्पत्ति मांगी। उसके इन्कार करने पर उसने सब शाही राजकुमारियों और बेगमों को नँगा कर के नचवाया और शाह आलम को यह लज्जाजनक दृश्य देखने पर बाध्य किया। इसके बाद उसने शाह आलम की आंखें भी निकाल लीं। शाह आलम ने कहा कि मेरी आंखों पर इस लिये दया की जाये, क्योंकि वह ५० वर्ष कुरान पढ़ती रही हैं। परन्तु रूहेला के शब्दकोष में भला दया कहां? वृद्ध शाह आलम को पृथ्वी पर लिटा कर उसकी आंखें निकाली गयीं। जब शाह आलम की आंखें निकाली जा चुकीं तो उसे सूचना मिली कि मराठों की सेना दिल्ली पहुँच गई है। इस पर गुलाम कादर और बेदारबख्त मेरठ की ओर भाग गये। मराठों ने पीछा किया। गुलाम कादर अकेला रात्रि के समय अमूल्य हीरे कमर से बांध कर भाग रहा था कि गढ़े में गिर गया। (शेष पृष्ठ २६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात भर वहीं पड़ा रहा। प्रातः एक ग्रामीण ने पकड़ कर एक मराठे सरदार के सम्मुख उपस्थित कर दिया। बेदारबख्त को भी मेरठ से पकड़ कर लाल किले में भेज दिया गया। महाराजा सिंधिया उस समय मथुरा में थे, इस लिये गुलाम कादिर को वहां भेजा गया। सिंधिया ने उसे गधे पर सवार करके दुकान-दुकान से भीख मंगवाई और शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके दिल्ली भेजे। वहां इसे शाह आलम की उपस्थिति में सभी राजकुमारों को दिखाया गया।

इसके पश्चात स्वयं सिंधिया दिल्ली आए। लाल किले पर भगवा ध्वज लहराया गया। शाह आलम को गद्दी पर बैठाया और आठ लाख वार्षिक उसके लिए स्वीकार करके प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। अंग्रेज़ों को यह बात बहुत बुरी लगी और इसी बात पर अंग्रेज़ों और मराठों के भयंकर युद्ध हुए। अन्त में उन्होंने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। लाल किले पर 'यूनियन जैक' लहराया जाने लगा। इस बीच में लाल किले की दीवारों ने अंग्रेज़ों के अत्याचार देखे और अन्त में बहादुर शाह के नेतृत्व में दिल्ली का वह 'कत्लेआम' भी देखा जो १८५७ में हुआ। दो शताब्दियों की गुलामी के पश्चात एक बार पुनः हम स्वतन्त्र हुए और लाल किले पर एक बार जनता की भावनाओं का प्रतीक भारत का राष्ट्रीय ध्वज फिर लहराने लगा। इन्हीं उमंगों से लाल किले पर दृष्टि जाती है तो पुरानी घटनाएं याद आ जाती हैं।

एक लघु रूसी लोक कथा—

अफसर और किसान

एक बार काकेशिया के गवर्नर के दफ्तर का कोई बहुत बड़ा अफसर लिखनी नामक गांव से गुज़र रहा था। वहां के किसान उसका स्वागत करने आए। उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उन्हें गांव में चार वर्षीय शिक्षा का एक स्कूल खोलने की इजाज़त दे दे।

उनमें से एक ने कहा, 'हमारे यहां दो-वर्षीय शिक्षा का एक स्कूल तो है, लेकिन आप खुद जानते हैं कि दो-वर्षीय शिक्षा के स्कूल में आप ज्यादा कुछ नहीं सीख सकते, इतना भी नहीं कि गांव में मुहर्रिर हो जायें।'

'अगर आदमी में योग्यता हो तो दो वर्ष काफी हैं,' अफसर ने उपदेशकों के भाव से कहा-'और अगर आदमी मूर्ख हो तो दस वर्ष में भी कुछ नहीं कर सकता।'

किसान ने कहा, 'मेरे सम्मानित अतिथि! आपने तो दो ही वर्ष स्कूल में पढ़ा होगा। अगर हमें भी आप जैसा स्कूल मिल जाए तो फिर हमें कोई शिकायत नहीं रहेगी।'

सारी भीड़ हंस पड़ी, अफसर ने अपने होंठ और भी बाहर को निकाल लिये और कोचवान की पीठ में टहोका मारकर वह अपनी गाड़ी पर आगे चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

★ ......और हाथ माथे पर धरा रह गया ! ★

(ले० कु० कृष्णा शर्मा, प्रभाकर, बस्ती शेख, जालन्धर)

टिमटिमाते दीपक को झंझा से बुझता देख शशि चौंकी । उस की धूमिल आशाएं अब तक निराशाओं का आरम्भ बन चुकी थीं । वह सोच रही थी कि वेदनामय पतझड़ के बाद कभी बसन्त आएगा भी या नहीं ? वह इस प्रकार एकाएक विधाता के आघातों से जर्जर हो चुकी थी और अपने भाग्य को कोस रही थी । उसे वे बीते दिन याद आ रहे थे जबकि बसन्त का आगमन था, चारों दिगन्तों में हरियाली छाई हुई थी । वृक्षों की नई कोंपलें प्रकृति की शोभा को चार चांद लगा रही थीं । उपवनों में खिले फूल हृदय को आकर्षित कर रहे थे । प्रकृति उन उपवनों के फूलों के आभूषणों से ऐसी सुसज्जित थी मानो वह अपने प्रियतम से मिलन की बाट में खड़ी हो, उस के प्रिय का आज ही आगमन हो ।

प्रकृति की शोभा देख कर शशि का हृदय भी चंचल हो उठा । वह घर से निकल कर एक उपवन में पहुंची । उन कुसुमों को देखकर ऐसा भास हो रहा था मानो वे उसे मुस्कुराने का सन्देश दे रहे हों । अचानक उसकी दृष्टि आकाश की ओर गई तो क्या देखती है कि सायं-काल हो गया है, सूर्य देवता अपनी किरणें सिमेटते हुए प्रस्थान कर रहे हैं । यह देख शशि विचारने लगी कि अब घर चलना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि माता जी कुपित हो जाएं ? उसका हृदय घर लौटने को नहीं चाहता था परन्तु विवश हो चलना पड़ा । दूसरे दिन वह उसी उपवन में फिर आ पहुंची । जिस फूल को उसने प्यार किया था वही मुकुलित हो चुका था । यह दृश्य देख उस के क्लान्त हृदय का कमल मलिन हो गया । वह सोचने लगी कि मनुष्य का ऐश्वर्य चार दिनों का है । वह कुछ दिनों में समृद्धि को प्राप्त करता है और अन्त में फूल की भांति धूल में मिल जाता है ? तो इस नश्वर जगती से वह इतनी ममता क्यों करता है ? इन्हीं विचारों में खोई हुई वह घर लौटी। बेटी को चिंतित देख माता जी पूछने लगीं, 'क्या हुआ शशि ?' शशि बोली–'माता जी ! यह सारा संसार नश्वर है, इस सृष्टि में आकर मानव को वेदना के सिवा कोई और उपहार नहीं मिलता, सुख के बाद दुःख और जन्म के पश्चात मृत्यु, माता जी बोलीं, 'नन्ही शशि ! तुम्हें इन बातों से क्या ? इस प्रकार के विचार मत लाया करो । जाओ तुम्हें तुम्हारी सहेली बुला रही है ।' वह वहां से उठी और पुनः खेल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यस्त हो गई किन्तु यह न भुला सकी कि संसार नाशवान है। वह खेल से निवृत हो घर लौटी तो माता जी को प्यारी प्यारी बातें सुना कर पुलकित करने लगी। उसका विवाह हुए एक मास हो चुका था परन्तु शशि को अभी यह भी मालूम न था कि शादी क्या होती है? उसे सुसराल न जाने योग्य जान कर उस के पिता ने उसे हिन्दी रत्न की कक्षा में प्रविष्ट करा दिया। अभी उसकी आयु १२ वर्ष की होगी। वह बहिन के साथ शिक्षा गृहण करने लगी। उसने रत्न की परीक्षा पास कर ली तो उसके सुसराल वाले लेने आए! उसके पिता जी ने कहा एक मास के पश्चात ले जाना। परन्तु उन्हें यह प्रतीत न था कि एक मास में क्या हो जाने वाला है? उन्हें तनिक विचार न था कि उनकी बेटी सदैव के लिए उनके घर रह जाएगी। वह विरहिनी हो जाएगी जिसे यह भी प्रतीत नहीं कि उसका विवाह हो चुका है।

इसी तरह समय बीतता गया। भारत के दो टुकड़े हो गए, हिंदुस्तान और पाकिस्तान। शशि भी अनेक कठिनाइयां झेलती हुई हिन्दुस्तान में चली आई। वह उसी प्रकार खेल में व्यस्त हो गई जैसे कुमारी हो। वह सहेलियों के साथ खेल रही थी कि किसी सहेली ने पूछा कि शशि तुम्हारा विवाह हुए कितना समय हो चुका है? शशि चौंकी, मेरा विवाह? मेरा विवाह? मेरा विवाह अभी नहीं हुआ। सहेलियों के पुनः आग्रह करने पर उसने कहा, मैं माता जी से पूछूंगी। माता जी के समीप आकर बोली, 'माता जी क्या मेरा विवाह हो चुका है?' माताजी का जी भर आया और नयनघन बरसे बिना न रह सके। बस फिर क्या था, वह आंसू सावन की झड़ी की तरह बरसने लगे। वह रुंधे गले से बोली, 'बेटी तेरे विवाह को आज एक वर्ष हो चुका है किन्तु वह विवाह तेरे लिये नहीं बल्कि दुनिया के लिये था।' उसने कहा, 'माता जी! ब्याही लड़कियां तो सुसराल चली जाती हैं। मेरी सुसराल कहां है?' माता जी ने कहा, 'भारतवर्ष के बटवारे को एक वर्ष हो गया। न मालूम वह जीवित भी हैं या नहीं?' उस दिन से शशि का मुख मलिन तथा मुख की कांति क्षीण होती गई। वह हर समय यही सोचती रहती कि मेरे सुसराल वालों में से कोई तो काल के विकराल मुख से बच कर आया होगा, या कि सभी काल के ग्रास हो गये होंगे? आदि आदि भावनाएं उसके मस्तिष्क में घूमती रहतीं। इन्हीं भावनाओं ने उसके हृदय को विदीर्ण कर दिया। वह समस्त दिन अपने भाग्य को कोसती तथा विचारती, 'यह समस्त दुनिया दुःखों की खान है कोई प्राणी इस नश्वर संसार में चार दिन भी सुख से व्यतीत नहीं कर सकता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मनुष्य को वेदना के बिना और कोई उपहार नहीं मिलता।' यही विचारते विचारते उसके दिन तथा रातें व्यतीत होतीं। उसे चारों दिगन्तों में शून्य ही शून्य दिखाई देता। आकाश की ओर दृष्टि जाती तो उसे ऐसा प्रतीत होता मानो चन्द्रमाँ को राहु ने ग्रस लिया हो और वह अपनी ज्योति से क्षीण होता जाता हो। वह अग्नि से सदृश जलता हुआ प्रतीत होता था। सृष्टि की निस्सारता को देख वह व्यथित हो चारपाई पर लेट गई। अब उसका मन दुनिया से उठ चुका था। वह निराशा के सागर में गोते खाती २ सो गई। स्वप्न में वह क्या देखती है कि उसके सभी सुसराल वाले आ गए हैं। वह आनन्द से पुलकित हो रही है। हृदय का कमल जो एक वर्ष से मलिन था वह आज विकसित हो गया है। जिस मुख ने मुस्कान को तिलांजलि दे दी थी वह खुद कहकहा लगा कर हंस रहा तथा दूसरों को हंसा रहा है। उसे ऐसा प्रीतत हो रहा था कि जो मणि किसी ने छीन ली थी वह आज पुनः प्राप्त हो गई है। वह सुख ऐश्वर्य से जीवन व्यतीत कर रही है कि.........

एकाएक माता जी की आवाज़, 'शशि उठो, भास्कर अन्धकार को नष्ट करने तथा नव प्रभात लाने के लिये बादलों में से झांक रहा है। नन्हे मुन्ने पुस्तकें लिए स्कूल जा रहे हैं और तुम अभी सोई पड़ी हो' ने जगा दिया। वह चौंकी और विक्षितों की भांति इधर उधर देखने लगी.........मैं कहां.........कौन? अचानक उसकी दृष्टि माता जी पर पड़ी। शशि की यह अवस्था देख मां घबरा गई और बेटी को गले लगाया। पूछने लगी तुम इतनी चिंतित क्यों हो? माता जी को घबराया देख शशि हंस पड़ी। वह हंसी उसकी वेदना से परिपूर्ण कृत्रिम तथा शुष्क हंसी थी।

आज उसे पति की बाट निहारते पांच वर्ष हो गये परन्तु अभी तक यह मालूम नहीं हो पाया था कि वह जीवित भी हैं अथवा नहीं। उसे आशा थी कि शायद आ जाएं लेकिन आज वह आशा निराशा में परिणत हो चली थी। चारों तरफ उसे अंधकार ही अंधकार दिखाई देता था। रात को स्वप्न में उसे जिस प्रकाश की एक रेखा दिखाई दी थी उसको वह और अधिक प्रकाशवान करना चाहती थी परंतु विधाता के आगे मनुष्य क्या कर सकता है? विधाता ने उस रेखा को सदा के लिये आंखों से विलीन कर दिया था।

उसका एक ही आश्रय था और वह भी टिमटिमाते दीपक के समान। वह थे उसके पिता जी। वह जब कभी अपनी पुत्री का मुख मलिन देखते उसी समय उसको समझाने लगते कि बेटी जब तक मैं जीवित हूं तब तक तुम्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं करनी चाहिए। यदि तुम मेरे प्राण भी चाहो तो मैं देने से इन्कार नहीं करूंगा! तुम मुझे

(शेष पृ० ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ जीवन ★

(श्री विजय शंकर निर्बोध प्रभाकर बी. ए. जयपुर)

जीवन का मतलब ही चलना,
संघर्षों से पल पल लड़ना,
रह रह कर दुख की घड़ियों में,
गिरकर उठना, उठकर बढ़ना।

मौत है मतलब रुक जाने का,
विपदाओं में झुक जाने का,
आवश्यकता की बेला में,
कायरता से छुप जाने का।

जीवित ही शोभा जग की है,
मुर्दा तो निधि मरघट की है,
उठ जीवन को कंठ लगा ले,
बस स्वर्गिक संदेश यही है।

खुद बन अपना भाग्य विधाता,
जगती का बन बल और सम्बल,
सफ़र अनिश्चित कंकटमय पथ,
फिर भी राही हंस हंस कर चल।

ठीक नहीं है धीरज खोना,
ठीक नहीं घबरा कर रोना,
निर्बलता है, कायरता है,
तूफ़ानों में डगमग होना।

माना तेरा मग अंधियारा,
ऊपर से भीषण जलधारा,
लेकिन फिर भी भोले राही,
क्यों किंचित भी साहस हारा।

उठ आशा का दीप जला ले,
विपदाओं को कंठ लगा ले,
हाथ न फैला खुद पैरों चल,
अपना रस्ता आप बना ले।

मौत तलक का स्वागत साथी,
हंसकर करना सीखो प्रतिपल,
सफ़र अनिश्चित, कंटकमय पथ,
लेकिन राही हंस हंस कर चल!

चुटकुले

(१) लड़का—क्यों साहेब आपके सर पर बाल क्यों नहीं आते।

आदमी—मुझे दिमाग से इतना काम लेना पड़ता है कि बालों को जमने का अवसर ही नहीं मिलता।

लड़का—ओह, तभी मेरी मां के मूंछें नहीं निकलतीं, क्योंकि उन्हें मुँह से बोलने का ज्यादा काम लेना पड़ता है।

(२) मास्टर—(लड़के से) परीक्षा सिर पर आई हुई है और तुम्हें कुछ याद नहीं है।

लड़का—(सिर पर हाथ फेरते हुए) मास्टर जी सिर पर तो बाल हैं परीक्षा तो नहीं है।

(३) दुकानदार—'जनाब ! यह बिल्कुल ताज़ा माल है। अभी हाल की ईजाद है।'

ग्राहक—'पर मैं जानता हूं कि इस का रंग बहुत जल्द उड़ जाएगा।'

दुकानदार—'नहीं श्रीमान ! ये दो साल से तो इसी दुकान में रखा है, और देखिए इसकी चमक-दमक वैसी ही बनी है। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान प्रगति—

★ नए आविष्कार ★

हवाई जहाज़ की रफ्तार एवं ऊंचाई के नये रिकार्ड

अमेरिकी वायुसेना के मंत्री हैरल्ड टैलबट ने बताया कि अमेरिकी वायुसेना के विमानों ने संसार में १६५० मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ान के रिकार्ड को तोड़ दिया है और साथ ही ऊंची उड़ान करने का भी नया रिकार्ड तोड़ दिया है। वायुसेना के मन्त्री ने ओमाहा (नैब्रास्का) में हवाई सेना के एसोसियेशन के सम्मेलन में उक्त रहस्य प्रकट किया। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिकी हवाईसेना का हर लड़ाकू विमान जैट-चालित है। श्री टैलबट ने कहा कि सुरक्षा नियमों के कारण विमानों की गति और ऊंचाई के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से प्रकाश नहीं डाला जा सकता। अब तक ऊंचाई का रिकार्ड ८३, २३५ फीट अर्थात १५॥ मील का था।

प्रति सैकन्ड १८०० अक्षर टाइप करने वाला नया टाइप राइटर

समिट (न्यूजर्सी) के एक निर्माता ने एक नई इलैक्ट्रोनिक टाइपरायटर मशीन तैयार की है, जो अकेली ही ३०० अच्छे स्टैनोग्राफरों के बराबर काम करती है। यह मशीन १,८०० अक्षर प्रति सैकंड के हिसाब से टाइप करती है।

इस नई मशीन को 'हाई स्पीड टाइपर' कहा जाता है और देखने में यह सामान्य टाइपरायटर से बिल्कुल भिन्न दीखती है। आकार में तो यह मशीन एक बड़े बक्से की तरह होती है और इसमें एक मोटर लगी रहने के अलावा इलैक्ट्रोनिक सामान से भी सुसज्जित होती है।

यह मशीन बड़ी तेज़ी से काम करती है, क्योंकि इसमें 'इलैक्ट्रोनिक ब्रेन' नामक यन्त्र लगा होता है।

एक सैकन्ड के एक लाखवें समय में फोटो

बोस्टन (मैसेच्यूसेटस) की 'हाइकन मैनुफैक्चरिंग कम्पनी इलैक्ट्रोनिक कैमरा बना रही है। इस कैमरे से एक सैकन्ड के एक लाखवें समय में फोटो ली जा सकेगी। इस की रफ्तार इतनी तेज़ होगी कि प्रकाश की किरण को पृथक पृथक करके उसकी फोटो ली जा सकेगी।

सिर्फ ६० सैकन्ड में पूरी फोटो तैयार करने वाल कैमरा

कैमरा तैयार करने वाली जिस अमेरिकी कम्पनी ने १९४७ में ऐसा कैमरा तैयार किया था जिस में अपने आप फोटो धोई जाती थी उसी ने अब एक नयी किस्म का छोटा सस्ता कैमरा तैयार किया है। इसका नाम "हाईलैण्डर" है। इस से १ मिनट में फोटो तैयार मिल जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये उद्योग—

धान और गेहूं के भूसे से कागज़ बनेगा !

अमेरिकी कृषि विभाग के वैज्ञानिकों ने कई वर्षों तक निरन्तर अनुसन्धान करने के बाद भूसे (धान का छिलका, पुआल इत्यादि) से कागज़ बनाने की एक नवीन वैज्ञानिक विधि की खोज की है। इस नई विधि का नाम 'मेक्योकेमिकल प्रोसेस' है। वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान द्वारा यह पता लगाया है कि लकड़ी की अपेक्षा भूसे से कहीं अधिक परिमाण में कागज़ की लुगदी तैयार की जा सकती है। यह भी पता लगा है कि यदि भूसे की बनी लुगदी को लकड़ी से तैयार की गई लुगदी में मिला दिया जाय तो केवल लकड़ी की लुगदी से तैयार होने वाले कागज़ की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा कागज़ तैयार किया जा सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में किये गये परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भूसे की लुगदी से अच्छी किस्म का पतला कागज़, कार्डबोर्ड और अखबारी कागज़ तैयार किया जा सकता है।

संसार में लुगदी की लकड़ी की बढ़ती हुई कमी को दृष्टि में रखते हुए यह नई खोज बहुत ही महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। अमेरिका में द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त लुगदी से बनने वाली वस्तुओं की खपत में ५० प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। अमेरिका संसार का सबसे बड़ा अन्नउत्पादक देश भी है। इस प्रकार उसे संसार के अन्य देशों की अपेक्षा लुगदी तैयार करने की सामग्री कहीं अधिक विशाल परिमाण में उपलब्ध हो सकती है।

प्राचीन काल में तथा चीनी सभ्यता के प्रारम्भिक काल में भूसे की लुगदी से कागज़ तैयार किया जाता था। लेकिन वर्तमान युग में इस नई विधि के आविष्कार के पूर्व तक मुख्यतः लकड़ी की लुगदी से ही कागज़ तैयार किया जाता था। विशेष रूप से अमेरिका में कागज बनाने के लिए लकड़ी की लुगदी ही प्रयुक्त की जाती रही है। अमेरिका में लकड़ी की लुगदी की खपत अन्य सभी देशों से अधिक है क्योंकि वहां अखबारों, पुस्तकों तथा अन्य कार्यों में प्रयुक्त होने वाला कागज़ उसी लुगदी से तैयार किया जाता है। लेकिन विकासोन्मुख राष्ट्रों की कागज़ सम्बन्धी आवश्यकताओं के कारण संसार में मांग दिनोंदिन बढ़ती जा रही है।

जिन वृक्षों से लुगदी की लकड़ी प्राप्त होती है उनके फिर से उगने और लकड़ी तैयार होने में कई वर्ष लग जाते हैं, परन्तु भूसा प्रत्येक देश में हर वर्ष काफी परिमाण में प्राप्त किया जा सकता है। अमेरिका के खेतों में प्रतिवर्ष लगभग १० करोड़ टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूसा तैयार होता है। इसमें से कुछ भूसा जानवरों को खिलाने के काम में आता है तथा बहुत अधिक मात्रा खेत जोतते समय भूमि में मिला दी जाती है। यदि इस से कागज़ की लुगदी तैयार की जाये तो देश की कागज़ सम्बन्धी आवश्यकता अच्छी तरह पूरी हो सकती है तथा कुछ कागज़ विदेशों को निर्यात करने के लिये भी शेष रह सकता है।

अमेरिकी कृषि विभाग की प्योरिया (इलिनौय) स्थित 'नार्दन रिसर्च लेबोरेटरी' ने निम्न नवीन विधियों की खोज की है।

(१) गेहूं के भूसे से ५० से लेकर ५२ प्रतिशत तक शुद्ध लुगदी तैयार करने संबंधी नवीन वैज्ञानिक विधि।

(२) भूसे से ऐसी लुगदी तैयार करने की वैज्ञानिक विधि जिससे अधिक कड़ा कागज़ तैयार किया जा सके। यह कागज लकड़ी की लुगदी से तैयार किये जाने वाले कागज़ से भी अधिक कड़ा है।

(३) गेहूं के भूसे से विद्युत अवरोधक कार्डबोर्ड तैयार करने की सरल और सस्ती विधि। इस प्रकार के कार्डबोर्ड का प्रयोग निर्माण कार्यों में किया जा सकेगा॥

(४) भूसे से ऐसा कार्डबोर्ड तैयार करने की वैज्ञानिक विधि जो सन्दूक के ऊपरी भाग पर लगाई जाने वाली अच्छी लकड़ी के स्थान पर मढ़ा जा सके। अनुसन्धान द्वारा

★ जीवन गीत ★

(कु० नीलिमा 'अधीर' जालन्धर)

यह गीत नहीं है पीड़ा है जग निष्ठुर कैसे जानेगा?
जब तोड़ वेदना के बन्धन
आहें बन फूलीं करुण कथा,
बेबस होकर जब आंचल में,
आँसुओं ने गिरा दी मूक व्यथा!
उन मधुर क्षणों को संचित कर
मैंने अपना ली तेरी याद,
जग बोल उठा 'यह कुछभीनहीं'
यह तो है बस क्षणिकोन्माद,
जो कहता है उन्माद इसे,
बोलो वह क्या पहचानेगा?
इस मूक प्रेम की भाषा को,
यह निष्ठुर क्या पहचानेगा?
मेरे भावों के क्रन्दन से,
है मेरी वाणी बोल उठी,
मेरे गानों की तड़पन में,
है निपट निराशा डोल उठी,
मेरी आंखों के कोनों में,
अश्रु लहरी की सरिता है,
मेरे रोदन को गान समझ,
जग बोल उठा 'यह कविता है'
जो कहता इसको कविता है, बोलो वह क्या पहचानेगा?
अश्रु में लिपटी पीड़ा को यह निष्ठुर कैसे जानेगा?

यह सिद्ध हो चुका है कि सोहागे का इस्तेमाल करने से भूसे की लुगदी का कागज गोंद का अभाव भी सहार सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ २९ का शेष)

प्राणों से भी प्यारी हो । वह अपनी पुत्री को सान्त्वना देते थे परन्तु स्वयं उन्हें भी यह प्रतीत न था कि उनकी जीवन लीला समाप्त होने वाली है। वह अपनी पुत्री को प्रसन्न देखना चाहते थे परन्तु यह भाग्य को न भाया। अनन्त ने इसके विपरीत सोचा। बस दैव के प्रकोप से वह बीमार हो गए। सात दिन बीमार रह कर इस असार संसार को छोड़ गए। शशि व्याकुल हो बोली, 'माता जी मैंने कहा था न, कि यह संसार वेदना से पीड़ित है! हा दुर्भाग्य! हमारा एक मात्र सहारा था वह भी अनन्त ने छीन लिया, अब किसके द्वार जाऊं, किसका आश्रय लूं ? जब विधाता ही मेरे प्रतिकूल है तो कौन मेरे अनुकूल होगा ? क्या मैं निराधार रह जाऊंगी ? हाय दैव!' मन ही मन भाग्य को कोसती वह जड़वत हो गई और 'हाथ माथे पर धरा रह गया'।

---

*जाता है।

पानी में अमोनिया की कुछ बूंदें डालकर धोने से ऊनी कपड़ों का रंग अच्छा चमक आता है और कपड़ा भी नरम रहता है। रेशमी कपड़े को धोने के बाद मिथिलेटेड स्पिरिट के पानी में से गुज़ार लो, फिर लोहा करो उसकी चमक दुगनी हो जाएगी।

–जितना पानी उतना सिरका मिलाकर बाल धोने से भी बाल सुन्दर और लम्बे हो जाते हैं।

गृह-विज्ञान

★ कपड़े धोते समय याद रखें ★

ऊनी कपड़ों को धोकर यदि बुरदार तौलिये पर फैला दिया जाए तो वह सिकुड़ते नहीं। उन्हें बहुत कस कर निचोड़ना भी नहीं चाहिए। इन कपड़ों को यदि गरम पानी में उबाला है तो ठंडा पानी नहीं डालना चाहिये।

कपड़े का मैल निकालने के लिये उन्हें तांबे के बड़े बर्तन में उबालना चाहिए। बर्तन के ऊपरी भाग पर मोटा तौलिया या कम्बल रखना चाहिए, जिससे वह सारी भाप सोख ले, बाहर न निकलने दे।

नाजुक लेस के कपड़ों को धोते हुए गरम पानी में सफेद चीनी के दो-चार चम्मच डाल देने चाहिएं। इससे कपड़ा कड़ा हो जाता है।

बहुत मैले-कुचैले कपड़े धोते हुए पानी में थोड़ा सा जैतून का तेल मिला दो। इससे मैल बहुत जल्दी छूट कर ऊपर आ जाएगा।

कम्बल धोते हुए पानी में एक बड़ा चम्मच ग्लिसरीन डाल दो। इससे कम्बल की मलायमित बनी रहेगी।

धोने के बाद स्टार्च लगाना अच्छा रहता है। इससे अगली दफा मैला कपड़ा जल्दी साफ हो जाता है, क्योंकि सारा मैल स्टार्च के साथ ही छूट कर उतर*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ स्वास्थ्य रक्षा ★

चेचक से बचने के उपाय

चेचक या बड़ी माता से हर वर्ष सैंकड़ों लोग मरते हैं। लोग अगर पहले से बीमारियों का सामना करने के लिये तैयार रहें तो उन्हें बाद में पछताना नहीं पड़ता। चेचक से बचने के लिये टीका लगवाना बहुत ज़रूरी है।

बच्चा पैदा होने के चौथे या छटे महीने में टीका लगवा लेना चाहिए। इससे बच्चे के शरीर में खतरनाक बीमारी को रोकने की ताकत आ जाती है। अगर बच्चे को सर्दी, ज़ुकाम, बुखार या खांसी, छाजन या खुजली हो तो टीका नहीं लगवाना चाहिए। हर सातवें साल टीका लगवाते रहने पर कभी चेचक नहीं हो सकती!

नगर पालिका की तरफ से टीका लगाने का इन्तज़ाम किया जाता है और इस पर किसी को एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ता।

परहेज़—चेचक होने का शक होते ही रोगी को अलग कमरे में कर देना चाहिए। उसके कपड़े-लत्ते, बर्तन सभी कुछ अलग रखने चाहिएं। उन चीज़ों को न तो किसी को छूने दिया जाए और न किसी और को पहनने दिया जाए। चेचक छूत की बीमारी होती है। इसके कीड़े खाने पीने की चीज़ों, कपड़े, बर्तन वगैरह से लगकर मरीज़ से भले-चंगे आदमी के पास पहुंच जाते हैं।

बीमार के कपड़ों से सेवा और देख-भाल करने वालों को अपने कपड़े अलग रखने चाहिएं और उन्हें 'कारबोलिक साबुन' से धोना चाहिए। दूसरे लोगों के पास जाते समय उन्हें कारबोलिक साबुन से स्नान करना चाहिए! चेचक का टीका भी लगवा लेना चाहिए।

जब बड़ी चेचक निकलती है तो फोड़ों और पीव पर मक्खियां आकर बैठने लगती हैं। इससे बीमार की तकलीफ बढ़ जाती है। दूसरे ये मक्खियां बीमारी के कीड़ों को अपने पंखों और पैरों से दूसरी जगह पहुंचा देती हैं। इनसे बचने के लिए रोगी के पलंग पर मच्छरदानी का लगाना बहुत ज़रूरी है।

जब चेचक के फोड़े सूखने लगते हैं तो उनपर पपड़ियां पड़ जाती हैं। ये पपड़ियां भी बीमारी फैला सकती है। झरने के बाद पपड़ियों को जला देना चाहिए!

पपड़ियां निकल जाने के बाद जो फोड़ा कच्चा रह जाए उस पर नीम की पत्ती का बारीक चूरा लगाना चाहिए। बीमार को नीम की पत्ती से उबले हुए गुनगुने पानी से नहलाना अच्छा होता है। बीमार के कपड़ों को सोडा, गरम पानी और फिनाइल से साफ करना चाहिए।

बीमारी खत्म हो जाने के बाद बीमार के कपड़े और काम में आई चीज़ों को जला देने से आइंदा खतरा नहीं रहता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ अक्तूबर–

★ गांधी जयन्ती ★

(श्री शांत शास्त्री 'शालिहास')

गांव गांव में आर्त हिन्द के,
जिसने जागृति दीप जलाया।
प्रेम अहिंसा सत्य एकता का,
फिर भूला पाठ पढ़ाया।
जगा जिसके सिंह नाद से,
शासित भारत का शोषित जन।
उसी युग पुरुष बंद्य बापू की,
आज दिवस यह स्मृति है लाया।१
धीर सिंहनर, कायर पुरुषों को,
बना दिया जिसने वाणी से।
जान डाल दी मृत लाशों में,
थपकी देकर निज पाणी से।
भारत को स्वातंत्र्य दिला कर,
नींव डाल दी नूतन युग की।
आज उसी का जन्म दिवस है
जिसने जीता जग वाणी से।२
जगद्गुरु की पदवी भारत,
आज पा रहा है फिर जग में।
जिसकी पुण्य प्रताप कृपा से,
बढ़ता जाता अविचल मग में।
जन गण मन में गूंज रहा है,
जिसकी सत्य अहिंसा का स्वर।
विश्व बंद्य उस युग पावन का
आज जन्म दिन है भारत में।३
यंत्रशक्ति को पंगु करके,
जिसने तकली चक्र चलाया।
जेल यातना की ज्वाला में,
अपना जीवन स्वर्ण बनाया।
पूर्ण किया अपना प्रण जिसने,
दे प्राणों की बलि प्रेम से।
उसी महात्मा की मधुस्मृति को
जागृत करने पर्व यह आया।४
तीस करोड़ पुत्रों वाली माँ भारत
जो दुख से पीड़ित थी!
पराधीनता की जंजीरों से,
जकड़ी दुखिया ब्रीड़ित थी।
जिसने काटे बंधन मां के,
जिससे पुत्रवती कहलाई।
उसी युगपुरुष की पावन स्मृति
आज यह दो अक्तूबर लाई।

शालिहास ★ हासावलि

एप्लाई कर कर मरे सर्विस मिली न कोय,
दिए घूस घूंसा तुरत अप्वाइन्टिड जन होय।
तब ही लग जीबो भलो मिलें मुफ्त के ठाठ,
बिना मुफ्त के ठाठ के जीवन बारा बाट।
तनखाह क्यों न बढ़त है टीचर सब चिल्लाहिं
रहिमन करुए मुखन को चाहियत यही सजाहिं
रिश्वत लेने मैं भी डर देने में भी मीत!
कांटे-जांटे श्वान के दुहु भान्ति विपरीत।
लीडर नौबत आपनी दिन दस लेहु बजाय,
यह चुनाव की चटपटी ज्यादा टिकनी नांय।
कालि कहै सो आज कह आज कहे सो अब,
जबहि वजारत टूटि गई बहुरी कहे गो कब?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★

(१) सोवियत ट्रेड यूनियनों की ११वीं कांग्रेस में सम्मिलित हुए भारतीय प्रतिनिधियोंमें से एक श्रीकान्त नायर कांग्रेस का अभिवादन कर रहे हैं। यह अधिवेशन ७ से १५ जून तक 'क्रेमलिन' मास्को में हुआ।

(२) रूस के निवासी मछलियां पकड़ने के बड़े शौकीन होते हैं। चित्र में एक टर्नर ग्रिगोरी ल्यापिन और उसका पुत्र मछलियां पकड़ते दीख रहे हैं।

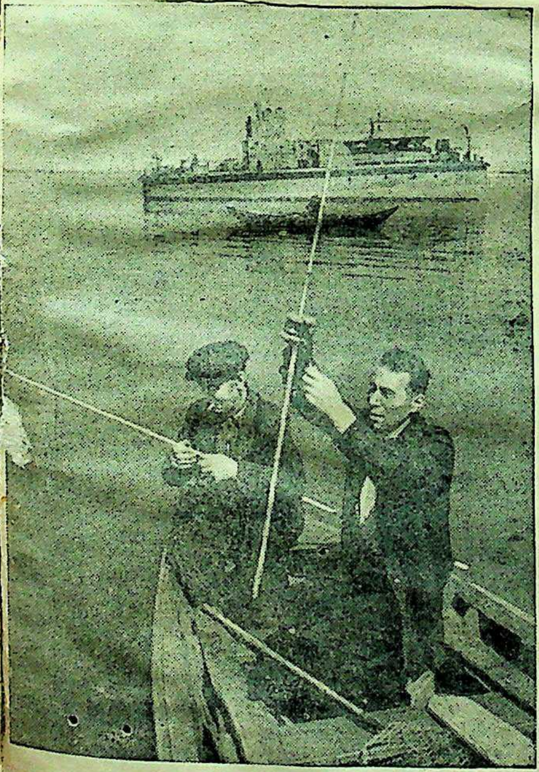

नीचे

(३) किरगीजिया के सबसे बड़े प्रदेश इस्सिककुल (रूस) झील के किनारे बच्चों के 'चोलयान' नामक सैनेटोरियम की एक इमारत।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सेनापति लण्डन में

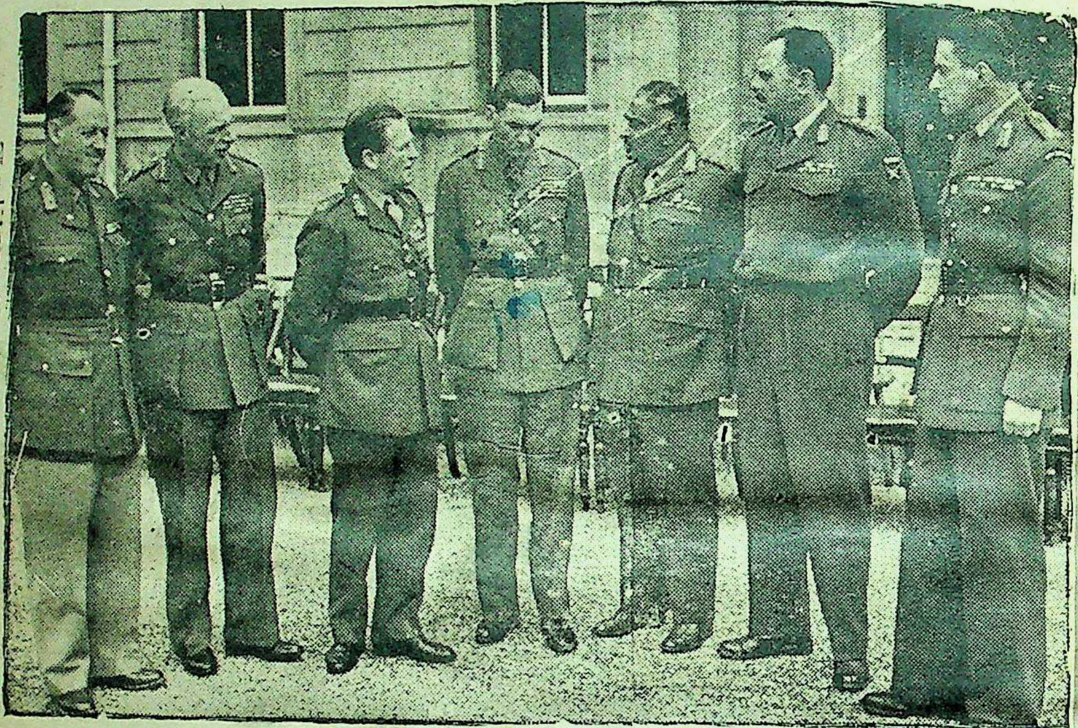

लण्डन में हुई कामन वैल्थ देशों के सेना-पतियों की वार्षिक मीटिंग में भारतीय सेना-पति जनरल श्री महाराज राजेन्द्र सिंह जी (दाईं ओर से तीसरे)। पाकिस्तान के सेना-पति जनरल मुहम्मद अयूब खां उन बाईं ओर खड़े हैं।

किसी देश की समृद्धि में पशु धन का बड़ा महत्त्व है। यह चित्र है इसिककुल प्रदेश (रूस) की एक चरागाह में भेड़ों के समूह का।

प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, १३७ चहारबाग, जालन्धर में श्री एल० सी० हितैषी द्वारा मुद्रित प्रकाशित तथा सम्पादित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

/1191०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar